लघु शोध समीक्षा: हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन



- राजीव अग्रवाल
- नीलम कुशवाहा

लघु शोध समीक्षा: हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
डीन–शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

नीलम कुशवाहा
M.A. (Economics), B.Ed.

लघु शोध समीक्षा: हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

राजीव अग्रवाल
नीलम कुशवाहा

E-book संस्करण: 2021

मूल्य: ₹82

ISBN: 978-93-5578-799-6

प्रकाशक:
नीलम कुशवाहा
बाउर बाजार, स्टेशन रोड, अतर्रा, जिला—बाँदा (उत्तर प्रदेश) 210201
Mob.: 9112504342
ई-मेल: neelamkushwaha324@gmail.com

प्राक्कथन

अनुसन्धान किसी भी विषय में ज्ञान के विकास का आधार होता है। अनुसन्धान कार्य का वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन किया जाना आवश्यक होता है; बिना सम्यक् मूल्यांकन के इसके शैक्षिक निहितार्थों को सही प्रकार से लागू नहीं किया जा सकता। मूल्यांकन द्वारा ही अनुसन्धानकर्ता के परिश्रम से सभी अवगत होते हैं। मूल्यांकन से ही शोध की कमियाँ एवं अच्छाइयाँ उजागर होती हैं। शोध कार्य कितना वैध एवं विश्वसनीय है; इसका ज्ञान भी मूल्यांकन से ही होता है। किसी भी शोध कार्य के मूल्यांकन के निम्न उद्देश्य हो सकते हैं—

- शोध-प्रबन्ध की पर्याप्तता का आकलन।
- किसी भी अनुसन्धानकर्ता को एक व्यवस्थित तरीके से शोध कार्य सम्पादित करने हेतु मार्गदर्शन।
- विभिन्न शोध उपकरणों की विभिन्न परिस्थितियों में वैधता निर्धारण हेतु पूर्ववर्ती शोध की पहचान।
- एक अच्छे शोध-प्रबन्ध के निर्माण हेतु मार्गदर्शन।

प्रस्तुत पुस्तक एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध के मूल्यांकन पर आधारित है। प्रस्तुत पुस्तक का अध्यायीकरण निम्नवत है—

पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में शोध प्रतिवेदन का अर्थ, महत्व तथा समीक्षा किये जाने वाले लघु शोध-प्रबन्ध का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय भाग में लघु शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन निम्नलिखित 13 शीर्षकों के अन्तर्गत सारणी सहित किया गया है—

- प्रस्तावना
- सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा
- उद्देश्य एवं परिकल्पना
- शोध अभिकल्प
- अध्ययन के चर
- शोध उपकरण
- न्यादर्श
- प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण
- परिणाम एवं निहितार्थ
- निष्कर्ष एवं सारांश
- सन्दर्भ
- परिशिष्ट
- अन्य सूचक

प्रस्तुत पुस्तक के अन्तिम भाग में निष्कर्ष एवं सन्दर्भ का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य किसी व्यक्ति विशेष या शिक्षण संस्थान की आलोचना करना नहीं है, वरन् शिक्षा जगत में सुधार/उन्नयन हेतु एक प्रयास मात्र है।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे, तो हम अत्यन्त आभारी होंगे।

28 नवम्बर, 2021।

राजीव अग्रवाल
नीलम कुशवाहा

विषय-वस्तु

लघु शोध समीक्षा:

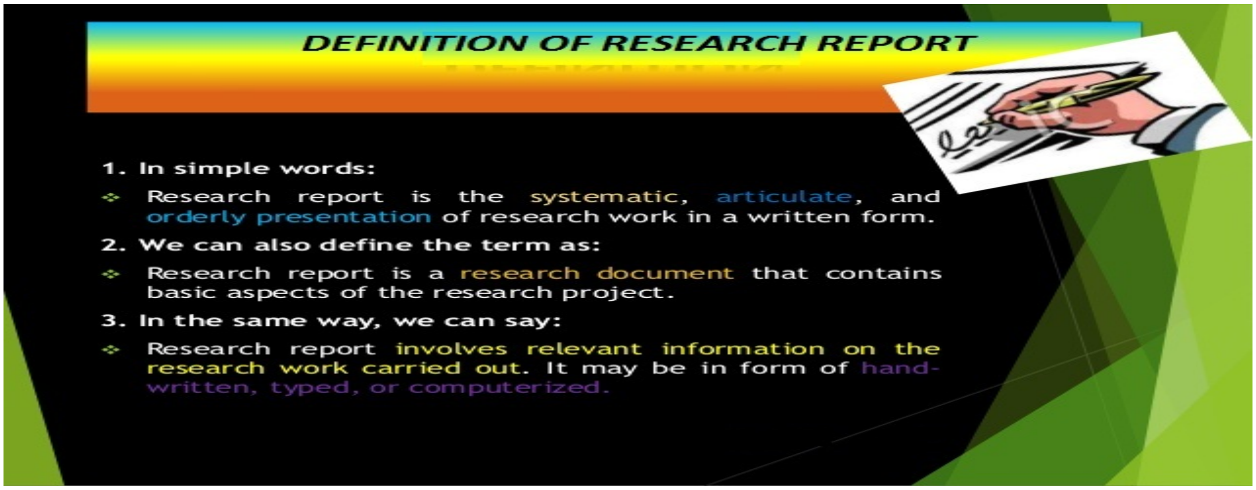
हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

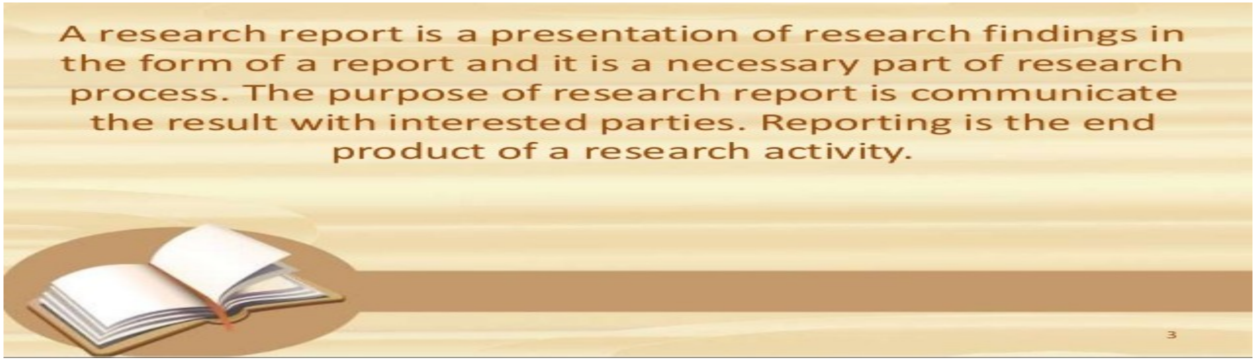


शोध प्रतिवेदन का अर्थ-

The report may be meant for the people in general, when the investigation has not been carried out at the instance of any third party. Research is essentially a cooperative venture and it is essential that every investigator should know what others have found about the phenomena under study. The purpose of a report is thus the dissipation of knowledge, broadcasting of generalizations so as to ensure their widest use.

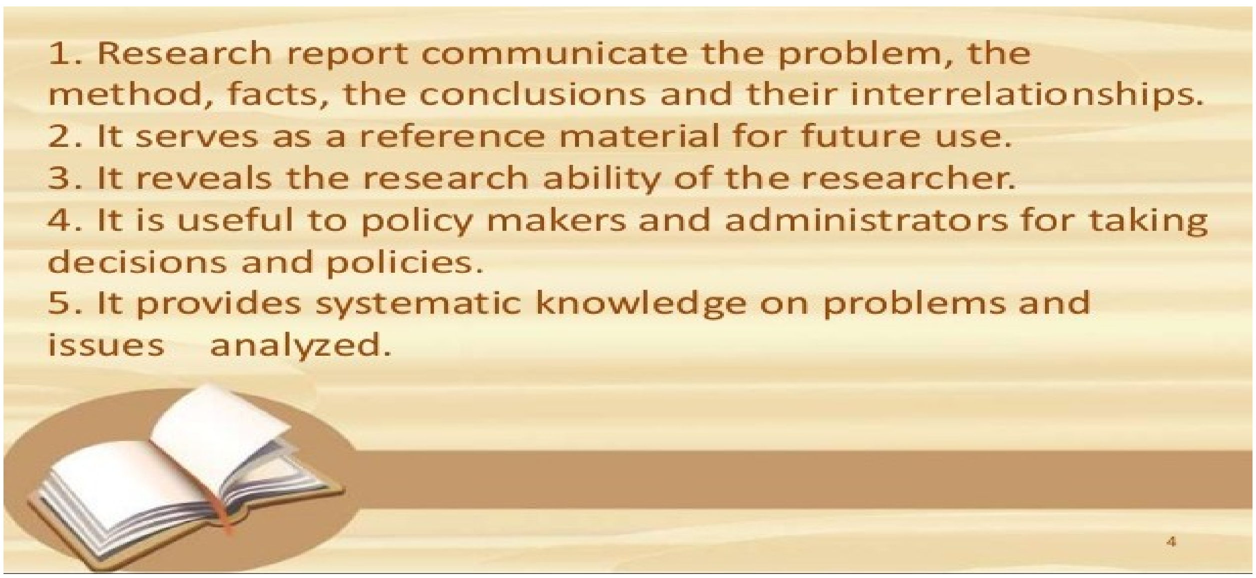
A report of research has only one function, "it must inform". It has to propagate knowledge. Thus, the purpose of a report is to convey to the interested persons the results and findings of the study in sufficient detail, and so arranged as to enable each reader to comprehend the data, and to determine for himself the validity of conclusions. Research results must invariably enter the general store of knowledge. A research report is always an addition to knowledge. All this explains the significance of writing a report. In a broader sense, report writing is common to both academics and organizations. However, the purpose may be different. In academics, reports are used for comprehensive and application-oriented learning. Whereas in organizations, reports form the basis for decision making.





शोध प्रतिवेदन का महत्व-

- ज्ञान का स्थानान्तरण
- ज्ञान अन्तराल की पहचान



अध्ययन परिचय-



हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

की

'मास्टर ऑफ एजूकेशन' उपाधि की आंशिक पूर्ति

हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

2018-2020

शोध निर्देशक
श्री सतीश सिंह पटेल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर-एम०एड० विभाग

शोधकर्ती
Priyanka Gupta
प्रियंका गुप्ता
एम०एड० (छात्रा)

शिक्षक-शिक्षा संकाय

राजा देवी पी०जी० कॉलेज, बाँदा (उ०प्र०)

शीर्षक: हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

शोधकर्त्री: प्रियंका गुप्ता

शोध पर्यवेक्षक: योगेन्द्र सिंह

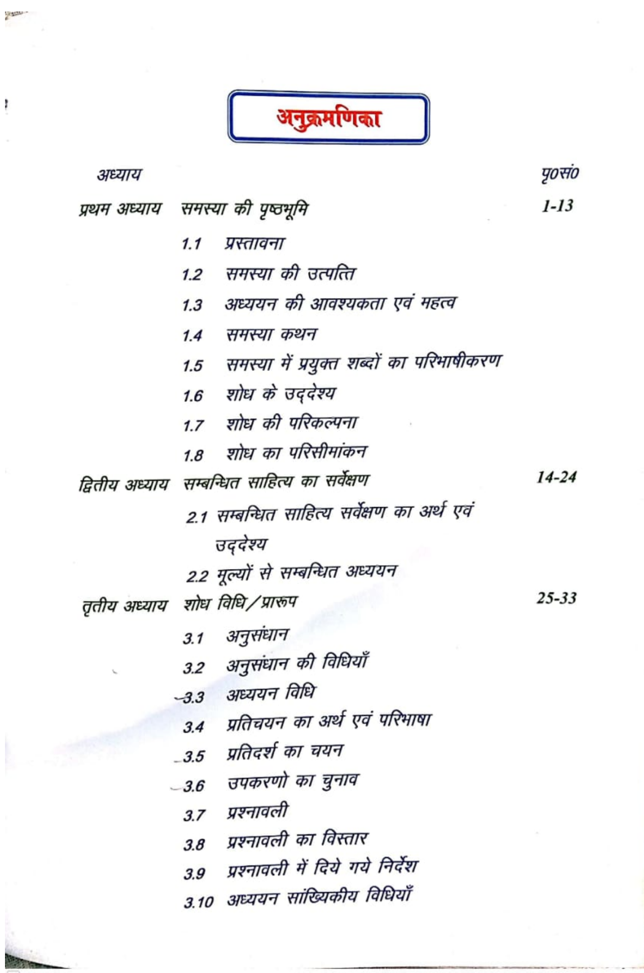
वर्ष: 2020

उपाधि: एम०एड०

महाविद्यालय: राजा देवी डिग्री कॉलेज, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

विश्वविद्यालय: बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

अध्यायीकरण:



अनुक्रमणिका

लघु शोध-प्रबन्ध मूल्यांकन-

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score rule (Points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
1	**Introduction**	**Max Score=6**		
1.1.	Is the problem clearly stated?	YES		1
1.2.	Is the problem selected appropriately?	YES		1
1.3.	Is the problem relevant?	YES		1
1.4.	Is the problem important?	YES		1
1.5.	Is the problem researchable?	YES		1
1.6.	Are the related areas of the problem discussed satisfactorily?	NO		0
	Sub Total	**Actual Max=**		5

Comments:

1.1. समस्या कथन सही रूप से वर्णित है।

1.2. वर्तमान समय की आवश्यकताओं को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि चुनी गयी समस्या उपयुक्त है।

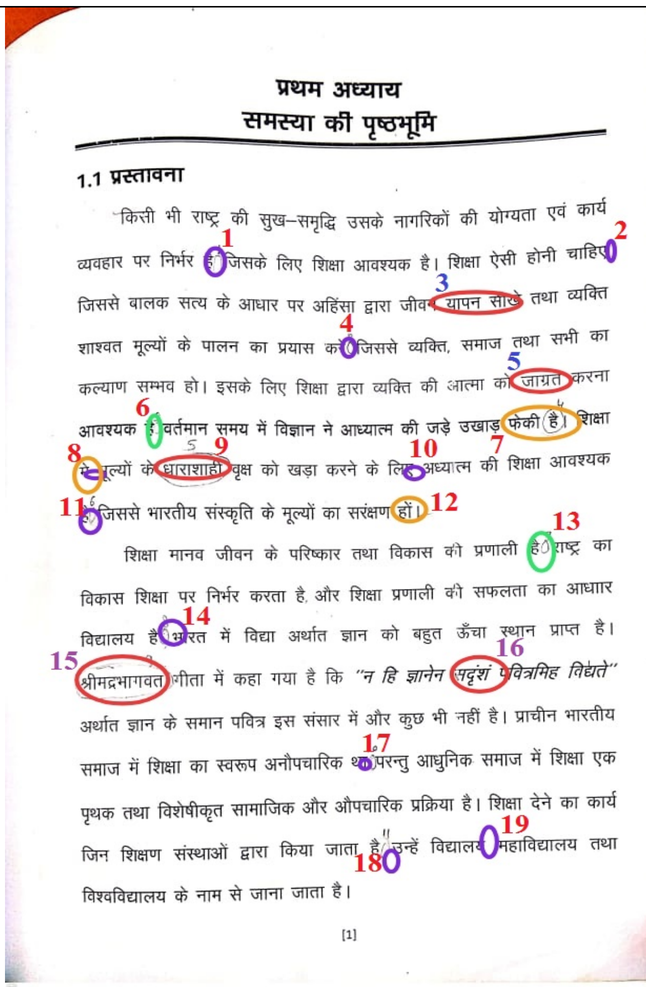
1.3. चुनी गयी समस्या वर्तमान समय की आवश्यकता है।

1.4. माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु चुनी गयी समस्या महत्वपूर्ण है।

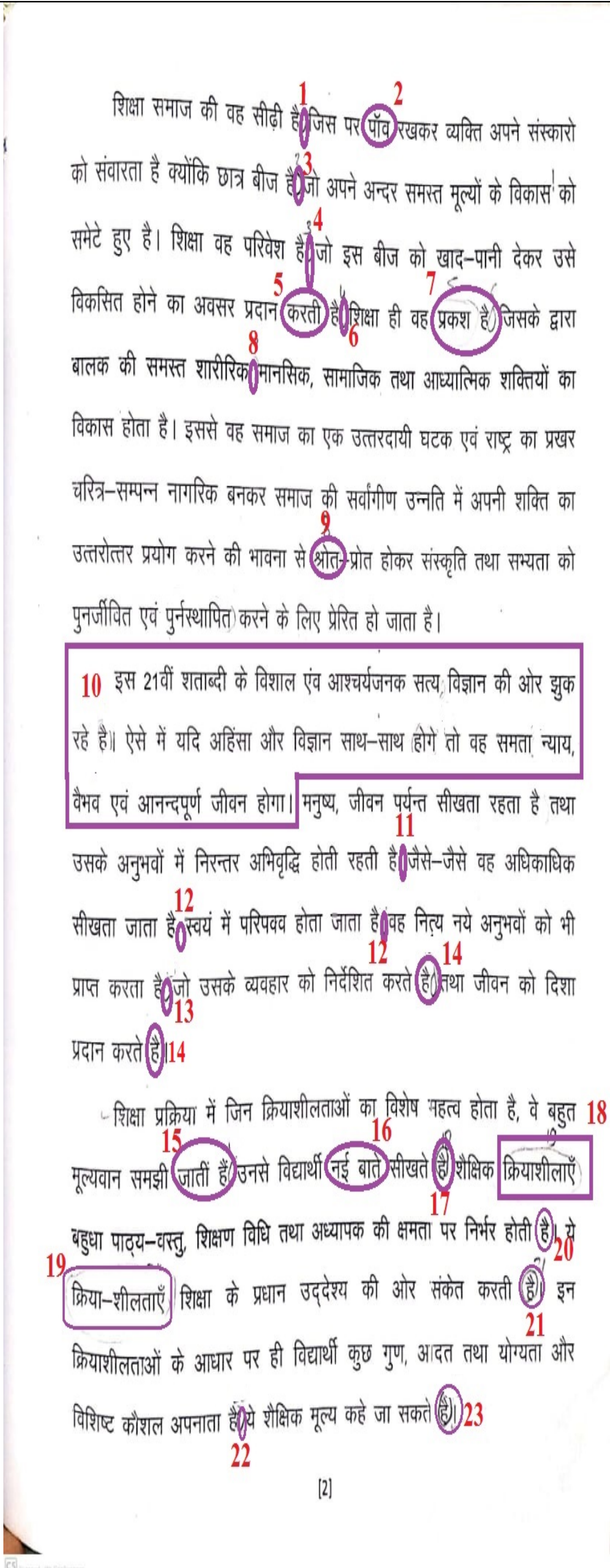
1.5. चुनी गयी समस्या शोध करने के योग्य है।

1.6. चुनी गयी समस्या से सम्बन्धित समस्त पहलुओं का सही प्रकार से विवेचन नहीं किया गया है। समस्या से सम्बन्धित पहलुओं- माध्यमिक स्तर तथा मूल्य के विषय में तो विवेचन प्रस्तुत किया गया है; किन्तु हमीरपुर जनपद एवं हिन्दी माध्यम के विद्यालय के विषय में विवेचन प्रस्तुत नहीं किया गया है।

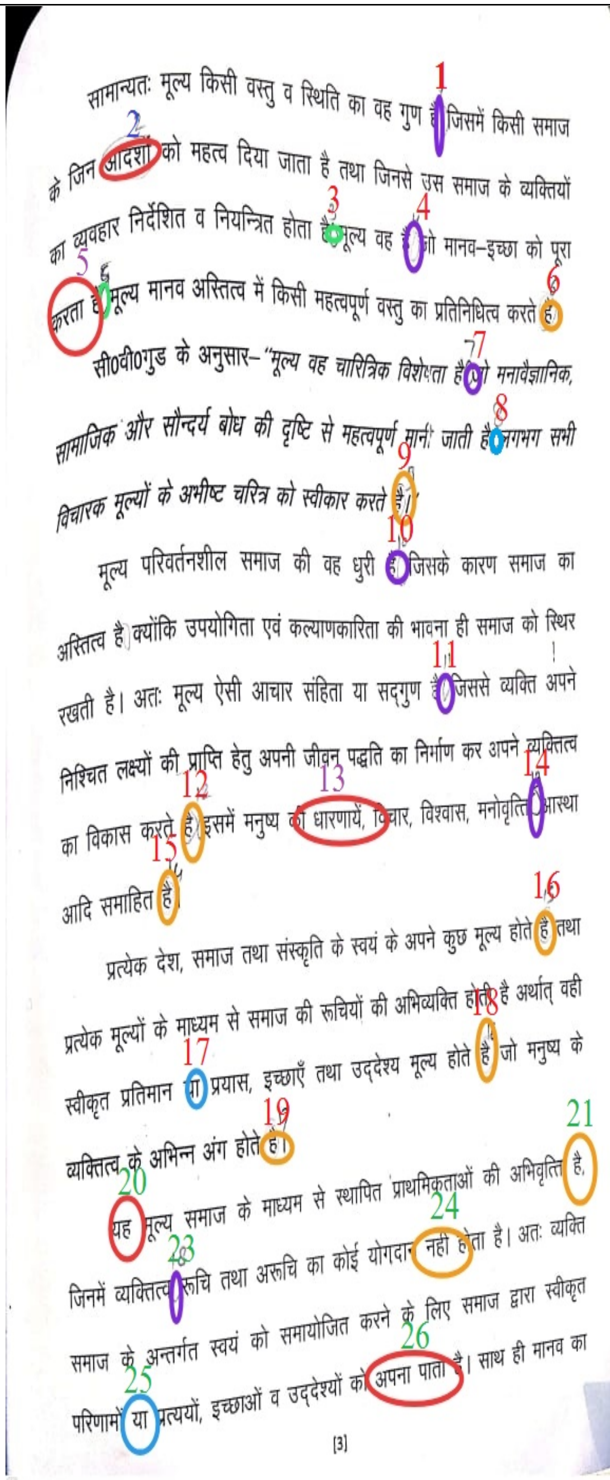
प्रस्तावना में प्रयुक्त हुए गलत शब्दों के सही रूप -

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

प्रथम अध्याय
समस्या की पृष्ठभूमि
1.1 प्रस्तावना
किसी भी राष्ट्र की सुख–समृद्धि उसके नागरिकों की योग्यता एवं कार्य व्यवहार पर निर्भर है जिसके लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा जीवन यापन सीखे तथा व्यक्ति शाश्वत मूल्यों के पालन का प्रयास करे जिससे व्यक्ति, समाज तथा सभी का कल्याण सम्भव हो। इसके लिए शिक्षा द्वारा व्यक्ति की आत्मा को जाग्रत करना आवश्यक है वर्तमान समय में विज्ञान ने आध्यात्म की जड़े उखाड़ फेकी है। शिक्षा से मूल्यों के धाराशाही वृक्ष को खड़ा करने के लिए अध्यात्म की शिक्षा आवश्यक है जिससे भारतीय संस्कृति के मूल्यों का सरंक्षण हों।
शिक्षा मानव जीवन के परिष्कार तथा विकास की प्रणाली है राष्ट्र का विकास शिक्षा पर निर्भर करता है और शिक्षा प्रणाली की सफलता का आधार विद्यालय है भारत में विद्या अर्थात ज्ञान को बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त है। श्रीमद्रभागवत गीता में कहा गया है कि *"न हि ज्ञानेन सदृंशं पवित्रमिह विद्यते"* अर्थात ज्ञान के समान पवित्र इस संसार में और कुछ भी नहीं है। प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का स्वरूप अनौपचारिक था परन्तु आधुनिक समाज में शिक्षा एक पृथक तथा विशेषीकृत सामाजिक और औपचारिक प्रक्रिया है। शिक्षा देने का कार्य जिन शिक्षण संस्थाओं द्वारा किया जाता है उन्हें विद्यालय महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।
[1]</td>
<td>1. ,
2. ,
3. यापन करना सीखे
4. ,
5. जागृत
6. ।
7. फेंकी हैं।
8. में
9. धराशायी
10. ,
11. ,
12. हो
13. ।
14. ।
15. श्रीमद्भागवद्गीता
16. सदृशं
17. ,
18. ,
19. ,</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 शिक्षा समाज की वह सीढ़ी है जिस पर पाँव रखकर व्यक्ति अपने संस्कारो को संवारता है क्योंकि छात्र बीज है जो अपने अन्दर समस्त मूल्यों के विकास को समेटे हुए है। शिक्षा वह परिवेश है जो इस बीज को खाद–पानी देकर उसे विकसित होने का अवसर प्रदान करती है शिक्षा ही वह प्रकश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र–सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से श्रोत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। इस 21वीं शताब्दी के विशाल एंव आश्चर्यजनक सत्य विज्ञान की ओर झुक रहे है। ऐसे में यदि अहिंसा और विज्ञान साथ–साथ होंगे तो वह समता न्याय, वैभव एवं आनन्दपूर्ण जीवन होगा। मनुष्य, जीवन पर्यन्त सीखता रहता है तथा उसके अनुभवों में निरन्तर अभिवृद्धि होती रहती है जैसे–जैसे वह अधिकाधिक सीखता जाता है स्वयं में परिपक्व होता जाता है वह नित्य नये अनुभवों को भी प्राप्त करता है जो उसके व्यवहार को निर्देशित करते है तथा जीवन को दिशा प्रदान करते है। शिक्षा प्रक्रिया में जिन क्रियाशीलताओं का विशेष महत्व होता है, वे बहुत मूल्यवान समझी जातीं हैं उनसे विद्यार्थी नई बाते सीखते है शैक्षिक क्रियाशीलाएँ बहुधा पाठ्य–वस्तु, शिक्षण विधि तथा अध्यापक की क्षमता पर निर्भर होती है, ये क्रिया–शीलताएँ शिक्षा के प्रधान उद्देश्य की ओर संकेत करती है इन क्रियाशीलताओं के आधार पर ही विद्यार्थी कुछ गुण, आदत तथा योग्यता और विशिष्ट कौशल अपनाता है ये शैक्षिक मूल्य कहे जा सकते है। [2]	1. , 2. पांव 3. , 4. , 5. करता 6. । 7. प्रकाश है। 8. , 9. ओत 10. इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं निकल रहा है। 11. । 12. , 13. , 14. हैं 15. जाती हैं 16. नयी बातें 17. हैं। 18. क्रियाशीलताएँ 19. हैं 20. क्रियाशीलताएँ 21. हैं 22. । 23. हैं

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>



सामान्यतः मूल्य किसी वस्तु व स्थिति का वह गुण है जिसमें किसी समाज के जिन आदर्शा को महत्व दिया जाता है तथा जिनसे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित व नियन्त्रित होता है मूल्य वह है जो मानव–इच्छा को पूरा करता है मूल्य मानव अस्तित्व में किसी महत्वपूर्ण वस्तु का प्रतिनिधित्व करते है सी0वी0गुड के अनुसार– "मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है लगभग सभी विचारक मूल्यों के अभीष्ट चरित्र को स्वीकार करते है।"

मूल्य परिवर्तनशील समाज की वह धुरी है जिसके कारण समाज का अस्तित्व है क्योंकि उपयोगिता एवं कल्याणकारिता की भावना ही समाज को स्थिर रखती है। अतः मूल्य ऐसी आचार संहिता या सद्गुण है जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण कर अपने व्यक्तित्व का विकास करते है इसमें मनुष्य की धारणायें, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति आस्था आदि समाहित है।

प्रत्येक देश, समाज तथा संस्कृति के स्वयं के अपने कुछ मूल्य होते है तथा प्रत्येक मूल्यों के माध्यम से समाज की रूचियों की अभिव्यक्ति होती है अर्थात् वही स्वीकृत प्रतिमान या प्रयास, इच्छाएँ तथा उद्देश्य मूल्य होते है जो मनुष्य के व्यक्तित्व के अभिन्न अंग होते है। यह मूल्य समाज के माध्यम से स्थापित प्राथमिकताओं की अभिवृत्ति है, जिनमें व्यक्तित्व रूचि तथा अरूचि का कोई योगदान नहीं होता है। अतः व्यक्ति समाज के अन्तर्गत स्वयं को समायोजित करने के लिए समाज द्वारा स्वीकृत परिणामों या प्रत्ययों, इच्छाओं व उद्देश्यों को अपना पाता है। साथ ही मानव का

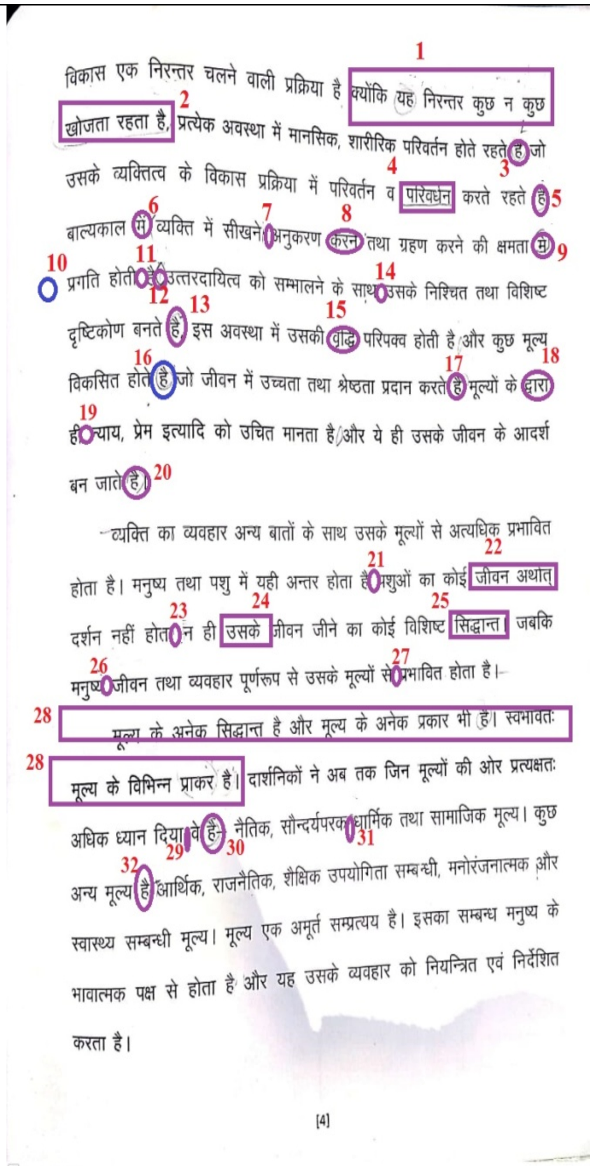
[3]

</td><td>

1. ,
2. आदर्शों
3. ।
4. ,
5. करते हैं।
6. हैं
7. ,
8. ,
9. हैं
10. ,
11. ,
12. हैं,
13. धारणाएँ
14. तथा
15. हैं
16. हैं
17. निरर्थक वाक्य
18. हैं,
19. हैं
20. ये
21. हैं
22. ,
23. नहीं
24. ,
25. निरर्थक वाक्य
26. अपनाता

नोट- दी गयी परिभाषा का फुटनोट तथा सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में कोई उल्लेख नहीं है।

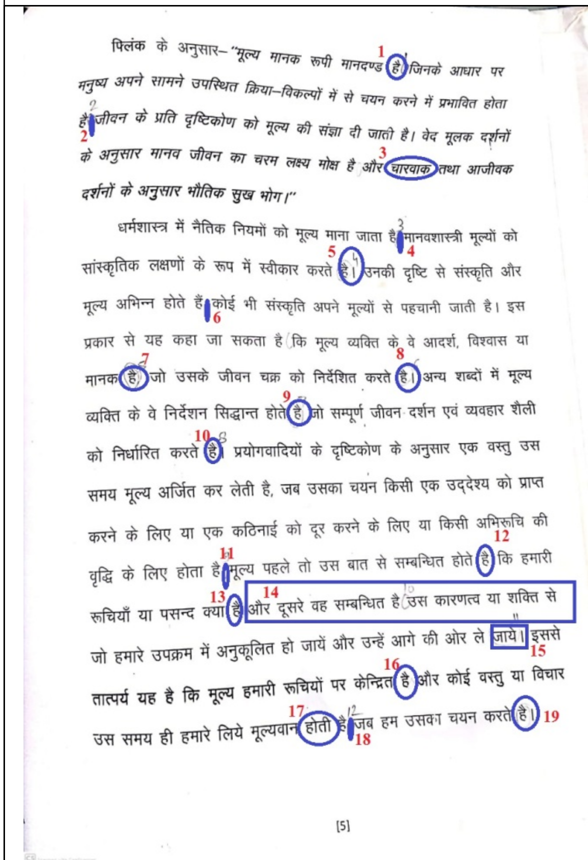
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
विकास एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है क्योंकि यह निरन्तर कुछ न कुछ खोजता रहता है, प्रत्येक अवस्था में मानसिक, शारीरिक परिवर्तन होते रहते है जो उसके व्यक्तित्व के विकास प्रक्रिया में परिवर्तन व परिवर्धन करते रहते है बाल्यकाल में व्यक्ति में सीखने अनुकरण करन तथा ग्रहण करने की क्षमता मे प्रगति होती है उत्तरदायित्व को सम्भालने के साथ उसके निश्चित तथा विशिष्ट दृष्टिकोण बनते है, इस अवस्था में उसकी वृद्धि परिपक्व होती है और कुछ मूल्य विकसित होते है जो जीवन में उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते है मूल्यों के द्वारा ही न्याय, प्रेम इत्यादि को उचित मानता है और ये ही उसके जीवन के आदर्श बन जाते है।

व्यक्ति का व्यवहार अन्य बातों के साथ उसके मूल्यों से अत्यधिक प्रभावित होता है। मनुष्य तथा पशु में यही अन्तर होता है पशुओं का कोई जीवन अथात दर्शन नहीं होता न ही उसके जीवन जीने का कोई विशिष्ट सिद्धान्त। जबकि मनुष्य जीवन तथा व्यवहार पूर्णरूप से उसके मूल्यों से प्रभावित होता है।

मूल्य के अनेक सिद्धान्त है और मूल्य के अनेक प्रकार भी है। स्वभावतः मूल्य के विभिन्न प्राकर है। दार्शनिकों ने अब तक जिन मूल्यों की ओर प्रत्यक्षतः अधिक ध्यान दिया वे है- नैतिक, सौन्दर्यपरक धार्मिक तथा सामाजिक मूल्य। कुछ अन्य मूल्य है आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक उपयोगिता सम्बन्धी, मनोरंजनात्मक और स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य। मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है। इसका सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से होता है और यह उसके व्यवहार को नियन्त्रित एवं निर्देशित करता है।

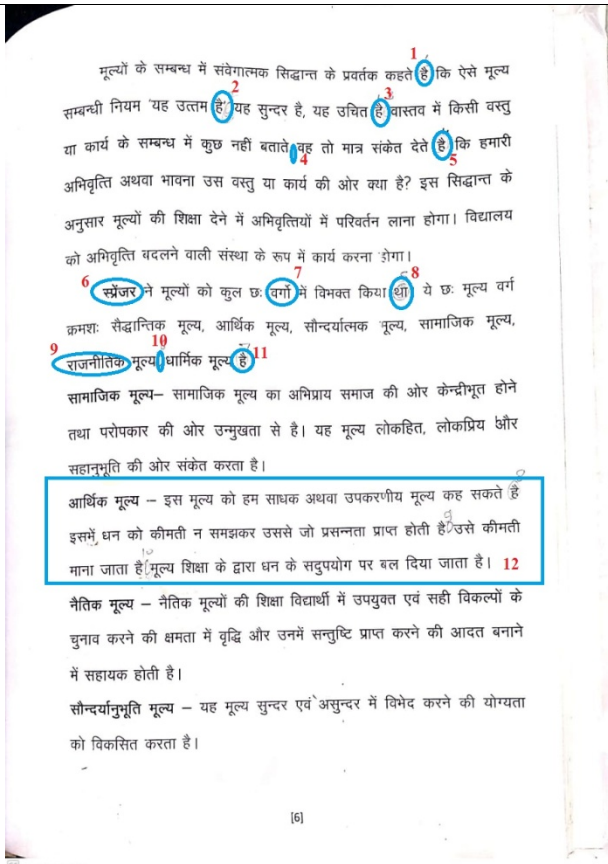
[4]</td>
<td>1. इन शब्दों का कोई अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है।
2. मानव विकास की
3. हैं,
4. परिमार्जन
5. हैं।
6. से ही
7. ,
8. निरर्थक शब्द
9. में
10. उत्तरोत्तर
11. रहती
12. ।
13. हैं।
14. -साथ
15. बुद्धि
16. है,
17. हैं।
18. कारण
19. वह
20. हैं।
21. कि
22. निरर्थक शब्द
23. और
24. उनके
25. उद्देश्य
26. का
27. निर्देशित एवं
28. मूल्य के अनेक सिद्धान्त एवं प्रकार हैं।
29. हैं,
30. है
31. ,
32. भी हैं-</td></tr>
</table>

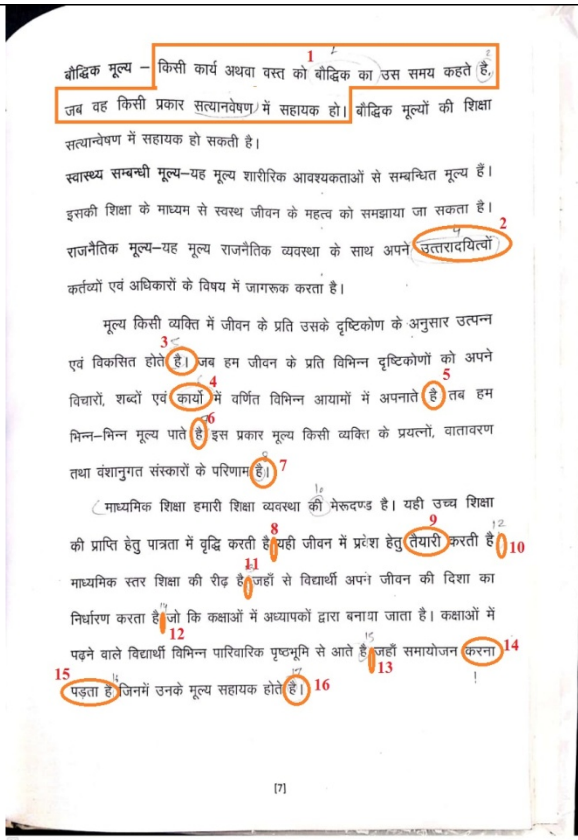
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


फिलंक के अनुसार– "मूल्य मानक रूपी मानदण्ड है जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया–विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होता है जीवन के प्रति दृष्टिकोण को मूल्य की संज्ञा दी जाती है। वेद मूलक दर्शनों के अनुसार मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष है और चारवाक तथा आजीवक दर्शनों के अनुसार भौतिक सुख भोग।"

धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य माना जाता है मानवशास्त्री मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणों के रूप में स्वीकार करते है। उनकी दृष्टि से संस्कृति और मूल्य अभिन्न होते हैं कोई भी संस्कृति अपने मूल्यों से पहचानी जाती है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि मूल्य व्यक्ति के वे आदर्श, विश्वास या मानक है जो उसके जीवन चक्र को निर्देशित करते है। अन्य शब्दों में मूल्य व्यक्ति के वे निर्देशन सिद्धान्त होते है जो सम्पूर्ण जीवन दर्शन एवं व्यवहार शैली को निर्धारित करते है। प्रयोगवादियों के दृष्टिकोण के अनुसार एक वस्तु उस समय मूल्य अर्जित कर लेती है, जब उसका चयन किसी एक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए या एक कठिनाई को दूर करने के लिए या किसी अभिरूचि की वृद्धि के लिए होता है मूल्य पहले तो उस बात से सम्बन्धित होते है कि हमारी रूचियाँ या पसन्द क्या है और दूसरे वह सम्बन्धित है उस कारणत्व या शक्ति से जो हमारे उपक्रम में अनुकूलित हो जायें और उन्हें आगे की ओर ले जाये। इससे तात्पर्य यह है कि मूल्य हमारी रूचियों पर केन्द्रित है और कोई वस्तु या विचार उस समय ही हमारे लिये मूल्यवान होती है जब हम उसका चयन करते है।

[5]
</td><td>
1. हैं,
2. ।
3. चार्वाक
4. ।
5. हैं
6. ,
7. हैं
8. हैं
9. हैं,
10. हैं
11. ।
12. हैं
13. हैं
14. और दूसरे उस कारणत्व या शक्ति से सम्बन्धित हैं,
15. जायें
16. हैं
17. होता
18. ,
19. हैं
नोट- इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषा का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में कोई उल्लेख नहीं किया गया है।
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
1 2 3 4 5
मूल्यों के सम्बन्ध में संवेगात्मक सिद्धान्त के प्रवर्तक कहते है कि ऐसे मूल्य सम्बन्धी नियम 'यह उत्तम है' यह सुन्दर है, यह उचित है वास्तव में किसी वस्तु या कार्य के सम्बन्ध में कुछ नहीं बताते वह तो मात्र संकेत देते है कि हमारी अभिवृत्ति अथवा भावना उस वस्तु या कार्य की ओर क्या है? इस सिद्धान्त के अनुसार मूल्यों की शिक्षा देने में अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाना होगा। विद्यालय को अभिवृत्ति बदलने वाली संस्था के रूप में कार्य करना होगा।
6 7 8
स्प्रेंजर ने मूल्यों को कुल छः वर्गो में विभक्त किया था ये छः मूल्य वर्ग क्रमशः सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य,
9 10 11
राजनीतिक मूल्य धार्मिक मूल्य है
सामाजिक मूल्य– सामाजिक मूल्य का अभिप्राय समाज की ओर केन्द्रीभूत होने तथा परोपकार की ओर उन्मुखता से है। यह मूल्य लोकहित, लोकप्रिय और सहानुभूति की ओर संकेत करता है।
आर्थिक मूल्य -- इस मूल्य को हम साधक अथवा उपकरणीय मूल्य कह सकते है इसमें धन को कीमती न समझकर उससे जो प्रसन्नता प्राप्त होती है उसे कीमती माना जाता है मूल्य शिक्षा के द्वारा धन के सदुपयोग पर बल दिया जाता है। 12
नैतिक मूल्य – नैतिक मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थी में उपयुक्त एवं सही विकल्पों के चुनाव करने की क्षमता में वृद्धि और उनमें सन्तुष्टि प्राप्त करने की आदत बनाने में सहायक होती है।
सौन्दर्यानुभूति मूल्य – यह मूल्य सुन्दर एवं असुन्दर में विभेद करने की योग्यता को विकसित करता है।
[6]</td>
<td>1. हैं
2. ,
3. ;
4. ,
5. हैं
6. स्प्रेंजर (Eduard Spranger)
7. वर्गों
8. है
9. राजनैतिक
10. तथा
11. हैं
नोट-
● मूल्यों के वर्गों का वर्णन स्प्रेंजर के अनुसार नहीं किया गया है।
● स्प्रेंजर द्वारा वर्णित धार्मिक मूल्यों का वर्णन नहीं किया गया है।
● स्प्रेंजर के वर्गीकरण के अतिरिक्त तीन अन्य मूल्य वर्गों- नैतिक मूल्य, बौद्धिक मूल्य तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्यों का वर्णन किया गया है, किन्तु उसके वर्णन के पूर्व निम्न पंक्तियाँ लिखना अपेक्षित था- "स्प्रेंजर द्वारा वर्णित उपर्युक्त छः मूल्य वर्गों के अतिरिक्त निम्न तीन मूल्य भी महत्वपूर्ण हैं।"
आर्थिक मूल्य- स्प्रेंजर ने इस वर्ग में उन व्यक्तियों को रखा है, जो भौतिक सुखों के इच्छुक होते हैं और धन को ज्यादा महत्व देते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः व्यावहारिक होते हैं।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


बौद्धिक मूल्य – किसी कार्य अथवा वस्त को बौद्धिक का उस समय कहते है, जब वह किसी प्रकार सत्यानवेषण में सहायक हो। बौद्धिक मूल्यों की शिक्षा सत्यान्वेषण में सहायक हो सकती है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य–यह मूल्य शारीरिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित मूल्य हैं। इसकी शिक्षा के माध्यम से स्वस्थ जीवन के महत्व को समझाया जा सकता है।

राजनैतिक मूल्य–यह मूल्य राजनैतिक व्यवस्था के साथ अपने उत्तरादयित्वों कर्तव्यों एवं अधिकारों के विषय में जागरूक करता है।

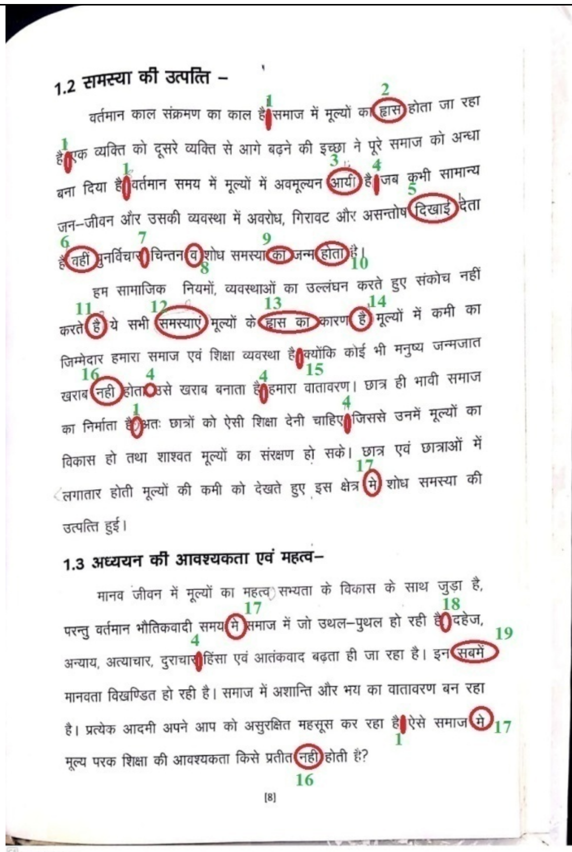
मूल्य किसी व्यक्ति में जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण के अनुसार उत्पन्न एवं विकसित होते है। जब हम जीवन के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों को अपने विचारों, शब्दों एवं कार्यो में वर्णित विभिन्न आयामों में अपनाते है तब हम भिन्न–भिन्न मूल्य पाते है इस प्रकार मूल्य किसी व्यक्ति के प्रयत्नों, वातावरण तथा वंशानुगत संस्कारों के परिणाम है।

माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था की मेरूदण्ड है। यही उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु पात्रता में वृद्धि करती है यही जीवन में प्रवेश हेतु तैयारी करती है माध्यमिक स्तर शिक्षा की रीढ़ है जहाँ से विद्यार्थी अपने जीवन की दिशा का निर्धारण करता है जो कि कक्षाओं में अध्यापकों द्वारा बनाया जाता है। कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थी विभिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते है जहाँ समायोजन करना पड़ता है जिनमें उनके मूल्य सहायक होते है।

[7]
</td><td>

1. शिक्षा एवं ज्ञान को बौद्धिक मूल्य की संज्ञा दी जाती है। बौद्धिक मूल्य वे हैं जो कारण, बुद्धि और स्मृति के मामले में मनुष्य को सुधारते हैं।
2. उत्तरदायित्वों,
3. हैं
4. कार्यों
5. हैं,
6. हैं
7. ।
8. हैं
9. तैयार
10. ।
11. ,
12. ,
13. हैं,
14. करने
15. में
16. हैं

</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

1.2 समस्या की उत्पत्ति –

वर्तमान काल संक्रमण का काल है समाज में मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से आगे बढ़ने की इच्छा ने पूरे समाज को अन्धा बना दिया है वर्तमान समय में मूल्यों में अवमूल्यन आयी है जब कभी सामान्य जन–जीवन और उसकी व्यवस्था में अवरोध, गिरावट और असन्तोष दिखाई देता है वहीं पुनर्विचार चिन्तन व शोध समस्या का जन्म होता है।

हम सामाजिक नियमों, व्यवस्थाओं का उल्लंघन करते हुए संकोच नहीं करते है ये सभी समस्याएं मूल्यों के ह्रास का कारण है मूल्यों में कमी का जिम्मेदार हमारा समाज एवं शिक्षा व्यवस्था है क्योंकि कोई भी मनुष्य जन्मजात खराब नही होता उसे खराब बनाता है हमारा वातावरण। छात्र ही भावी समाज का निर्माता है अतः छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनमें मूल्यों का विकास हो तथा शाश्वत मूल्यों का संरक्षण हो सके। छात्र एवं छात्राओं में लगातार होती मूल्यों की कमी को देखते हुए इस क्षेत्र मे शोध समस्या की उत्पत्ति हुई।

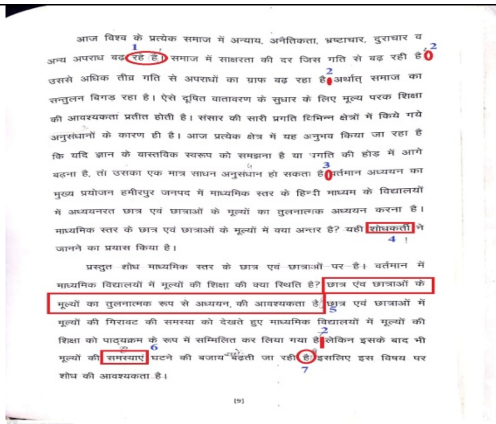
1.3 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

मानव जीवन में मूल्यों का महत्व सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा है, परन्तु वर्तमान भौतिकवादी समय मे समाज में जो उथल–पुथल हो रही है दहेज, अन्याय, अत्याचार, दुराचार हिंसा एवं आतंकवाद बढ़ता ही जा रहा है। इन सबमें मानवता विखण्डित हो रही है। समाज में अशान्ति और भय का वातावरण बन रहा है। प्रत्येक आदमी अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा है ऐसे समाज मे मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता किसे प्रतीत नही होती हैं?

[8]</td><td>

1. ।
2. ह्रास
3. आया
4. ,
5. दिखायी
6. , तो वहीं
7. व
8. ,
9. को
10. देता
11. हैं।
12. समस्याएँ
13. ह्रास के
14. हैं।
15. ;
16. नहीं
17. में
18. इससे
19. सबसे

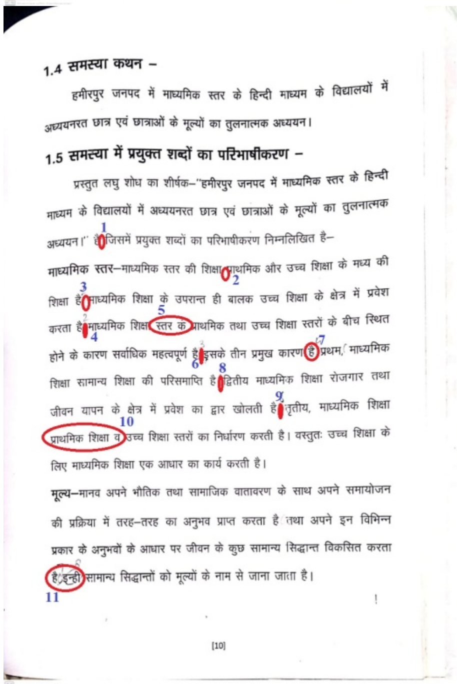
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


आज विश्व के प्रत्येक समाज में अन्याय, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, दुराचार व अन्य अपराध बढ़ रहे है। समाज में साक्षरता की दर जिस गति से बढ़ रही है उससे अधिक तीव्र गति से अपराधों का ग्राफ बढ़ रहा है अर्थात् समाज का सन्तुलन बिगड़ रहा है। ऐसे दूषित वातावरण के सुधार के लिए मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता प्रतीत होती है। संसार की सारी प्रगति विभिन्न क्षेत्रों में किये गये अनुसंधानों के कारण ही है। आज प्रत्येक क्षेत्र में यह अनुभव किया जा रहा है कि यदि ज्ञान के वास्तविक स्वरूप को समझना है या प्रगति की होड़ में आगे बढ़ना है, तो उसका एक मात्र साधन अनुसंधान हो सकता है वर्तमान अध्ययन का मुख्य प्रयोजन हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में क्या अन्तर है? यही शोधकर्ती ने जानने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर है। वर्तमान में माध्यमिक विद्यालयों में मूल्यों की शिक्षा की क्या स्थिति है? छात्र एंव छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक रूप से अध्ययन, की आवश्यकता है छात्र एवं छात्राओं में मूल्यों की गिरावट की समस्या को देखते हुए माध्यमिक विद्यालयों में मूल्यों की शिक्षा को पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित कर लिया गया है लेकिन इसके बाद भी मूल्यों की समस्याएं घटने की बजाय बढ़ती जा रही है इसलिए इस विषय पर शोध की आवश्यकता है।

[9]
</td><td>

1. रहे हैं
2. ,
3. ।
4. शोधकर्त्री
5. इन शब्दों का कोई अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है।
6. समस्याएँ
7. हैं,
</td></tr>
<tr><td>


1.4 समस्या कथन –

हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

1.5 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण –

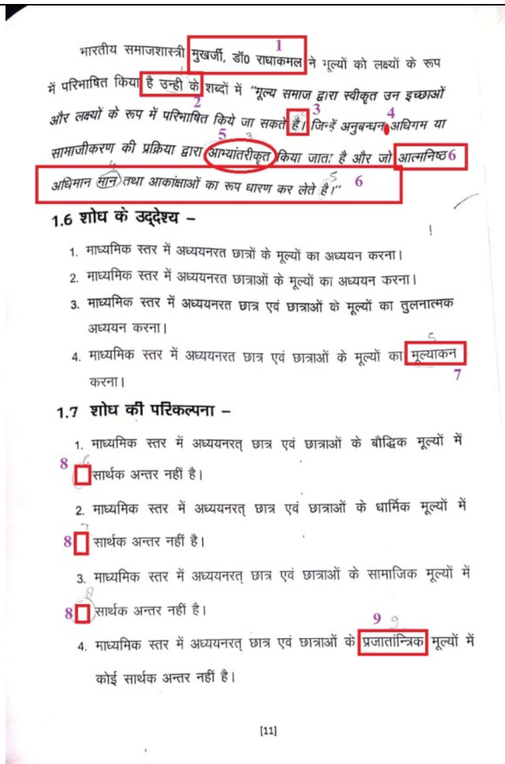
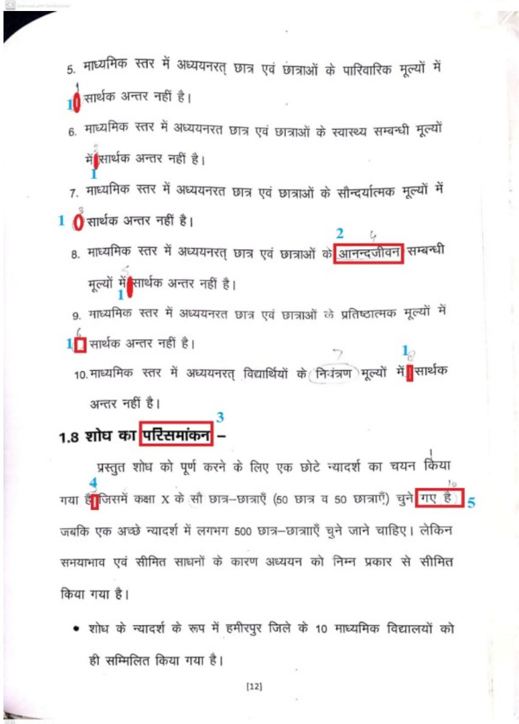
प्रस्तुत लघु शोध का शीर्षक–"हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।" है जिसमें प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण निम्नलिखित है–

माध्यमिक स्तर–माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है माध्यमिक शिक्षा के उपरान्त ही बालक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करता है माध्यमिक शिक्षा स्तर के प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा स्तरों के बीच स्थित होने के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है इसके तीन प्रमुख कारण है प्रथम, माध्यमिक शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसमाप्ति है द्वितीय माध्यमिक शिक्षा रोजगार तथा जीवन यापन के क्षेत्र में प्रवेश का द्वार खोलती है तृतीय, माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा स्तरों का निर्धारण करती है। वस्तुतः उच्च शिक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा एक आधार का कार्य करती है।

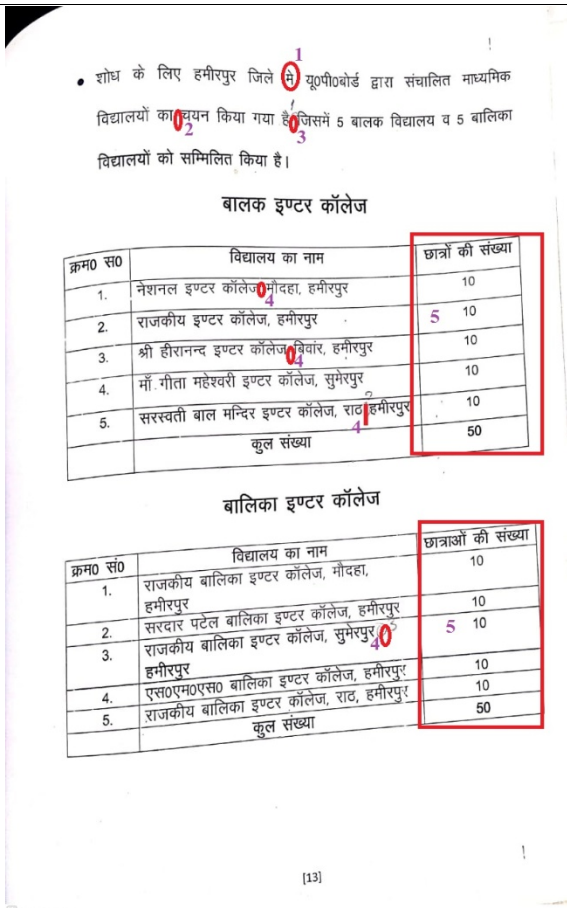
मूल्य–मानव अपने भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ अपने समायोजन की प्रक्रिया में तरह–तरह का अनुभव प्राप्त करता है तथा अपने इन विभिन्न प्रकार के अनुभवों के आधार पर जीवन के कुछ सामान्य सिद्धान्त विकसित करता है इन्ही सामान्य सिद्धान्तों को मूल्यों के नाम से जाना जाता है।

[10]
</td><td>

1. ,
2. ,
3. ।
4. ।
5. निरर्थक शब्द
6. ,
7. हैं–
8. ।
9. ।
10. निरर्थक शब्द
11. ।
12. इन्हीं
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 भारतीय समाजशास्त्री मुखर्जी, डॉ0 राधाकमल ने मूल्यों को लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया है उन्ही के शब्दों में *"मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते है। जिन्हें अनुबन्धन अधिगम या सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आभ्यांतरीकृत किया जाता है और जो आत्मनिष्ठ अधिमान मान तथा आकांक्षाओं का रूप धारण कर लेते है।"* **1.6 शोध के उद्देश्य –** 1. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना। 2. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना। 3. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। 4. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का मूल्याकन करना। **1.7 शोध की परिकल्पना –** 1. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के बौद्धिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 2. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 3. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 4. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के प्रजातान्त्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। [11]	1. डॉ० राधाकमल मुखर्जी 2. इनके 3. हैं, 4. , 5. आत्मसात 6. व्यक्तिगत मानकों तथा आवश्यकताओं के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। 7. मूल्यांकन 8. कोई 9. प्रजातान्त्रिक **नोट-** इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषा का फुटनोट तथा सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में कोई उल्लेख नहीं है।
 5. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 6. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 7. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 8. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के आनन्दजीवन सम्बन्धी मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 9. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के प्रतिष्ठात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। 10. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नियंत्रण मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। **1.8 शोध का परिसमांकन –** प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने के लिए एक छोटे न्यादर्श का चयन किया गया है जिसमें कक्षा X के सौ छात्र–छात्राएँ (50 छात्र व 50 छात्राएँ) चुने गए है जबकि एक अच्छे न्यादर्श में लगभग 500 छात्र–छात्राएँ चुने जाने चाहिए। लेकिन समयाभाव एवं सीमित साधनों के कारण अध्ययन को निम्न प्रकार से सीमित किया गया है। • शोध के न्यादर्श के रूप में हमीरपुर जिले के 10 माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है। [12]	1. कोई 2. आनन्दजीवी 3. परिसीमांकन 4. , 5. गये हैं,

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



• शोध के लिए हमीरपुर जिले मे यू0पी0बोर्ड द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें 5 बालक विद्यालय व 5 बालिका विद्यालयों को सम्मिलित किया है।

बालक इण्टर कॉलेज

क्रम0 स0	विद्यालय का नाम	छात्रों की संख्या
1.	नेशनल इण्टर कॉलेज मौदहा, हमीरपुर	10
2.	राजकीय इण्टर कॉलेज, हमीरपुर	10
3.	श्री हीरानन्द इण्टर कॉलेज बिवांर, हमीरपुर	10
4.	माँ गीता महेश्वरी इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर	10
5.	सरस्वती बाल मन्दिर इण्टर कॉलेज, राठ हमीरपुर	10
	कुल संख्या	50

बालिका इण्टर कॉलेज

क्रम0 सं0	विद्यालय का नाम	छात्राओं की संख्या
1.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मौदहा, हमीरपुर	10
2.	सरदार पटेल बालिका इण्टर कॉलेज, हमीरपुर	10
3.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर हमीरपुर	10
4.	एस0एम0एस0 बालिका इण्टर कॉलेज, हमीरपुर	10
5.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, राठ, हमीरपुर	10
	कुल संख्या	50

[13]

1. में
2. ही
3. ,
4. ,

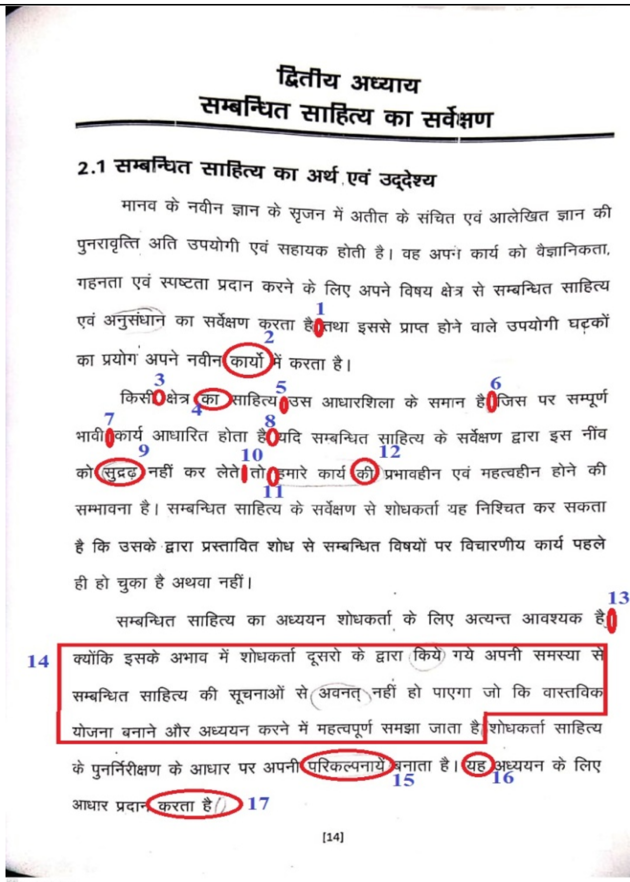
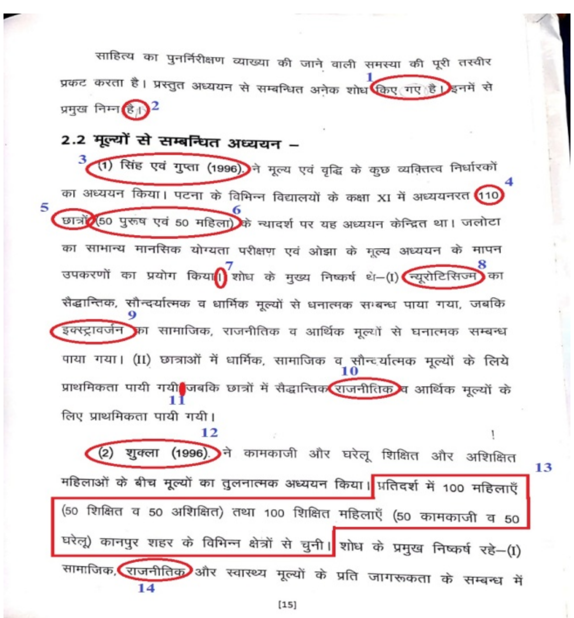
नोट- यह इंगित किया जाना चाहिए, कि हमीरपुर जनपद में यू०पी० बोर्ड द्वारा संचालित कितने इण्टर कॉलेज हैं।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score rule (Points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
2	**Review of Literature**	**Max Score=9**		
2.1.	Does the review identify gaps?	No		0
2.2.	Does the review identify overlaps?	No		0
2.3.	Does the review identify contradiction?	No		0
2.4.	Is the coverage of the review adequate?	No		0
2.5.	Is the review up-to-date?	No		0
2.6	What is the level of the review?	Chronological		1
	Sub Total	**Actual Max=**		1

Comments:

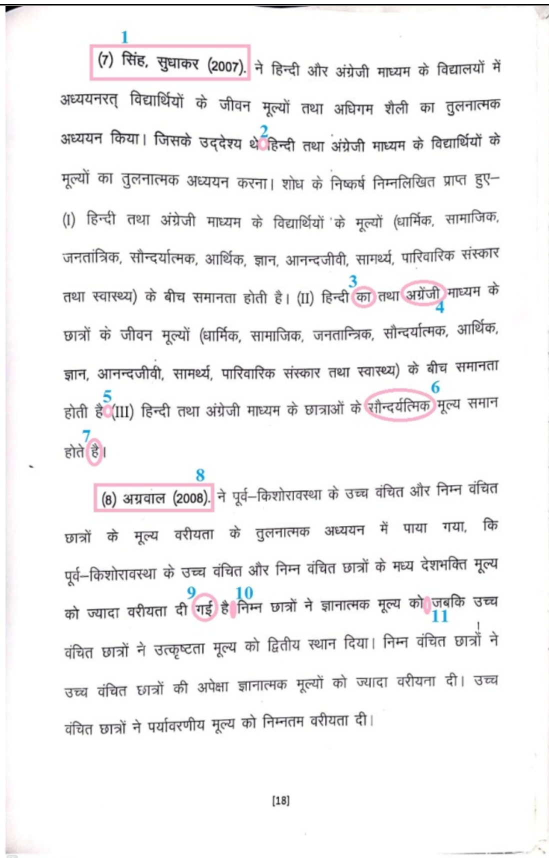
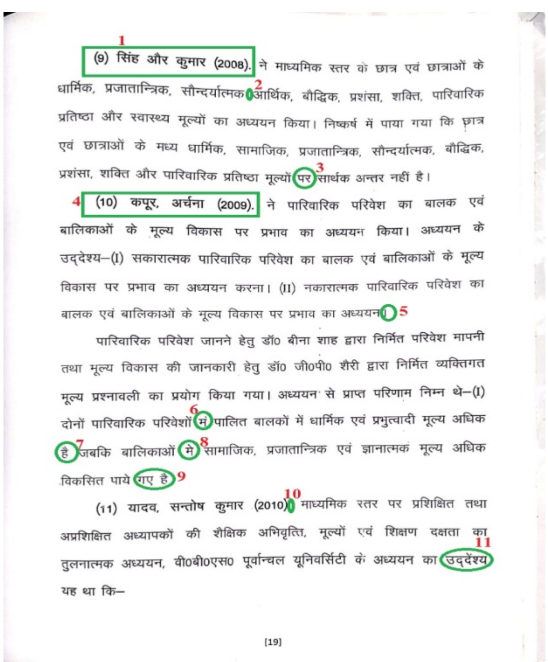
शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोध साहित्य का सर्वेक्षण सन्दिग्ध प्रतीत होता है। क्योंकि इसमें किसी भी शोध कार्य का न तो फुट नोट में और न ही सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख किया गया है। यह भी स्पष्ट नहीं किया गया है कि यह शोध कार्य कहाँ किये गए अर्थात किस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है। इससे सम्बन्धित साहित्य का सत्यापन करना सम्भव नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि लघु-शोध में उल्लेखित सम्बन्धित साहित्य कहीं से भी की गयी नकल अथवा cut & paste मात्र है, जिसका कोई औचित्य नहीं है। किसी भी शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण प्राथमिक स्रोतों से किया जाना चाहिए ताकि शोध-कार्य में अशुद्धियों से बचा जा सके तथा उसका उल्लेख आवश्यक रूप से सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में भी किया जाना चाहिए। शोधकर्त्री द्वारा किये गये सम्बन्धित साहित्य में अनगिनत त्रुटियों का कारण यह भी हो सकता है कि वह द्वितीयक स्रोतों से अथवा अप्रामाणिक स्रोतों से लिए गये हो। अतः शोध-कार्य में वर्णित सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते। अर्थात सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण निरर्थक है।

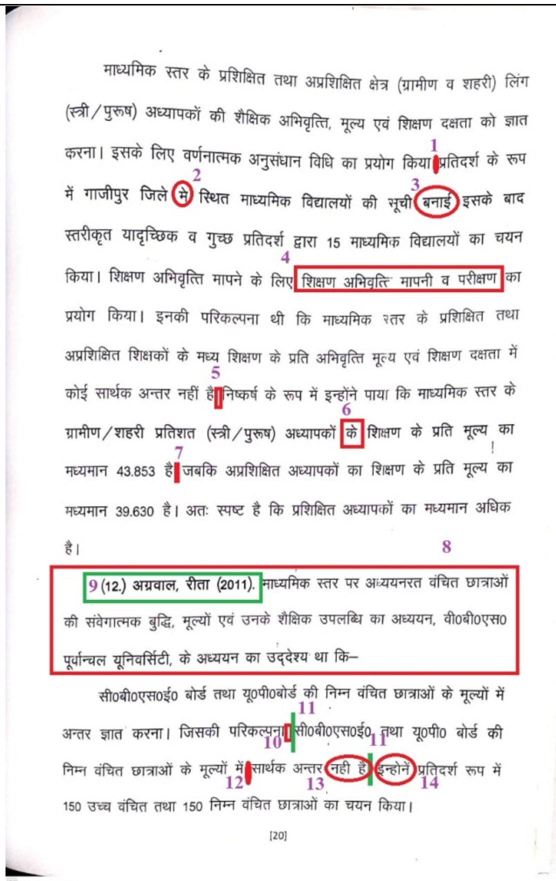
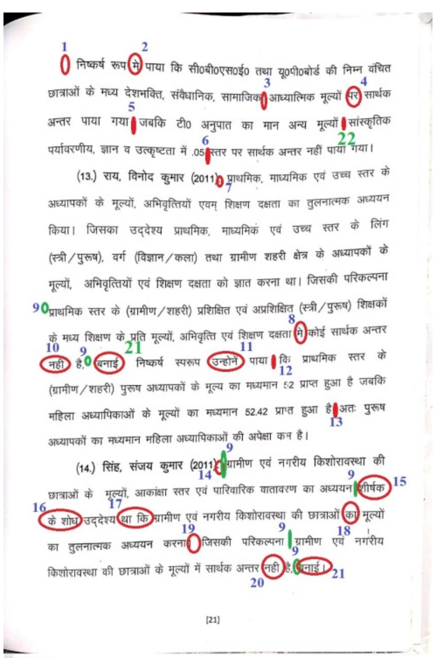
साहित्य के सर्वेक्षण में प्रयुक्त हुए गलत शब्दों का सही रूप-

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं उद्देश्य
मानव के नवीन ज्ञान के सृजन में अतीत के संचित एवं आलेखित ज्ञान की पुनरावृत्ति अति उपयोगी एवं सहायक होती है। वह अपने कार्य को वैज्ञानिकता, गहनता एवं स्पष्टता प्रदान करने के लिए अपने विषय क्षेत्र से सम्बन्धित साहित्य एवं अनुसंधान का सर्वेक्षण करता है तथा इससे प्राप्त होने वाले उपयोगी घटकों का प्रयोग अपने नवीन कार्यों में करता है।
किसी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को सुद्रढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य की प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले ही हो चुका है अथवा नहीं।
सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता के लिए अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसके अभाव में शोधकर्ता दूसरो के द्वारा किये गये अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से अवनत् नहीं हो पाएगा जो कि वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में महत्वपूर्ण समझा जाता है शोधकर्ता साहित्य के पुनर्निरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनायें बनाता है। यह अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है।
[14]</td><td>1. ,
2. कार्यों
3. भी
4. के
5. सम्बन्धित का अध्ययन
6. ,
7. शोध
8. ।
9. सुदृढ़
10. ,
11. शोध
12. के
13. ।
14. इन शब्दों का कोई अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है।
15. परीकल्पनाएँ
16. जो
17. करती हैं।</td></tr>
<tr><td>
साहित्य का पुनर्निरीक्षण व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित अनेक शोध किए गए है। इनमें से प्रमुख निम्न है।
2.2 मूल्यों से सम्बन्धित अध्ययन –
(1) सिंह एवं गुप्ता (1996). ने मूल्य एवं वृद्धि के कुछ व्यक्तित्व निर्धारकों का अध्ययन किया। पटना के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा XI में अध्ययनरत 110 छात्रों (50 पुरूष एवं 50 महिला) के न्यादर्श पर यह अध्ययन केन्द्रित था। जलोटा का सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण एवं ओझा के मूल्य अध्ययन के मापन उपकरणों का प्रयोग किया। शोध के मुख्य निष्कर्ष थे–(I) न्यूरोटिसिज्म का सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक व धार्मिक मूल्यों से धनात्मक सम्बन्ध पाया गया, जबकि इक्स्ट्रावर्जन का सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों से घनात्मक सम्बन्ध पाया गया। (II) छात्राओं में धार्मिक, सामाजिक व सौन्दर्यात्मक मूल्यों के लिये प्राथमिकता पायी गयी जबकि छात्रों में सैद्धान्तिक राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों के लिए प्राथमिकता पायी गयी।
(2) शुक्ला (1996). ने कामकाजी और घरेलू शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बीच मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रतिदर्श में 100 महिलाएँ (50 शिक्षित व 50 अशिक्षित) तथा 100 शिक्षित महिलाएँ (50 कामकाजी व 50 घरेलू) कानपुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से चुनी। शोध के प्रमुख निष्कर्ष रहे–(I) सामाजिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य मूल्यों के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में
[15]</td><td>1. किये गए हैं
2. हैं-
3. इन शोधकर्ताओं का नाम सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है।
4. 100
5. विद्यार्थियों
6. छात्र एवं छात्राएँ
7. गया
8. निरर्थक शब्द
9. निरर्थक शब्द
10. , राजनैतिक
11. ,
12. यह प्रतिदर्श स्पष्ट नहीं हो रहा है।</td></tr>
</table>

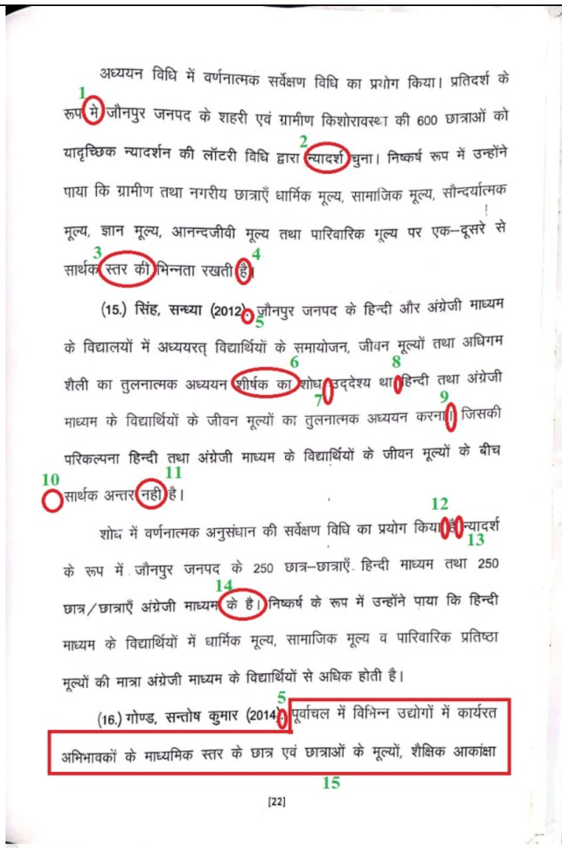
	13. इन शोधकर्ताओं के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है। 14. राजनैतिक

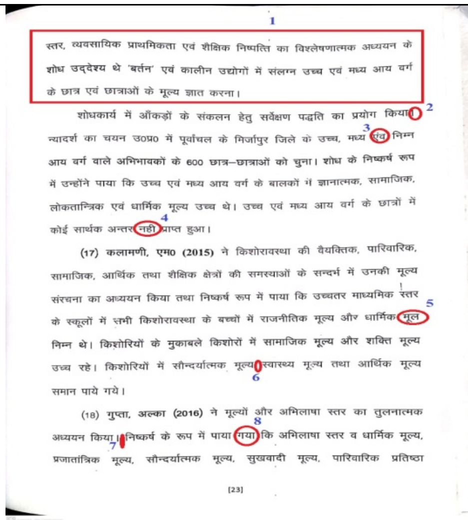
अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	**अशुद्ध शब्दों का सही रूप**
शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। किन्तु धार्मिक मूल्यों में उनमें अन्तर पाया गया। (II) शिक्षित कामकाजी महिलाओं का दृष्टिकोण अशिक्षित तथा घरेलू महिलाओं की तुलना में भौतिकवादी पाया गया। (III) यह पाया गया कि शिक्षित तथा अशिक्षित घरेलू महिलाएँ अपनी पारिवारिक प्रतिष्ठा के प्रति अधिक सचेत थी। (IV) शिक्षित, अशिक्षित, घरेलू एवं कामकाजी महिलाएँ सौन्दर्यात्मक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण रखती थी। (3) भट्ट (1996) ने विभिन्न आयु स्तरों पर आयु की वृद्धि के साथ मूल्यों के विकास के तरीको का अध्ययन किया। परिणाम दर्शाते है कि 11 वर्ष की आयु तक मूल्य विकास को 56.5 अंक दिए गए, 13 वर्ष की आयु तक मूल्य बढ़कर 65.25 हो गए एवं 15 वर्ष की आयु तक अंक बढ़कर 65.70 हो गए। यह आँकड़े दर्शाते है कि मध्य किशोरावस्था तक मूल्य विकास तेजी से होता है परन्तु यह प्रक्रिया उत्तर किशोरावस्था में धीमी हो जाती है। इन्होंने पाया कि (I) शहरी लड़के तथा लड़कियों के मूल्य विकास में कोई विशेष अन्तर नही है। (4) पाण्डेय, ए0 (1998). ने प्रतिभाशाली और औसत बालकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य इस प्रकार थे–(I) प्रतिभाशाली और औसत बालकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। (III) प्रतिभाशाली और औसत बालकों के मूल्यों के मध्य विभिन्न मूल्यों की असमानता खोजना। [16] शोध के न्यादर्श के रूप में 320 प्रतिभाशाली और औसत छात्रों को चुना गया। उपकरण के रूप में बुद्धि तथा सोढी अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया। शोध के निष्कर्ष रूप मे पाया कि प्रतिभाशाली और औसत छात्रों के आदर्शात्मक धार्मिक मूल्यों मे कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। (5) हसीन, (1998). ने सामाजिक वर्ग तथा आधुनिकता के सन्दर्भ मे हिन्दू तथा अहिन्दू छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में राजकीय, वित्तपोषित मान्यता प्राप्त व वित्तविहीन मान्यता प्राप्त विद्यालयों के 400 छात्रों का सामान्य स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। शोध के प्रमुख निष्कर्ष थे–(I) व्यक्तिगत मूल्यों के सम्बन्ध में हिन्दू तथा मुसलमान बालकों में मतभेद थे किन्तु हिन्दू व मुसलमान बालिकाओं में नही थे। जबकि इसाई बालक व बालिकाओं में हिन्दू बालकों, बालिकाओं या मुसलमान बालकों व बालिकाओं से किसी प्रकार मतभेद नहीं था। (6) सिंह, शम्भूशरण (2000). ने प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक सामाजिक स्थिति एवं जीवन मूल्य शीर्षक पर शोधकार्य किया और निष्कर्ष रूप में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त किया (I) पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर था। (II) सामान्य एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों के मूल्य स्तर में सार्थक अन्तर नहीं था। (III) हिन्दू शिक्षकों एवं मुस्लिम शिक्षकों के मूल्य स्तर में सार्थक अन्तर नहीं था। (IV) शैक्षिक सामाजिक स्थिति एवं निम्न शैक्षिक एवं निम्न शैक्षिक सामाजिक स्थिति वाले अध्यापकों के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं था। [17]	1. , 2. थीं 3. इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है। 4. शोधकर्ता के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है। 5. तरीकों 6. हैं, 7. दिये गए 8. गये 9. गये 10. हैं 11. । 12. नहीं 13. शोधकर्ता के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है। 14. । 1. इस मापनी का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। 2. शोधकर्ता का नाम सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है। 3. में 4. नहीं 5. , 6. शोधकर्ता के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है। 7. " 8. की 9. " 10. -

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 (7) सिंह, सुधाकर (2007). ने हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों तथा अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य थे हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित प्राप्त हुए– (I) हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मूल्यों (धार्मिक, सामाजिक, जनतांत्रिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, आनन्दजीवी, सामर्थ्य, पारिवारिक संस्कार तथा स्वास्थ्य) के बीच समानता होती है। (II) हिन्दी का तथा अग्रंजी माध्यम के छात्रों के जीवन मूल्यों (धार्मिक, सामाजिक, जनतान्त्रिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, आनन्दजीवी, सामर्थ्य, पारिवारिक संस्कार तथा स्वास्थ्य) के बीच समानता होती है (III) हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं के सौन्दर्यत्मिक मूल्य समान होते है। (8) अग्रवाल (2008). ने पूर्व–किशोरावस्था के उच्च वंचित और निम्न वंचित छात्रों के मूल्य वरीयता के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया, कि पूर्व–किशोरावस्था के उच्च वंचित और निम्न वंचित छात्रों के मध्य देशभक्ति मूल्य को ज्यादा वरीयता दी गई है निम्न छात्रों ने ज्ञानात्मक मूल्य को जबकि उच्च वंचित छात्रों ने उत्कृष्टता मूल्य को द्वितीय स्थान दिया। निम्न वंचित छात्रों ने उच्च वंचित छात्रों की अपेक्षा ज्ञानात्मक मूल्यों को ज्यादा वरीयना दी। उच्च वंचित छात्रों ने पर्यावरणीय मूल्य को निम्नतम वरीयता दी। [18]	1. इन शोधकर्ताओं के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। 2. – 3. निरर्थक शब्द 4. अंग्रेजी 5. । 6. सौन्दर्यात्मक 7. हैं। 8. इन शोधकर्ताओं के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। 9. गयी 10. । 11. ,
 (9) सिंह और कुमार (2008). ने माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक, प्रजातान्त्रिक, सौन्दर्यात्मक आर्थिक, बौद्धिक, प्रशंसा, शक्ति, पारिवारिक प्रतिष्ठा और स्वास्थ्य मूल्यों का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य धार्मिक, सामाजिक, प्रजातान्त्रिक, सौन्दर्यात्मक, बौद्धिक, प्रशंसा, शक्ति और पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों पर सार्थक अन्तर नहीं है। (10) कपूर, अर्चना (2009). ने पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य–(I) सकारात्मक पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना। (II) नकारात्मक पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव का अध्ययन पारिवारिक परिवेश जानने हेतु डॉ0 बीना शाह द्वारा निर्मित परिवेश मापनी तथा मूल्य विकास की जानकारी हेतु डॉ0 जी0पी0 शैरी द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त परिणाम निम्न थे–(I) दोनों पारिवारिक परिवेशों मं पालित बालकों में धार्मिक एवं प्रभुत्वादी मूल्य अधिक है जबकि बालिकाओं मे सामाजिक, प्रजातान्त्रिक एवं ज्ञानात्मक मूल्य अधिक विकसित पाये गए है (11) यादव, सन्तोष कुमार (2010) माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्यों एवं शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन, वी0बी0एस0 पूर्वान्चल यूनिवर्सिटी के अध्ययन का उद्देंश्य यह था कि– [19]	1. इन शोधकर्ताओं के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। 2. , 3. में कोई 4. इन शोधकर्ताओं के नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। 5. करना। 6. में 7. हैं, 8. में 9. गये हैं 10. , 11. उद्देश्य

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) लिंग (स्त्री/पुरूष) अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता को ज्ञात करना। इसके लिए वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया प्रतिदर्श के रूप में गाजीपुर जिले मे स्थित माध्यमिक विद्यालयों की सूची बनाई इसके बाद स्तरीकृत यादृच्छिक व गुच्छ प्रतिदर्श द्वारा 15 माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया। शिक्षण अभिवृत्ति मापने के लिए शिक्षण अभिवृत्ति मापनी व परीक्षण का प्रयोग किया। इनकी परिकल्पना थी कि माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्य शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मूल्य एवं शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है निष्कर्ष के रूप में इन्होंने पाया कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण/शहरी प्रतिशत (स्त्री/पुरूष) अध्यापकों के शिक्षण के प्रति मूल्य का मध्यमान 43.853 है जबकि अप्रशिक्षित अध्यापकों का शिक्षण के प्रति मूल्य का मध्यमान 39.630 है। अतः स्पष्ट है कि प्रशिक्षित अध्यापकों का मध्यमान अधिक है। (12.) अग्रवाल, रीता (2011). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत वंचित छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि, मूल्यों एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, वी0बी0एस0 पूर्वान्चल यूनिवर्सिटी, के अध्ययन का उद्देश्य था कि– सी0बी0एस0ई0 बोर्ड तथा यू0पी0बोर्ड की निम्न वंचित छात्राओं के मूल्यों में अन्तर ज्ञात करना। जिसकी परिकल्पना सी0बी0एस0ई0 तथा यू0पी0 बोर्ड की निम्न वंचित छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नही है इन्होनें प्रतिदर्श रूप में 150 उच्च वंचित तथा 150 निम्न वंचित छात्राओं का चयन किया। [20]	1. । 2. में 3. बनायी। 4. यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि यह मापनी किसकी है। 5. । 6. का 7. , 8. वाक्य की संरचना ठीक नहीं है तथा अर्थ भी स्पष्ट नहीं है। 9. अग्रवाल, रीता (2011) , 10. थी 11. “” 12. कोई 13. नहीं है। 14. इन्होंने
 निष्कर्ष रूप मे पाया कि सी0बी0एस0ई0 तथा यू0पी0बोर्ड की निम्न वंचित छात्राओं के मध्य देशभक्ति, संवैधानिक, सामाजिक आध्यात्मिक मूल्यों पर सार्थक अन्तर पाया गया जबकि टी0 अनुपात का मान अन्य मूल्यों सांस्कृतिक पर्यावरणीय, ज्ञान व उत्कृष्टता में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। (13.) राय, विनोद कुमार (2011) प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के अध्यापकों के मूल्यों, अभिवृत्तियों एवम् शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के लिंग (स्त्री/पुरूष), वर्ग (विज्ञान/कला) तथा ग्रामीण शहरी क्षेत्र के अध्यापकों के मूल्यों, अभिवृत्तियों एवं शिक्षण दक्षता को ज्ञात करना था। जिसकी परिकल्पना प्राथमिक स्तर के (ग्रामीण/शहरी) प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित (स्त्री/पुरूष) शिक्षकों के मध्य शिक्षण के प्रति मूल्यों, अभिवृत्ति एवं शिक्षण दक्षता मे कोई सार्थक अन्तर नही है, बनाई निष्कर्ष स्परूप उन्होनें पाया कि प्राथमिक स्तर के (ग्रामीण/शहरी) पुरूष अध्यापकों के मूल्य का मध्यमान 52 प्राप्त हुआ है जबकि महिला अध्यापिकाओं के मूल्यों का मध्यमान 52.42 प्राप्त हुआ है अतः पुरूष अध्यापकों का मध्यमान महिला अध्यापिकाओं की अपेक्षा कम है। (14.) सिंह, संजय कुमार (2011) ग्रामीण एवं नगरीय किशोरावस्था की छात्राओं के मूल्यों, आकांक्षा स्तर एवं पारिवारिक वातावरण का अध्ययन शीर्षक के शोध उद्देश्य था कि ग्रामीण एवं नगरीय किशोरावस्था की छात्राओं का मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना जिसकी परिकल्पना ग्रामीण एवं नगरीय किशोरावस्था की छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नही है, बनाई। [21]	1. इन्होंने 2. में 3. तथा 4. में 5. , 6. सार्थकता 7. ने 8. 9. " में 10. नहीं 11. उन्होंने 12. - 13. ।

	14. के 15. शोध 16. निरर्थक शब्द 17. का 18. के 19. था, 20. नहीं 21. बनायी 22. -

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	**अशुद्ध शब्दों का सही रूप**
 अध्ययन विधि में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। प्रतिदर्श के रूप मे जौनपुर जनपद के शहरी एवं ग्रामीण किशोरावस्था की 600 छात्राओं को यादृच्छिक न्यादर्शन की लॉटरी विधि द्वारा न्यादर्श चुना। निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि ग्रामीण तथा नगरीय छात्राएँ धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, ज्ञान मूल्य, आनन्दजीवी मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य पर एक–दूसरे से सार्थक स्तर की भिन्नता रखती है। (15.) सिंह, सन्ध्या (2012). जौनपुर जनपद के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययरत् विद्यार्थियों के समायोजन, जीवन मूल्यों तथा अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक का शोध उद्देश्य था हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। जिसकी परिकल्पना हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के बीच सार्थक अन्तर नही है। शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद के 250 छात्र–छात्राएँ हिन्दी माध्यम तथा 250 छात्र/छात्राएँ अंग्रेजी माध्यम के है। निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य व पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों की मात्रा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक होती है। (16.) गोण्ड, सन्तोष कुमार (2014). पूर्वांचल में विभिन्न उद्योगों में कार्यरत अभिभावकों के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों, शैक्षिक आकांक्षा [22] 	1. में 2. निरर्थक शब्द 3. रूप में 4. हैं 5. ने 6. किया। इस 7. का 8. – 9. , 10. कोई 11. नहीं 12. गया 13. । 14. हैं 15. वाक्य संरचना उपयुक्त नहीं है।

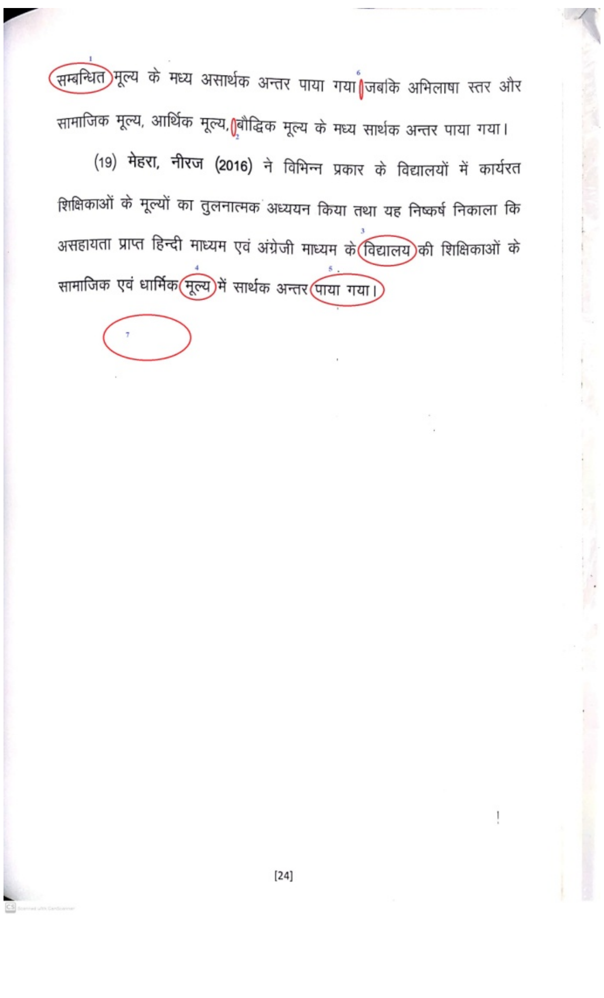
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
1

स्तर, व्यवसायिक प्राथमिकता एवं शैक्षिक निष्पत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन के शोध उद्देश्य थे 'बर्तन' एवं कालीन उद्योगों में संलग्न उच्च एवं मध्य आय वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के मूल्य ज्ञात करना।

शोधकार्य में आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया 2 न्यादर्श का चयन उ0प्र0 में पूर्वांचल के मिर्जापुर जिले के उच्च, मध्य 3 एंव निम्न आय वर्ग वाले अभिभावकों के 600 छात्र–छात्राओं को चुना। शोध के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों में ज्ञानात्मक, सामाजिक, लोकतान्त्रिक एवं धार्मिक मूल्य उच्च थे। उच्च एवं मध्य आय वर्ग के छात्रों में कोई सार्थक अन्तर 4 नही प्राप्त हुआ।

(17) कलामणी, एम0 (2015) ने किशोरावस्था की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों की समस्याओं के सन्दर्भ में उनकी मूल्य संरचना का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के स्कूलों में सभी किशोरावस्था के बच्चों में राजनीतिक मूल्य और धार्मिक 5 मूल निम्न थे। किशोरियों के मुकाबले किशोरों में सामाजिक मूल्य और शक्ति मूल्य उच्च रहे। किशोरियों में सौन्दर्यात्मक मूल्य 6 स्वास्थ्य मूल्य तथा आर्थिक मूल्य समान पाये गये।

(18) गुप्ता, अल्का (2016) ने मूल्यों और अभिलाषा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया। 7 निष्कर्ष के रूप में पाया 8 गया कि अभिलाषा स्तर व धार्मिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सुखवादी मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा

[23]</td><td>1. वाक्य संरचना उपयुक्त नहीं है।
2. गया
3. एवं
4. नहीं
5. मूल्य
6. ,
7. उन्होंने
8. निरर्थक शब्द</td></tr>
<tr><td>
1 सम्बन्धित मूल्य के मध्य असार्थक अन्तर पाया गया 6 जबकि अभिलाषा स्तर और सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, 2 बौद्धिक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।

(19) मेहरा, नीरज (2016) ने विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि असहायता प्राप्त हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के 3 विद्यालय की शिक्षिकाओं के सामाजिक एवं धार्मिक 4 मूल्य में सार्थक अन्तर 5 पाया गया।

7

[24]</td><td>1. सन्बन्धी
2. ,
3. तथा
4. विद्यालयों
5. मूल्यों
6. है।
7. नोट- शोधकर्त्री द्वारा समीक्षात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं किये गए हैं।</td></tr>
</table>

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
3	**Objectives and Hypotheses**	**Max Score=12**		
3.1	Are the objectives stated clearly?	Some		1
3.2	Are the objectives measurable?	Some		1
3.3	Are the objectives comprehensive?	Some		1
3.4	Are the hypotheses measurable?	None		0
3.5	Are the hypotheses stated clearly?	None		0
3.6	Are the hypotheses logical?	None		0
	Sub-Total	**Actual Max=**		3

Comments:

लघु शोध में केवल तीसरे उद्देश्य के सन्दर्भ में कार्य किया गया है। तीसरे उद्देश्य को निम्नवत लिखा जाना चाहिए-

> माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के निम्न दस मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना-
>
> बौद्धिक, धार्मिक, सामाजिक, प्रजातान्त्रिक, पारिवारिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी, सौन्दर्यात्मक, आनन्द जीव, प्रतिष्ठात्मक एवं नियन्त्रण।

शेष उद्देश्यों के विषय में शोधकर्त्री ने क्या किया है? यह स्पष्ट नहीं है। शोधकर्त्री ने केवल तीसरे उद्देश के सन्दर्भ में ही परिकल्पना बनायी है। शेष उद्देश्यों के सन्दर्भ में कोई परिकल्पना नहीं बनायी है।

शोधकर्त्री द्वारा निर्मित परिकल्पनाएँ मापनीय हैं। शोधकर्त्री के द्वारा वर्णित परिकल्पनाएँ हमीरपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन से पूर्णतः सम्बन्धित हैं।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
4	**Research Design**	**Max Score=3**		
4.1	Does the choice of research design vis-à-vis the research objectives appropriate?	No		0
4.2	Are the reasons for the choice of the design given?	No		0
4.3	Has the methodology been explained in an understandable way to help replication of the work?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max=**		0

Comments:

शोध उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में शोध अभिकल्प उपयुक्त है। अनुसन्धानकर्त्री ने शोध अभिकल्प के चयन के कारण को स्पष्ट नहीं किया है कि उसने इस शोध अभिकल्प का चुनाव क्यों किया है? कार्य की पुनरावृत्ति में चयनित शोध अभिकल्प किस प्रकार सहायता करेगा; इसका वर्णन शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य में नहीं किया गया है।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
5	**Variables**	**Max Score=3**		
5.1	Are the variables rightly identified?	No		0
5.2	Are the variables operationally defined?	No		0
5.3	Are the variables measurable?	Yes		1
	Sub-Total	**Actual Max=**		1

Comments:

प्रस्तुत शोध-कार्य में शोधकर्त्री द्वारा शोध के चरों की पहचान उपयुक्त प्रकार से नहीं किया गया है; एवं सभी चरों को क्रियात्मक रूप से परिभाषित भी नहीं किया गया है। चरों के परिभाषीकरण में शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर, मूल्यों को तो परिभाषित किया है; किन्तु हमीरपुर जनपद और हिन्दी माध्यम के विद्यालयों पर प्रकाश नहीं डाला है। इसलिए हम कह सकते हैं कि सभी चरों को क्रियात्मक रूप से परिभाषित नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध-कार्य के चर मापनीय हैं।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
6	**Research Instruments**	**Max Score=5**		
6.1	Does the instrument selected measure the variables accurately?	Yes		1
6.2	Has the feasibility of the instrument been tested?	No		0
6.3	Is the language used in the research instruments comprehensible?	No		0
6.4	Are the instruments reliable?	Yes		1
6.5	Are the instruments valid?	Yes		1
	Sub-Total	**Actual Max=**		3

Comments:

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने डॉ० जी०पी० शैरी एवं डॉ० आर० पी० वर्मा द्वारा निर्मित 'व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली' का प्रयोग किया, जो चरों का उपयुक्त प्रकार से मापन करती है। शोधकर्त्री ने इस 'व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली' की व्यावहारिकता परीक्षण के विषय में कोई वर्णन प्रस्तुत नहीं किया है। यह प्रश्नावली किस वर्ष की है? तथा शोध

करते समय मापनीय चर के सम्बन्ध में कितने उपकरण उपलब्ध थे? और उनमें से डॉ० जी०पी० शैरी एवं डॉ० आर० पी० वर्मा की 'व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली' का ही चयन क्यों किया गया? इसका उल्लेख शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया है, जो कि किया जाना चाहिए था। शोधकर्त्री द्वारा प्रयोग में लाए गए उपकरण की भाषा की बोधगम्यता का पता नहीं चलता है। डॉ० जी०पी० शैरी एवं डॉ० आर० पी० वर्मा द्वारा निर्मित 'व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली' हमीरपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों के मापन हेतु विश्वसनीय तथा वैध है।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
7	**Sample**	**Max Score=3**		
7.1	Is the size of the sample appropriate?	No		0
7.2	Is the technique of choosing the sample appropriate?	No		0
7.3	Is the sample representative of the population?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max=**		0

Comments:

न्यादर्श का चुनाव करने के लिए शोधकर्त्री द्वारा विद्यालयों के नाम की पर्ची बनाकर विद्यालयों के चयन करने का उल्लेख किया गया है, जिसको सत्यापित नहीं किया जा सकता। अतः वर्तमान समय में लॉटरी विधि के अन्तर्गत 'ऑनलाइन रैण्डम नम्बर जनरेटर' का प्रयोग किया जाना चाहिए तथा उसका स्क्रीनशॉट लघु-शोध में लगाया जाना चाहिए।

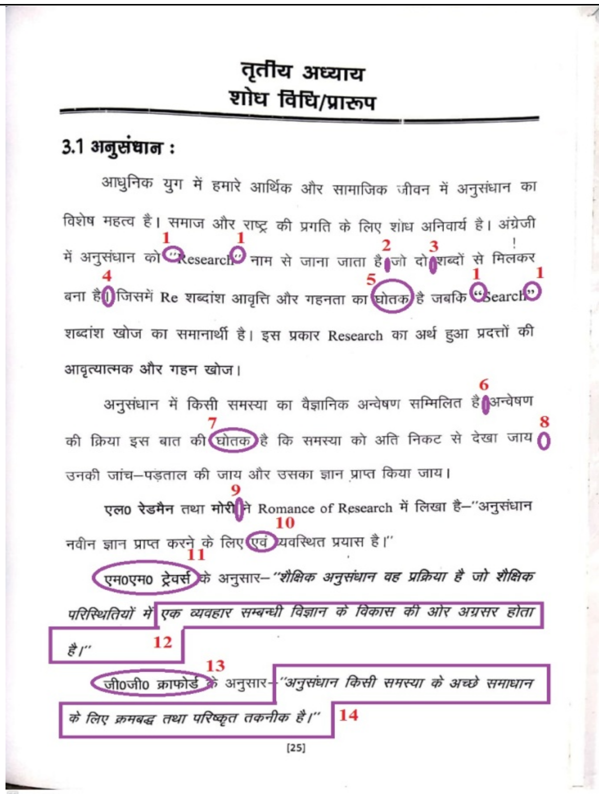
शोधकर्त्री द्वारा चयनित विद्यालयों से छात्र-छात्राओं के चयन के सम्बन्ध में पुनः लॉटरी विधि के प्रयोग द्वारा 10-10 विद्यालयों का चयन किया जाना दर्शाया गया है; किन्तु यह लॉटरी विधि द्वारा किस प्रकार सम्पन्न किया गया इसका लघु-शोध में कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

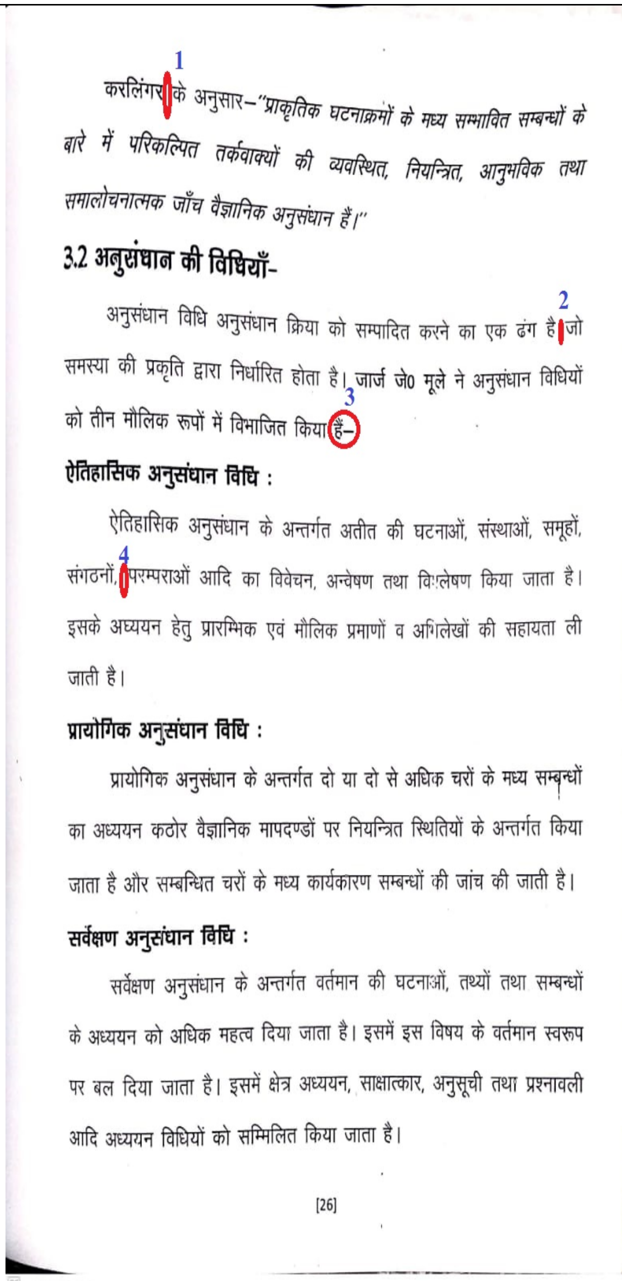
शोधकर्त्री द्वारा विद्यालयों के कक्षा 10 के उपस्थिति रजिस्टर से लॉटरी विधि द्वारा छात्र-छात्राओं के न्यादर्श में चयन किये जाने का उल्लेख है; किन्तु उपस्थिति रजिस्टर की छायाप्रति परिशिष्ट में नहीं लगायी गयी है, जिससे वास्तविक रूप में शोधकर्त्री द्वारा लॉटरी विधि का प्रयोग किया जाना सन्दिग्ध है। इस कार्य हेतु 'ऑनलाइन रैण्डम नम्बर जनरेटर' का प्रयोग किया जाना अधिक उपयुक्त होता।

वैसे सही प्रतिनिधिपूर्ण न्यादर्श हेतु विद्यालयों का चयन तो लॉटरी विधि से किया जाना उपयुक्त है, किन्तु चयनित विद्यालयों में कक्षा विशेष के, दिन विशेष में उपस्थित समस्त विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया जाना चाहिए। यह विधि गुच्छ न्यादर्शन कहलाती है। प्रस्तुत लघु शोध में सम्भाव्य न्यादर्शन के अन्तर्गत गुच्छ न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया जाना चाहिए तथा इसे लघु शोध में परिभाषित भी किया जाना चाहिए। शोधकर्त्री द्वारा चुने गये

इस न्यादर्श द्वारा जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व नहीं हो रहा है और चुना गया न्यादर्श चुनी गयी समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व नहीं करता है।

शोध अभिकल्प, अध्ययन के चर, शोध उपकरण, तथा न्यादर्श में प्रयुक्त हुए गलत शब्दों का सही रूप-

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
तृतीय अध्याय
शोध विधि/प्रारूप
3.1 अनुसंधान :
आधुनिक युग में हमारे आर्थिक और सामाजिक जीवन में अनुसंधान का विशेष महत्व है। समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए शोध अनिवार्य है। अंग्रेजी में अनुसंधान को "Research" नाम से जाना जाता है जो दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें Re शब्दांश आवृत्ति और गहनता का घोतक है जबकि "Search" शब्दांश खोज का समानार्थी है। इस प्रकार Research का अर्थ हुआ प्रदत्तों की आवृत्यात्मक और गहन खोज।
अनुसंधान में किसी समस्या का वैज्ञानिक अन्वेषण सम्मिलित है अन्वेषण की क्रिया इस बात की घोतक है कि समस्या को अति निकट से देखा जाय उनकी जांच–पड़ताल की जाय और उसका ज्ञान प्राप्त किया जाय।
एल0 रेडमैन तथा मोरी ने Romance of Research में लिखा है–"अनुसंधान नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए एवं व्यवस्थित प्रयास है।"
एम0एम0 ट्रेवर्स के अनुसार–"शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में एक व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान के विकास की ओर अग्रसर होता है।"
जी0जी0 क्राफोर्ड के अनुसार–"अनुसंधान किसी समस्या के अच्छे समाधान के लिए क्रमबद्ध तथा परिष्कृत तकनीक है।"
[25]
</td>
<td>1. Single Inverted comma में लिखा जाना चाहिए था।
2. ,
3. Re + Search
4. ,
5. द्योतक
6. ।
7. द्योतक
8. ,
9. (L.V. Redman and A.V.H. Mory)
10. एवं
11. डब्ल्यू० एम० ट्रेवर्स (W.M. Traverse)
12. व्यवहार विज्ञान का विकास करती है।
13. सी०सी० क्राफोर्ड (C. C. Crawford) के अनुसार,
14. "अनुसन्धान चिन्तन की एक ऐसी क्रमबद्ध तथा विशुद्ध प्रविधि है, जिसमें विशिष्ट यन्त्रों, उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया जाता है, ताकि एक समस्या का अधिक समुचित समाधान उपलब्ध हो सके।"</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

करलिंगर के अनुसार–''प्राकृतिक घटनाक्रमों के मध्य सम्भावित सम्बन्धों के बारे में परिकल्पित तर्कवाक्यों की व्यवस्थित, नियन्त्रित, आनुभविक तथा समालोचनात्मक जाँच वैज्ञानिक अनुसंधान हैं।''

3.2 अनुसंधान की विधियाँ–

अनुसंधान विधि अनुसंधान क्रिया को सम्पादित करने का एक ढंग है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित होता है। जार्ज जे0 मूले ने अनुसंधान विधियों को तीन मौलिक रूपों में विभाजित किया हैं–

ऐतिहासिक अनुसंधान विधि :

ऐतिहासिक अनुसंधान के अन्तर्गत अतीत की घटनाओं, संस्थाओं, समूहों, संगठनों, परम्पराओं आदि का विवेचन, अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जाता है। इसके अध्ययन हेतु प्रारम्भिक एवं मौलिक प्रमाणों व अभिलेखों की सहायता ली जाती है।

प्रायोगिक अनुसंधान विधि :

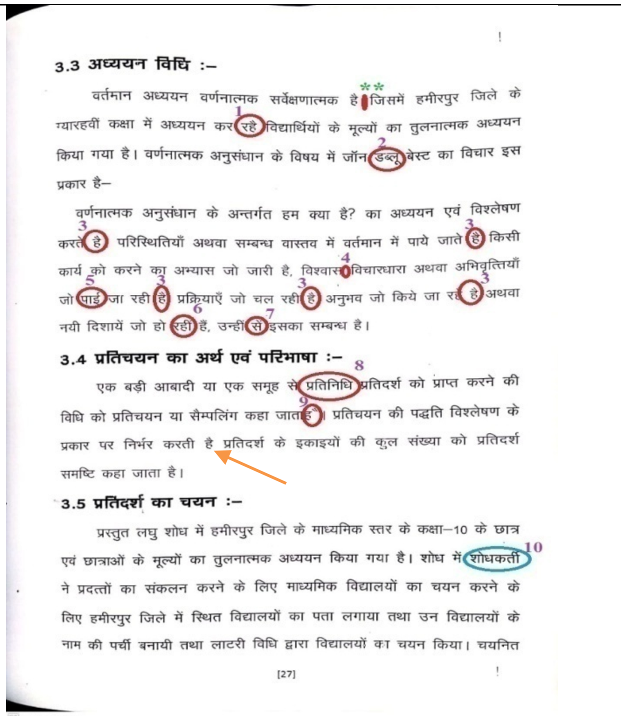
प्रायोगिक अनुसंधान के अन्तर्गत दो या दो से अधिक चरों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन कठोर वैज्ञानिक मापदण्डों पर नियन्त्रित स्थितियों के अन्तर्गत किया जाता है और सम्बन्धित चरों के मध्य कार्यकारण सम्बन्धों की जांच की जाती है।

सर्वेक्षण अनुसंधान विधि :

सर्वेक्षण अनुसंधान के अन्तर्गत वर्तमान की घटनाओं, तथ्यों तथा सम्बन्धों के अध्ययन को अधिक महत्व दिया जाता है। इसमें इस विषय के वर्तमान स्वरूप पर बल दिया जाता है। इसमें क्षेत्र अध्ययन, साक्षात्कार, अनुसूची तथा प्रश्नावली आदि अध्ययन विधियों को सम्मिलित किया जाता है।

[26]
</td><td>

1. विदेशी विद्वानों या शिक्षाविदों का नाम अंग्रेजी में भी लिखा जाना चाहिए था।
F.N. Kerlinger
2. ,
3. है-
4. तथा
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
	** , 1. रहे 2. डब्ल्यू 3. हैं 4. , 5. पायी 6. रही 7. से 8. प्रतिनिधित्वपूर्ण 9. है। 10. शोधकर्त्री ।

3.3 अध्ययन विधि :–

वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षणात्मक है जिसमें हमीरपुर जिले के ग्यारहवीं कक्षा में अध्ययन कर रहै विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। वर्णनात्मक अनुसंधान के विषय में जॉन डब्लू बेस्ट का विचार इस प्रकार है–

वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत हम क्या है? का अध्ययन एवं विश्लेषण करते है परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध वास्तव में वर्तमान में पाये जाते है किसी कार्य को करने का अभ्यास जो जारी है, विश्वास विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पाई जा रही है प्रक्रियाएँ जो चल रही है अनुभव जो किये जा रहे है अथवा नयी दिशायें जो हो रहीं हैं, उन्हीं सें इसका सम्बन्ध है।

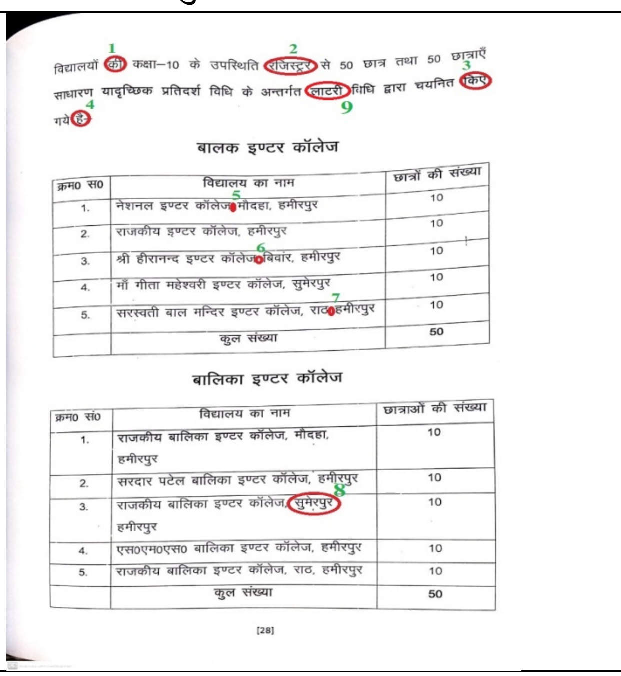
3.4 प्रतिचयन का अर्थ एवं परिभाषा :–

एक बड़ी आबादी या एक समूह से प्रतिनिधि प्रतिदर्श को प्राप्त करने की विधि को प्रतिचयन या सैम्पलिंग कहा जाता है। प्रतिचयन की पद्धति विश्लेषण के प्रकार पर निर्भर करती है प्रतिदर्श के इकाइयों की कुल संख्या को प्रतिदर्श समष्टि कहा जाता है।

3.5 प्रतिदर्श का चयन :–

प्रस्तुत लघु शोध में हमीरपुर जिले के माध्यमिक स्तर के कक्षा–10 के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध में शोधकर्ती ने प्रदत्तों का संकलन करने के लिए माध्यमिक विद्यालयों का चयन करने के लिए हमीरपुर जिले में स्थित विद्यालयों का पता लगाया तथा उन विद्यालयों के नाम की पर्ची बनायी तथा लाटरी विधि द्वारा विद्यालयों का चयन किया। चयनित

[27]

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
	1. के 2. रजिस्टर 3. किये 4. हैं- 5. , 6. , 7. , 8. , सुमेरपुर, 9. लॉटरी

विद्यालयों की कक्षा–10 के उपरिथति रजिस्ट्रर से 50 छात्र तथा 50 छात्राएँ साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि द्वारा चयनित किए गये है-

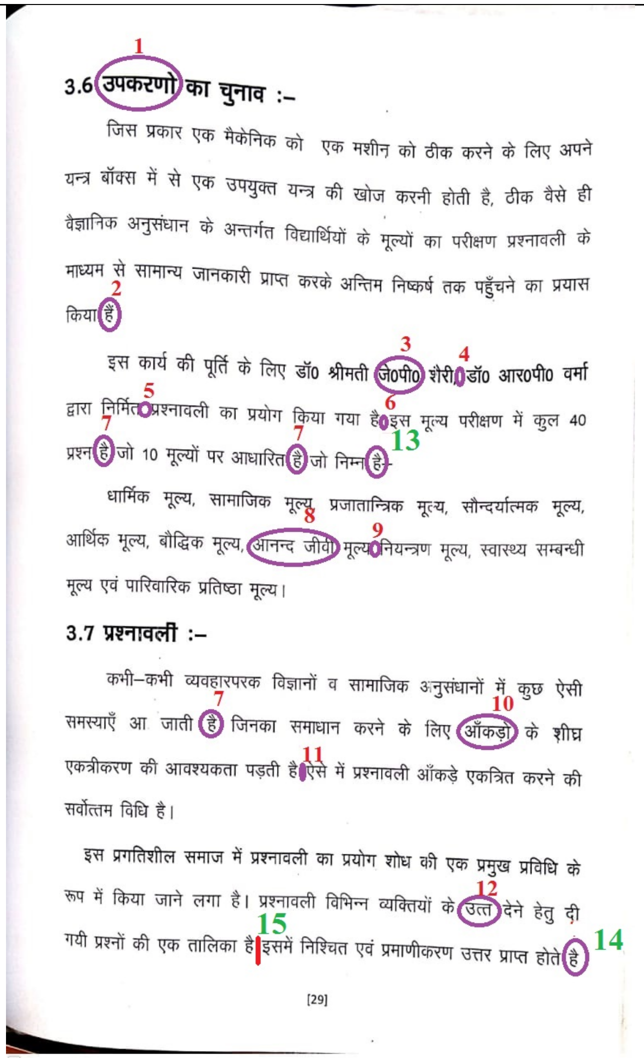
बालक इण्टर कॉलेज

क्रम0 स0	विद्यालय का नाम	छात्रों की संख्या
1.	नेशनल इण्टर कॉलेज मौदहा, हमीरपुर	10
2.	राजकीय इण्टर कॉलेज, हमीरपुर	10
3.	श्री हीरानन्द इण्टर कॉलेज बिवांर, हमीरपुर	10
4.	माँ गीता महेश्वरी इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर	10
5.	सरस्वती बाल मन्दिर इण्टर कॉलेज, राठ हमीरपुर	10
	कुल संख्या	50

बालिका इण्टर कॉलेज

क्रम0 सं0	विद्यालय का नाम	छात्राओं की संख्या
1.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मौदहा, हमीरपुर	10
2.	सरदार पटेल बालिका इण्टर कॉलेज, हमीरपुर	10
3.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर हमीरपुर	10
4.	एस0एम0एस0 बालिका इण्टर कॉलेज, हमीरपुर	10
5.	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, राठ, हमीरपुर	10
	कुल संख्या	50

[28]

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
	1. उपकरणों 2. है। 3. जी० 4. एवं 5. व्यक्तिगत मूल्य 6. । 7. हैं, 8. आनन्दजीवी 9. , 10. आँकड़ों 11. । 12. उत्तर 13. हैं- 14. हैं 15. ।

3.6 उपकरणो का चुनाव :–

जिस प्रकार एक मैकेनिक को एक मशीन को ठीक करने के लिए अपने यन्त्र बॉक्स में से एक उपयुक्त यन्त्र की खोज करनी होती है, ठीक वैसे ही वैज्ञानिक अनुसंधान के अन्तर्गत विद्यार्थियों के मूल्यों का परीक्षण प्रश्नावली के माध्यम से सामान्य जानकारी प्राप्त करके अन्तिम निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया हैं

इस कार्य की पूर्ति के लिए डॉ0 श्रीमती जे0पी0 शैरी डॉ0 आर0पी0 वर्मा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है इस मूल्य परीक्षण में कुल 40 प्रश्न है जो 10 मूल्यों पर आधारित है जो निम्न है-

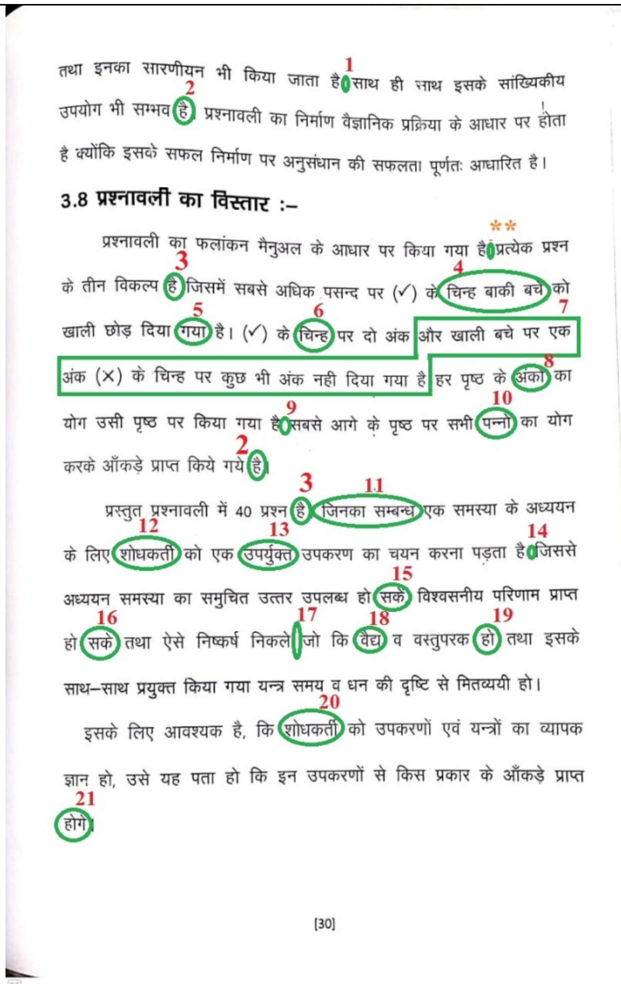
धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, बौद्धिक मूल्य, आनन्द जीवी मूल्य नियन्त्रण मूल्य, स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य।

3.7 प्रश्नावली :–

कभी–कभी व्यवहारपरक विज्ञानों व सामाजिक अनुसंधानों में कुछ ऐसी समस्याएँ आ जाती है जिनका समाधान करने के लिए आँकड़ो के शीघ्र एकत्रीकरण की आवश्यकता पड़ती है ऐसे में प्रश्नावली आँकड़े एकत्रित करने की सर्वोत्तम विधि है।

इस प्रगतिशील समाज में प्रश्नावली का प्रयोग शोध की एक प्रमुख प्रविधि के रूप में किया जाने लगा है। प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तियों के उत्त देने हेतु दी गयी प्रश्नों की एक तालिका है इसमें निश्चित एवं प्रमाणीकरण उत्तर प्राप्त होते है

[29]

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
तथा इनका सारणीयन भी किया जाता है। साथ ही साथ इसके सांख्यिकीय उपयोग भी सम्भव है। प्रश्नावली का निर्माण वैज्ञानिक प्रक्रिया के आधार पर होता है क्योंकि इसके सफल निर्माण पर अनुसंधान की सफलता पूर्णतः आधारित है।

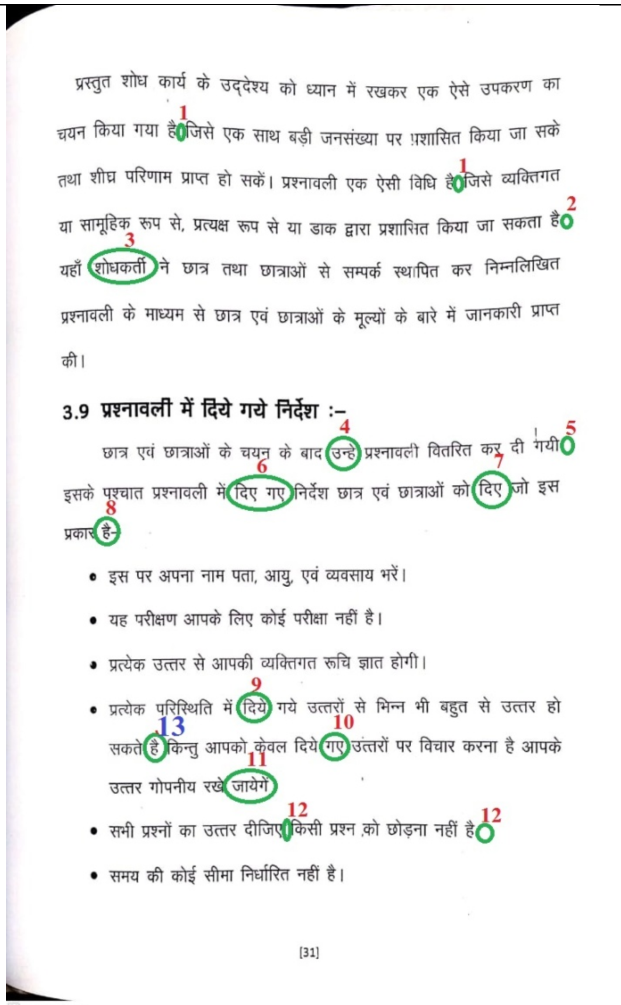
3.8 प्रश्नावली का विस्तार :–

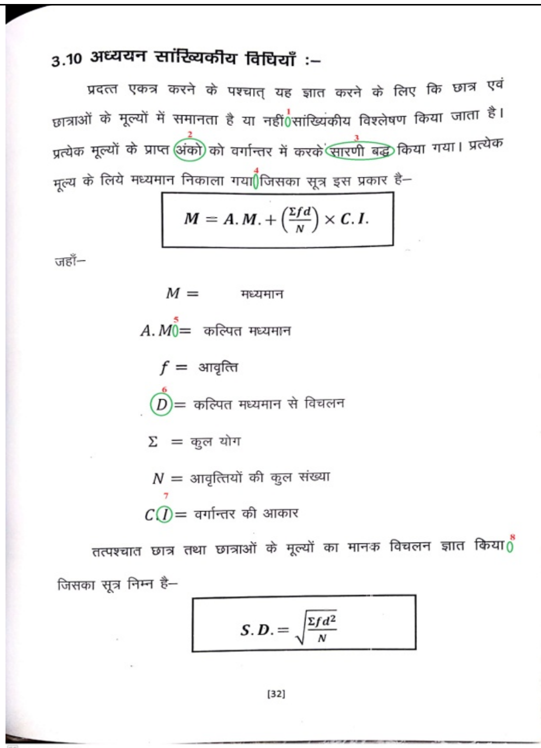
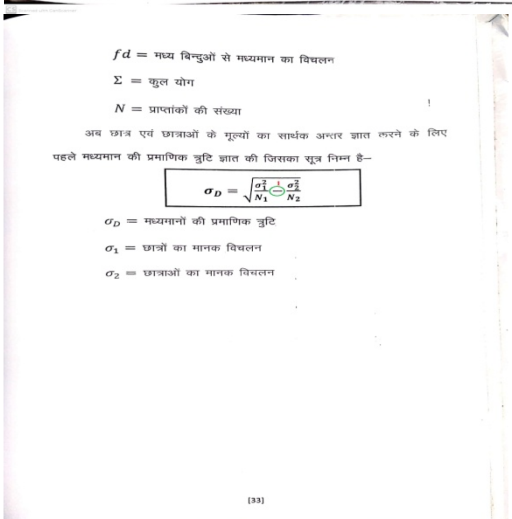
प्रश्नावली का फलांकन मैनुअल के आधार पर किया गया है। प्रत्येक प्रश्न के तीन विकल्प है जिसमें सबसे अधिक पसन्द पर (✓) के चिन्ह बाकी बचे को खाली छोड़ दिया गया है। (✓) के चिन्ह पर दो अंक और खाली बचे पर एक अंक (×) के चिन्ह पर कुछ भी अंक नही दिया गया है हर पृष्ठ के अंको का योग उसी पृष्ठ पर किया गया है। सबसे आगे के पृष्ठ पर सभी पन्नो का योग करके आँकड़े प्राप्त किये गये है।

प्रस्तुत प्रश्नावली में 40 प्रश्न है जिनका सम्बन्ध एक समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ती को एक उपर्युक्त उपकरण का चयन करना पड़ता है। जिससे अध्ययन समस्या का समुचित उत्तर उपलब्ध हो सके विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सके तथा ऐसे निष्कर्ष निकले। जो कि वैद्य व वस्तुपरक हो तथा इसके साथ–साथ प्रयुक्त किया गया यन्त्र समय व धन की दृष्टि से मितव्ययी हो।

इसके लिए आवश्यक है, कि शोधकर्ती को उपकरणों एवं यन्त्रों का व्यापक ज्ञान हो, उसे यह पता हो कि इन उपकरणों से किस प्रकार के आँकड़े प्राप्त होगे।

[30]</td>
<td>1. ,
2. हैं।
3. हैं,
4. चिह्न लगाते हैं तथा शेष विकल्पों
5. जाता
6. चिह्न
7. इस वाक्य संरचना का अर्थ स्पष्ट नहीं है। परिशिष्ट में प्रश्नावली मैनुअल की प्रति भी लगानी चाहिए।
8. अंकों
9. ।
10. पन्नों
11. निरर्थक शब्द
12. शोधकर्त्री
13. उपयुक्त
14. ,
15. सके
16. सकें
17. ,
18. वैध
19. हों
20. शोधकर्त्री
21. होंगे</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य को ध्यान में रखकर एक ऐसे उपकरण का चयन किया गया है जिसे एक साथ बड़ी जनसंख्या पर प्रशासित किया जा सके तथा शीघ्र परिणाम प्राप्त हो सकें। प्रश्नावली एक ऐसी विधि है जिसे व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से, प्रत्यक्ष रूप से या डाक द्वारा प्रशासित किया जा सकता है यहाँ शोधकर्ता ने छात्र तथा छात्राओं से सम्पर्क स्थापित कर निम्नलिखित प्रश्नावली के माध्यम से छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की। **3.9 प्रश्नावली में दिये गये निर्देश :–** छात्र एवं छात्राओं के चयन के बाद उन्हे प्रश्नावली वितरित कर दी गयी इसके पश्चात प्रश्नावली में दिए गए निर्देश छात्र एवं छात्राओं को दिए जो इस प्रकार है- • इस पर अपना नाम पता, आयु, एवं व्यवसाय भरें। • यह परीक्षण आपके लिए कोई परीक्षा नहीं है। • प्रत्येक उत्तर से आपकी व्यक्तिगत रूचि ज्ञात होगी। • प्रत्येक परिस्थिति में दिये गये उत्तरों से भिन्न भी बहुत से उत्तर हो सकते है किन्तु आपको केवल दिये गए उत्तरों पर विचार करना है आपके उत्तर गोपनीय रखे जायेगें • सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए किसी प्रश्न को छोड़ना नहीं है • समय की कोई सीमा निर्धारित नहीं है। [31]	1. , 2. । 3. शोधकर्त्री 4. उन्हें 5. । 6. दिये गये 7. दिये, 8. हैं- 9. दिये 10. गये 11. जायेंगे 12. । 13. हैं,

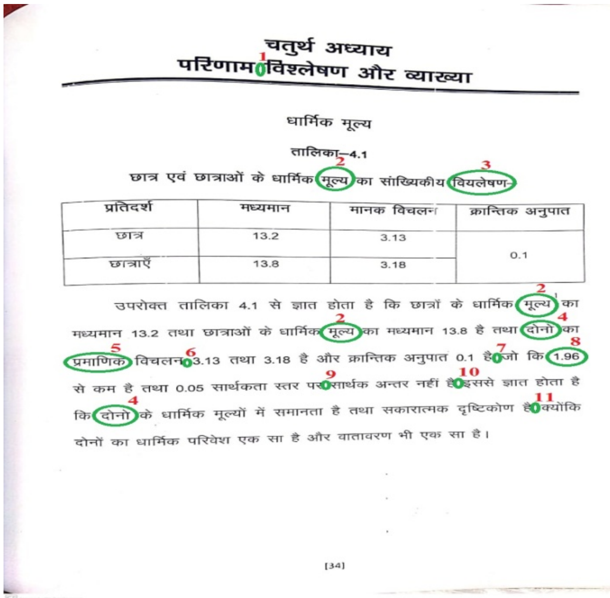
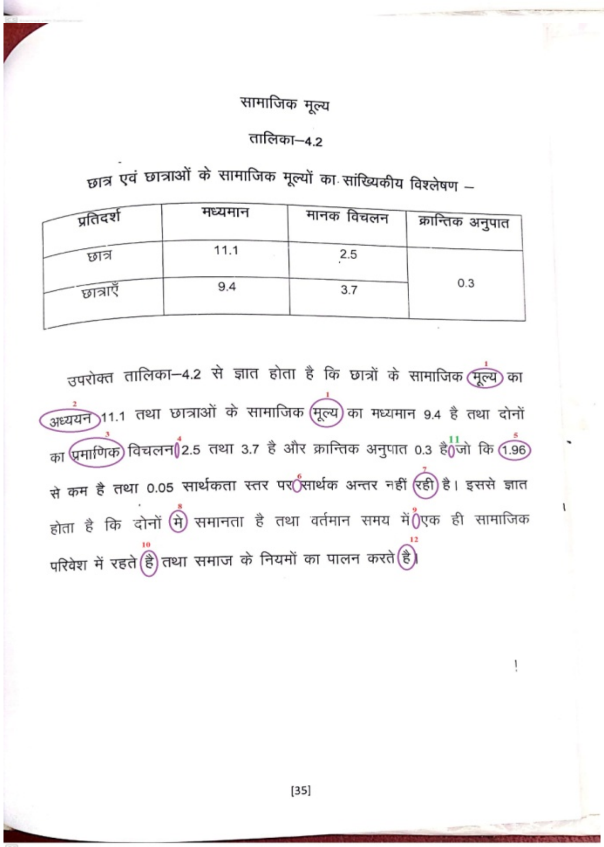
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
3.10 अध्ययन सांख्यिकीय विधियाँ :–
प्रदत्त एकत्र करने के पश्चात् यह ज्ञात करने के लिए कि छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में समानता है या नहीं[1] सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है। प्रत्येक मूल्यों के प्राप्त [2]अंको को वर्गान्तर में करके [3]सारणी बद्ध किया गया। प्रत्येक मूल्य के लिये मध्यमान निकाला गया[4] जिसका सूत्र इस प्रकार है–
$M = A.M. + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.I.$
जहाँ–
$M =$ मध्यमान
$A.M$[5]$=$ कल्पित मध्यमान
$f =$ आवृत्ति
[6]$D =$ कल्पित मध्यमान से विचलन
$\Sigma =$ कुल योग
$N =$ आवृत्तियों की कुल संख्या
$C.$[7]$I =$ वर्गान्तर की आकार
तत्पश्चात छात्र तथा छात्राओं के मूल्यों का मानक विचलन ज्ञात किया[8]
जिसका सूत्र निम्न है–
$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}}$
[32]</td><td>1. ,
2. अंकों
3. सारणीबद्ध
4. ,
5. M.
6. d
7. I.
8. ,</td></tr>
<tr><td>
$fd =$ मध्य बिन्दुओं से मध्यमान का विचलन
$\Sigma =$ कुल योग
$N =$ प्राप्तांकों की संख्या
अब छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए पहले मध्यमान की प्रमाणिक त्रुटि ज्ञात की जिसका सूत्र निम्न है–
$\sigma_D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} - \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$ [1]
$\sigma_D =$ मध्यमानों की प्रमाणिक त्रुटि
$\sigma_1 =$ छात्रों का मानक विचलन
$\sigma_2 =$ छात्राओं का मानक विचलन
[33]</td><td>1. +</td></tr>
</table>

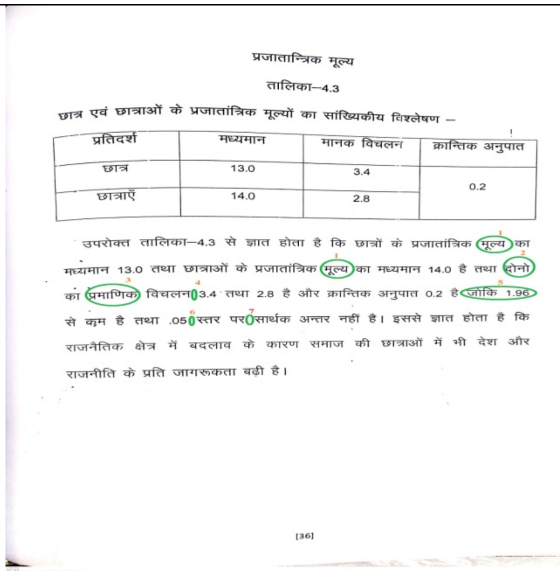
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
8	**Data Collection and Analysis**	**Max Score =4**		
8.1	Has the researcher collected the primary data personally?	Yes		1
8.2	Are the secondary data sources authentic and reliable?	No		0
8.3	Are the statistical tests used appropriately?	No		0
8.4	Is the quantitative/qualitative data analysis effective?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		2

Comments:

प्रदत्तों के संकलन के विषय में दृढ़तापूर्वक कुछ कहा नहीं जा सकता है कि शोधकर्त्री ने प्रदत्तों का संकलन स्वयं किया है कि नहीं; क्योंकि प्रदत्तों के संकलन का विवरण शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत लघु-शोध में स्पष्ट नहीं किया गया है। शोधकर्त्री द्वारा इस बात का भी उल्लेख नहीं किया गया है कि हमीरपुर जनपद में कुल कितने इण्टर कॉलेज हैं तथा चुने गये इण्टर कॉलेजों की कक्षा विशेष में कुल पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या कितनी है? प्रदत्तों के संकलन की विश्वसनीयता हेतु शोधकर्त्री को प्रदत्त संकलन से सम्बन्धित चित्रावली को परिशिष्ट में लगाया जाना चाहिए था, जिससे कि यह स्पष्ट हो जाता कि शोधकर्त्री ने प्रदत्तों का संकलन स्वयं किया है। द्वितीयक समंकों के विषय में शोधकर्त्री ने कोई उल्लेख नहीं किया है।

सांख्यिकीय परीक्षण के लिए शोधकर्त्री ने प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु 'क्रान्तिक अनुपात' का प्रयोग किया है। शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण उपयुक्त प्रकार से प्रस्तुत नहीं किया गया है। शोधकर्त्री द्वारा किये गये प्रदत्तों के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण प्रभावी नहीं हैं।

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

चतुर्थ अध्याय
परिणाम विश्लेषण और व्याख्या
धार्मिक मूल्य
तालिका–4.1
छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक मूल्य का सांख्यिकीय वियलेषण-
<table>
<tr><th>प्रतिदर्श</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>क्रान्तिक अनुपात</th></tr>
<tr><td>छात्र</td><td>13.2</td><td>3.13</td><td rowspan="2">0.1</td></tr>
<tr><td>छात्राएँ</td><td>13.8</td><td>3.18</td></tr>
</table>
उपरोक्त तालिका 4.1 से ज्ञात होता है कि छात्रों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान 13.2 तथा छात्राओं के धार्मिक मूल्य का मध्यमान 13.8 है तथा दोनो का प्रमाणिक विचलन 3.13 तथा 3.18 है और क्रान्तिक अनुपात 0.1 है जो कि 1.96 से कम है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है इससे ज्ञात होता है कि दोनो के धार्मिक मूल्यों में समानता है तथा सकारात्मक दृष्टिकोण है क्योंकि दोनों का धार्मिक परिवेश एक सा है और वातावरण भी एक सा है।
[34]
</td><td>
1. ,
2. मूल्यों
3. विश्लेषण
4. दोनों
5. प्रामाणिक
6. क्रमशः
7. ,
8. तालिका मान 1.98
9. कोई
10. ।
11. ,
</td></tr>
<tr><td>

सामाजिक मूल्य
तालिका–4.2
छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण –
<table>
<tr><th>प्रतिदर्श</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>क्रान्तिक अनुपात</th></tr>
<tr><td>छात्र</td><td>11.1</td><td>2.5</td><td rowspan="2">0.3</td></tr>
<tr><td>छात्राएँ</td><td>9.4</td><td>3.7</td></tr>
</table>
उपरोक्त तालिका–4.2 से ज्ञात होता है कि छात्रों के सामाजिक मूल्य का अध्ययन 11.1 तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्य का मध्यमान 9.4 है तथा दोनों का प्रमाणिक विचलन 2.5 तथा 3.7 है और क्रान्तिक अनुपात 0.3 है जो कि 1.96 से कम है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं रही है। इससे ज्ञात होता है कि दोनों मे समानता है तथा वर्तमान समय में एक ही सामाजिक परिवेश में रहते है तथा समाज के नियमों का पालन करते है।
[35]
</td><td>
1. मूल्यों
2. मध्यमान
3. प्रामाणिक
4. क्रमशः
5. तालिका मान 1.98
6. कोई
7. निरर्थक शब्द
8. में
9. दोनों
10. ,
11. हैं
12. हैं।
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


प्रजातान्त्रिक मूल्य

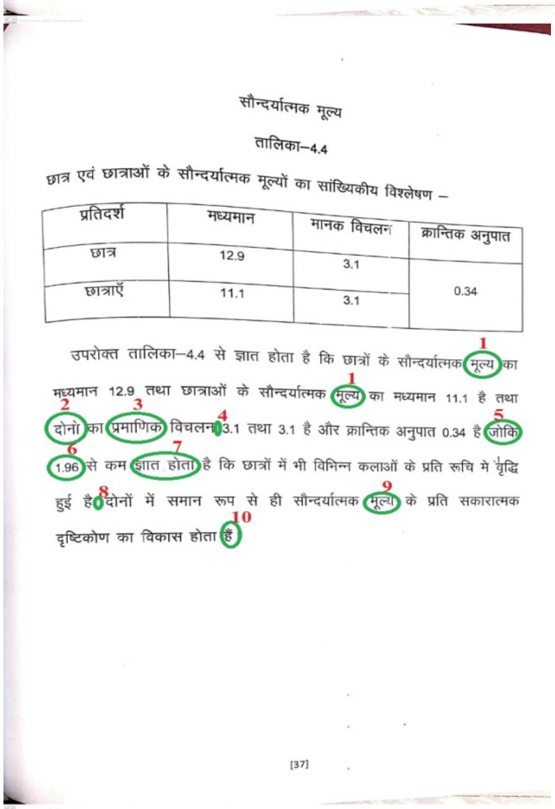
तालिका–4.3

छात्र एवं छात्राओं के प्रजातांत्रिक मूल्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण –

<table>
<tr><th>प्रतिदर्श</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>क्रान्तिक अनुपात</th></tr>
<tr><td>छात्र</td><td>13.0</td><td>3.4</td><td rowspan="2">0.2</td></tr>
<tr><td>छात्राएँ</td><td>14.0</td><td>2.8</td></tr>
</table>

उपरोक्त तालिका–4.3 से ज्ञात होता है कि छात्रों के प्रजातांत्रिक मूल्य का मध्यमान 13.0 तथा छात्राओं के प्रजातांत्रिक मूल्य का मध्यमान 14.0 है तथा दोनो का प्रमाणिक विचलन 3.4 तथा 2.8 है और क्रान्तिक अनुपात 0.2 है जोकि 1.96 से कम है तथा .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि राजनैतिक क्षेत्र में बदलाव के कारण समाज की छात्राओं में भी देश और राजनीति के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

[36]



सौन्दर्यात्मक मूल्य

तालिका–4.4

छात्र एवं छात्राओं के सौन्दर्यात्मक मूल्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण –

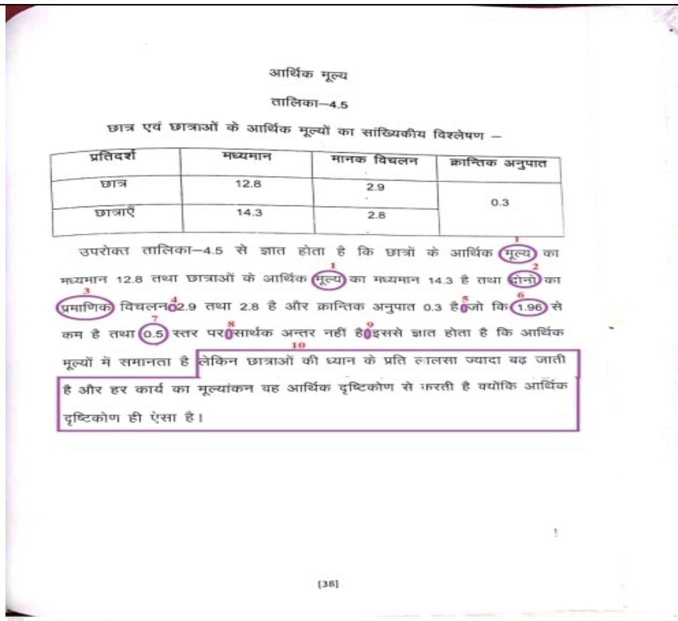
<table>
<tr><th>प्रतिदर्श</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>क्रान्तिक अनुपात</th></tr>
<tr><td>छात्र</td><td>12.9</td><td>3.1</td><td rowspan="2">0.34</td></tr>
<tr><td>छात्राएँ</td><td>11.1</td><td>3.1</td></tr>
</table>

उपरोक्त तालिका–4.4 से ज्ञात होता है कि छात्रों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान 12.9 तथा छात्राओं के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान 11.1 है तथा दोनो का प्रमाणिक विचलन 3.1 तथा 3.1 है और क्रान्तिक अनुपात 0.34 है जोकि 1.96 से कम ज्ञात होता है कि छात्रों में भी विभिन्न कलाओं के प्रति रूचि मे वृद्धि हुई है दोनों में समान रूप से ही सौन्दर्यात्मक मूल्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता हैं

[37]
</td><td>
1. मूल्यों
2. दोनों
3. प्रामाणिक
4. क्रमशः
5. , जो कि तालिका मान 1.98
6. सार्थकता
7. कोई

1. मूल्यों
2. दोनों
3. प्रामाणिक
4. क्रमशः
5. , जो कि
6. तालिका मान 1.98
7. तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है, इससे ज्ञात होता
8. तथा
9. मूल्यों
10. है।
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



आर्थिक मूल्य

तालिका–4.5

छात्र एवं छात्राओं के आर्थिक मूल्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण –

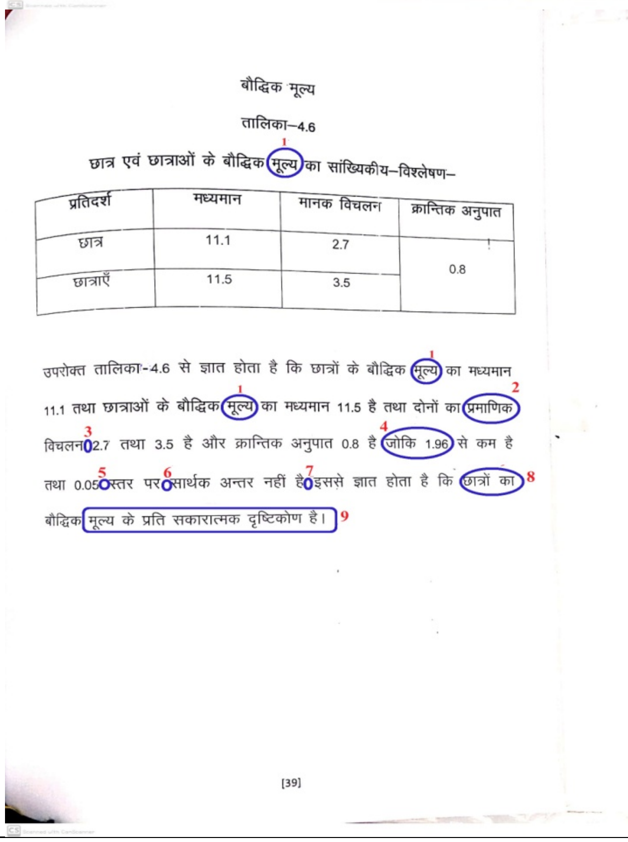
प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	12.8	2.9	0.3
छात्राएँ	14.3	2.8	

उपरोक्त तालिका–4.5 से ज्ञात होता है कि छात्रों के आर्थिक मूल्य का मध्यमान 12.8 तथा छात्राओं के आर्थिक मूल्य का मध्यमान 14.3 है तथा दोनो का प्रमाणिक विचलन 2.9 तथा 2.8 है और क्रान्तिक अनुपात 0.3 है जो कि 1.96 से कम है तथा 0.5 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है इससे ज्ञात होता है कि आर्थिक मूल्यों में समानता है लेकिन छात्राओं की ध्यान के प्रति लालसा ज्यादा बढ़ जाती है और हर कार्य का मूल्यांकन वह आर्थिक दृष्टिकोण से करती है क्योंकि आर्थिक दृष्टिकोण ही ऐसा है।

[38]

1. मूल्यों
2. दोनों
3. प्रामाणिक
4. क्रमशः
5. ,
6. तालिका मान 1.98
7. 0.05 सार्थकता
8. कोई
9. ,
10. ।

नोट- इन शब्दों का कोई अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है।



बौद्धिक मूल्य

तालिका–4.6

छात्र एवं छात्राओं के बौद्धिक मूल्य का सांख्यिकीय–विश्लेषण–

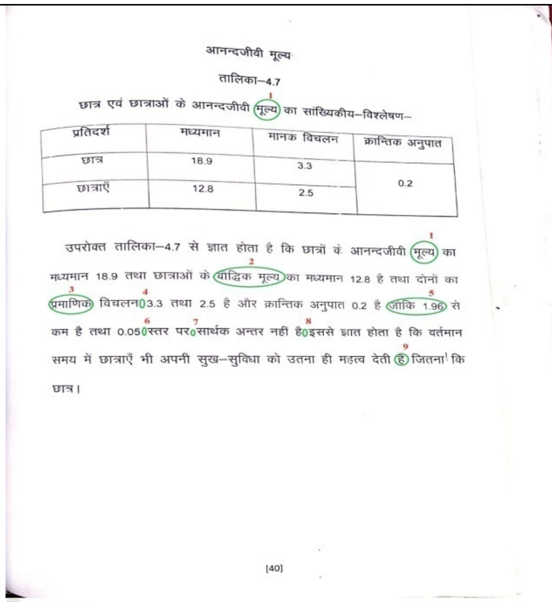
प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	11.1	2.7	0.8
छात्राएँ	11.5	3.5	

उपरोक्त तालिका-4.6 से ज्ञात होता है कि छात्रों के बौद्धिक मूल्य का मध्यमान 11.1 तथा छात्राओं के बौद्धिक मूल्य का मध्यमान 11.5 है तथा दोनों का प्रमाणिक विचलन 2.7 तथा 3.5 है और क्रान्तिक अनुपात 0.8 है जोकि 1.96 से कम है तथा 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है इससे ज्ञात होता है कि छात्रों का बौद्धिक मूल्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।

[39]

1. मूल्यों
2. प्रामाणिक
3. क्रमशः
4. , जो कि तालिका मान 1.98
5. सार्थकता
6. कोई
7. ;
8. छात्र एवं छात्राओं के
9. मूल्यों में समानता है।

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



आनन्दजीवी मूल्य

तालिका–4.7

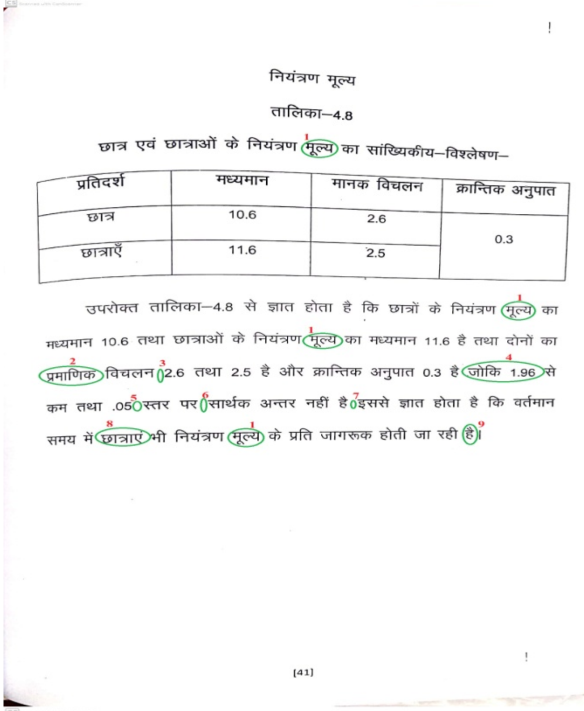
छात्र एवं छात्राओं के आनन्दजीवी मूल्य[1] का सांख्यिकीय–विश्लेषण–

प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	18.9	3.3	0.2
छात्राएँ	12.8	2.5	

उपरोक्त तालिका–4.7 से ज्ञात होता है कि छात्रों के आनन्दजीवी मूल्य[1] का मध्यमान 18.9 तथा छात्राओं के बौद्धिक मूल्य[2] का मध्यमान 12.8 है तथा दोनों का प्रमाणिक[3] विचलन[4] 3.3 तथा 2.5 है और क्रान्तिक अनुपात 0.2 है जोकि 1.96[5] से कम है तथा 0.05[6] स्तर पर[7] सार्थक अन्तर नहीं है[8] इससे ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में छात्राएँ भी अपनी सुख–सुविधा को उतना ही महत्व देती है[9] जितना कि छात्र।

[40]

1. मूल्यों
2. आनन्दजीवी
3. प्रामाणिक
4. क्रमशः
5. , जो कि तालिका मान 1.98
6. सार्थकता
7. कोई
8. ,
9. हैं,



नियंत्रण मूल्य

तालिका–4.8

छात्र एवं छात्राओं के नियंत्रण मूल्य[1] का सांख्यिकीय–विश्लेषण–

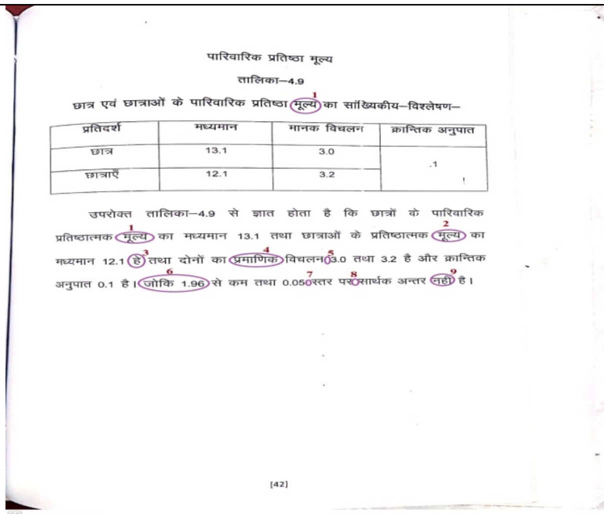
प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	10.6	2.6	0.3
छात्राएँ	11.6	2.5	

उपरोक्त तालिका–4.8 से ज्ञात होता है कि छात्रों के नियंत्रण मूल्य[1] का मध्यमान 10.6 तथा छात्राओं के नियंत्रण मूल्य[1] का मध्यमान 11.6 है तथा दोनों का प्रमाणिक[2] विचलन[3] 2.6 तथा 2.5 है और क्रान्तिक अनुपात 0.3 है जोकि 1.96[4] से कम तथा .05[5] स्तर पर[6] सार्थक अन्तर नहीं है[7] इससे ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में छात्राएं[8] भी नियंत्रण मूल्य[1] के प्रति जागरूक होती जा रही है[9]।

[41]

1. मूल्यों
2. प्रामाणिक
3. क्रमशः
4. , जो कि तालिका मान 1.98
5. सार्थकता
6. कोई
7. ,
8. छात्राएँ
9. हैं

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य

तालिका–4.9

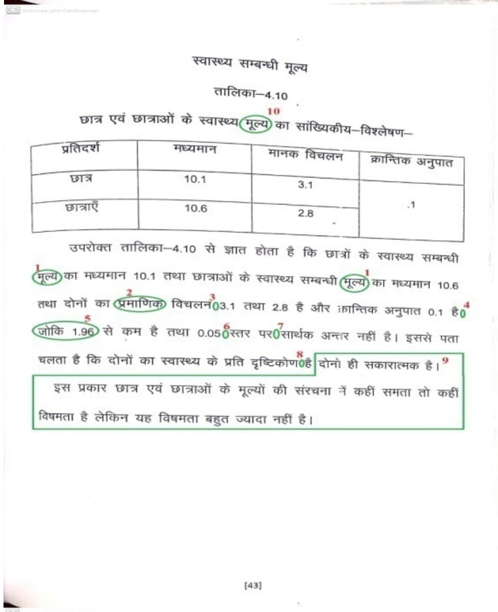
छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य[1] का सांख्यिकीय–विश्लेषण–

प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	13.1	3.0	.1
छात्राएँ	12.1	3.2	

उपरोक्त तालिका–4.9 से ज्ञात होता है कि छात्रों के पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्य[1] का मध्यमान 13.1 तथा छात्राओं के प्रतिष्ठात्मक मूल्य[2] का मध्यमान 12.1 हे[3] तथा दोनों का प्रमाणिक[4] विचलन[5] 3.0 तथा 3.2 है और क्रान्तिक अनुपात 0.1 है। जोकि 1.96[6] से कम तथा 0.05[7] स्तर पर[8] सार्थक अन्तर नही[9] है।

[42]

1. मूल्यों
2. मूल्यों
3. है
4. प्रामाणिक
5. क्रमशः
6. , जो कि तालिका मान 1.98
7. सार्थकता
8. कोई
9. नहीं



स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य

तालिका–4.10

छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य मूल्य[10] का सांख्यिकीय–विश्लेषण–

प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	10.1	3.1	.1
छात्राएँ	10.6	2.8	

उपरोक्त तालिका–4.10 से ज्ञात होता है कि छात्रों के स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य[1] का मध्यमान 10.1 तथा छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य[1] का मध्यमान 10.6 तथा दोनों का प्रमाणिक[2] विचलन[3] 3.1 तथा 2.8 है और क्रान्तिक अनुपात 0.1 है[4] जोकि 1.96[5] से कम है तथा 0.05[6] स्तर पर[7] सार्थक अन्तर नहीं है। इससे पता चलता है कि दोनों का स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण[8] है दोनो ही सकारात्मक है।[9]

इस प्रकार छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों की संरचना नें कहीं समता तो कहीं विषमता है लेकिन यह विषमता बहुत ज्यादा नहीं है।

[43]

1. मूल्यों
2. प्रामाणिक
3. क्रमशः
4. ,
5. जो कि तालिका मान 1.98
6. सार्थकता
7. कोई
8. अच्छा है।
9. निरर्थक वाक्य
10. सम्बन्धी मूल्यों

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
9	**Findings and Implications**	**Max Score = 5**		
9.1	Are the findings logically presented?	No		0
9.2	Do the tables/graphs have appropriate titles?	No		0
9.3	Are the tables/graphs explained in the text?	No		0
9.4	Are the findings related to the discussion in the introductory chapter?	No		0
9.5	Are the hypotheses/objectives of the research addressed adequately?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		0

Comments:

शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण का परिणाम तो प्रस्तुत किया गया है, किन्तु परिणाम तार्किक रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया है; तथा तालिकाओं की व्याख्या भी ठीक ढंग से प्रस्तुत नहीं की गयी है।

शोधकर्त्री द्वारा वर्णित प्रदत्तों के विश्लेषण का परिणाम प्रारम्भिक अध्याय से तो सम्बन्धित है; किन्तु उसकी व्याख्या सही ढंग से न होने के कारण से परिणामों का तारतम्य प्रारम्भिक अध्याय से नहीं बैठ रहा है। शोधकर्त्री द्वारा जब परिणामों तथा तालिकाओं का विश्लेषण सही ढंग से प्रस्तुत नहीं किया गया है, तो परिणामों में शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को उपयुक्त प्रकार से सम्बोधित किए जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

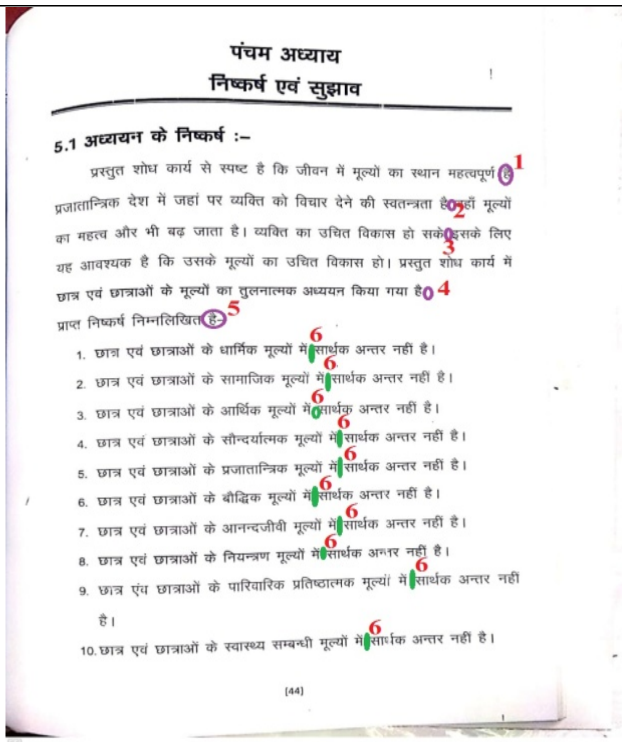
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
10	**Summary and Conclusions**	**Max Score = 3**		
10.1	Is the summary presented comprehensive?	No		0
10.2	Are the conclusions supported by data?	Yes		1
10.3	Are there recommendations for future research?	Yes		1
	Sub-Total	**Actual Max =**		2

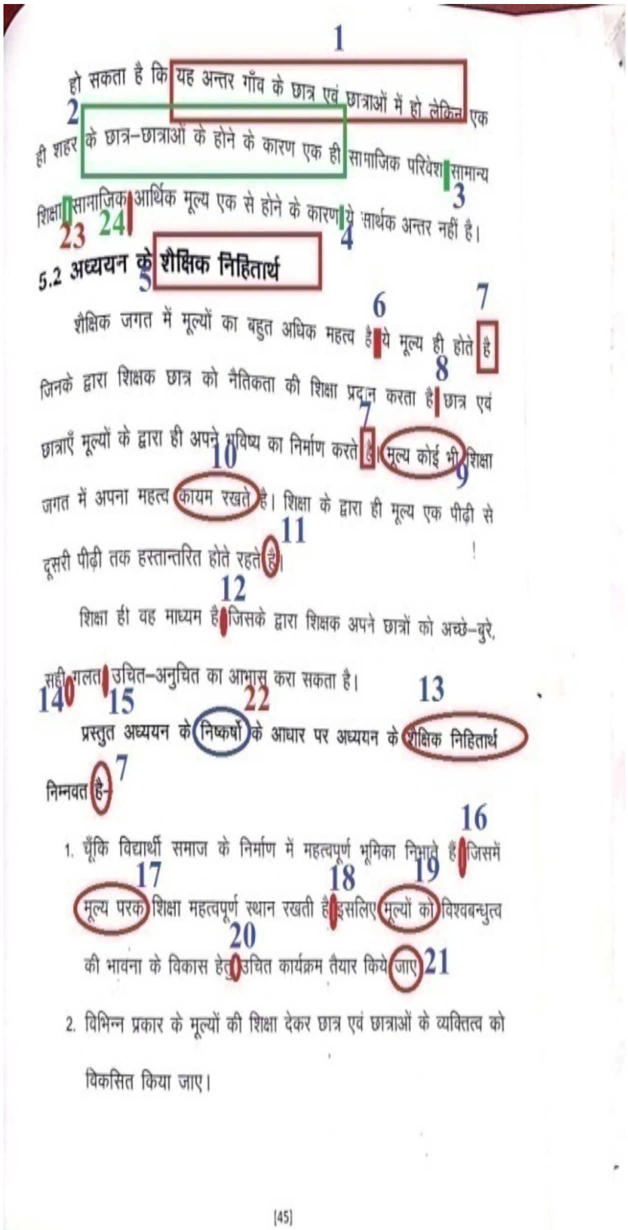
Comments:

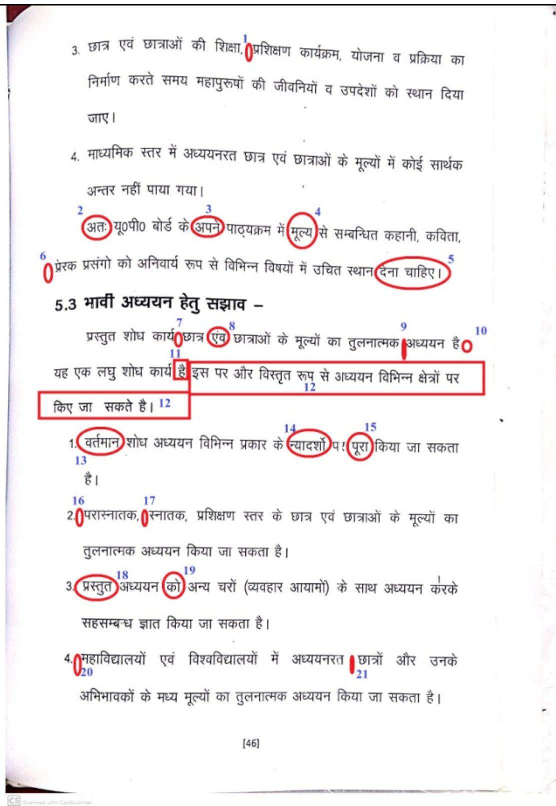
सारांश किसी भी पाठ का वह भाग होता है, जिसे पढ़कर सम्पूर्ण पाठ के बारे में समझा जा सकता है, किन्तु शोधकर्त्री ने इस लघु-शोध कार्य का सारांश प्रस्तुत नहीं किया है।

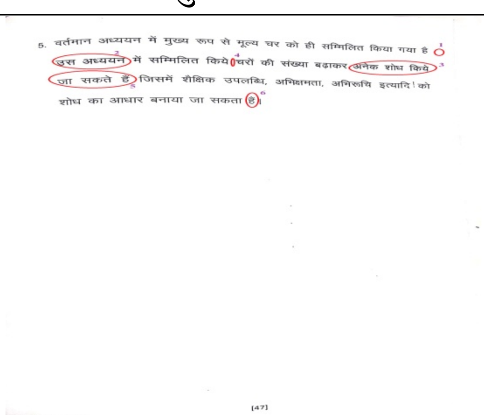
किसी भी लघु-शोध कार्य का निष्कर्ष उसके प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण पर निर्भर करता है। शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण का वर्णन सही ढंग से प्रस्तुत नहीं किया गया है; जिसके कारण शोधकर्त्री द्वारा वर्णित निष्कर्ष गलत व अविश्वसनीय हो जाते हैं। शोधकर्त्री द्वारा भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

निष्कर्ष, शैक्षिक महत्व, भावी अध्ययन हेतु सुझाव एवं सारांश में प्रयुक्त हुए गलत शब्दों का सही रूप-

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
पंचम अध्याय
निष्कर्ष एवं सुझाव
5.1 अध्ययन के निष्कर्ष :–
प्रस्तुत शोध कार्य से स्पष्ट है कि जीवन में मूल्यों का स्थान महत्वपूर्ण है प्रजातान्त्रिक देश में जहां पर व्यक्ति को विचार देने की स्वतन्त्रता है [illegible]हाँ मूल्यों का महत्व और भी बढ़ जाता है। व्यक्ति का उचित विकास हो सके इसके लिए यह आवश्यक है कि उसके मूल्यों का उचित विकास हो। प्रस्तुत शोध कार्य में छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है
प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है-
1. छात्र एवं छात्राओं के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. छात्र एवं छात्राओं के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. छात्र एवं छात्राओं के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. छात्र एवं छात्राओं के प्रजातान्त्रिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
6. छात्र एवं छात्राओं के बौद्धिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
7. छात्र एवं छात्राओं के आनन्दजीवी मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
8. छात्र एवं छात्राओं के नियन्त्रण मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
9. छात्र एंव छात्राओं के पारिवारिक प्रतिष्ठात्मक मूल्यां में सार्थक अन्तर नहीं है।
10. छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
[44]
</td><td>1. ।
2. ,
3. ,
4. ।
5. हैं-
6. कोई</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 हो सकता है कि यह अन्तर गाँव के छात्र एवं छात्राओं में हो लेकिन एक ही शहर के छात्र–छात्राओं के होने के कारण एक ही सामाजिक परिवेश सामान्य शिक्षा सामाजिक आर्थिक मूल्य एक से होने के कारण ये सार्थक अन्तर नहीं है। 5.2 अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ शैक्षिक जगत में मूल्यों का बहुत अधिक महत्व है ये मूल्य ही होते है जिनके द्वारा शिक्षक छात्र को नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है छात्र एवं छात्राएँ मूल्यों के द्वारा ही अपने भविष्य का निर्माण करते है मूल्य कोई भी शिक्षा जगत में अपना महत्व कायम रखते है। शिक्षा के द्वारा ही मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित होते रहते है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा शिक्षक अपने छात्रों को अच्छे–बुरे, सही गलत उचित–अनुचित का आभास करा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्नवत है- 1. चूँकि विद्यार्थी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है जिसमें मूल्य परक शिक्षा महत्वपूर्ण स्थान रखती है इसलिए मूल्यों को विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास हेतु उचित कार्यक्रम तैयार किये जाए 2. विभिन्न प्रकार के मूल्यों की शिक्षा देकर छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व को विकसित किया जाए। [45]	1. इन शब्दों का कोई अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है। 2. एवं 3. , 4. छात्र एवं छात्राओं के मूल्य समान हैं तथा कोई 5. सुझाव 6. , 7. हैं 8. । 9. मूल्यों का 10. होता 11. हैं। 12. , 13. सुझाव 14. - 15. तथा 16. , 17. मूल्यपरक 18. , 19. निरर्थक शब्द 20. मूल्यों के 21. जायें 22. निष्कर्षों 23. तथा 24. -

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 3. छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा, प्रशिक्षण कार्यक्रम, योजना व प्रक्रिया का निर्माण करते समय महापुरूषों की जीवनियों व उपदेशों को स्थान दिया जाए। 4. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यू0पी0 बोर्ड के अपने पाठ्यक्रम में मूल्य से सम्बन्धित कहानी, कविता, प्रेरक प्रसंगो को अनिवार्य रूप से विभिन्न विषयों में उचित स्थान देना चाहिए। 5.3 भावी अध्ययन हेतु सझाव – प्रस्तुत शोध कार्य छात्र एंव छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन है यह एक लघु शोध कार्य है इस पर और विस्तृत रूप से अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों पर किए जा सकते है। 1. वर्तमान शोध अध्ययन विभिन्न प्रकार के न्यादर्शो प? पूरा किया जा सकता है। 2. परास्नातक, स्नातक, प्रशिक्षण स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। 3. प्रस्तुत अध्ययन को अन्य चरों (व्यवहार आयामों) के साथ अध्ययन करके सहसम्बन्ध ज्ञात किया जा सकता है। 4. महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों और उनके अभिभावकों के मध्य मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। [46]	1. - 2. निरर्थक शब्द 3. निरर्थक शब्द 4. मूल्यों 5. - 6. दिया जाय 7. में 8. एवं 9. किया गया 10. । 11. भविष्य में इससे सम्बन्धित शोध कार्य निम्नवत किये जा सकते हैं। 12. भावी 13. न्यादर्शों 14. निरर्थक शब्द 15. भावी शोध में 16. तथा 17. भावी 18. में 19. भावी शोध में 20. छात्र एवं छात्राओं

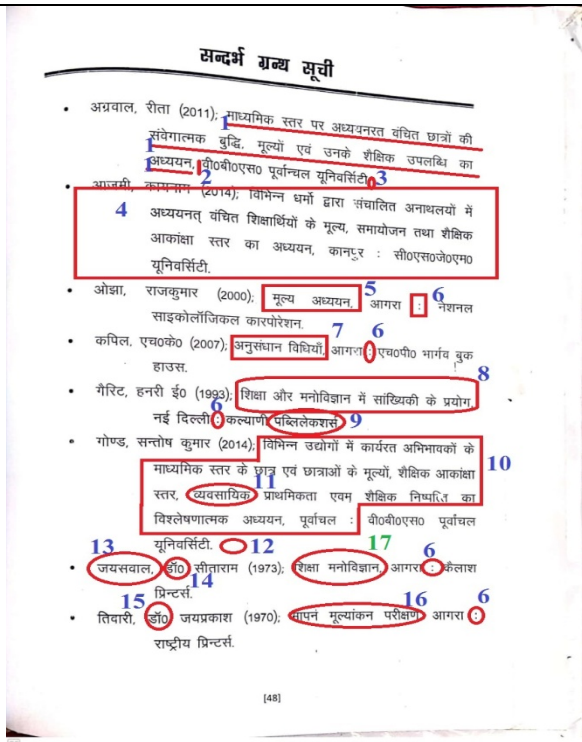
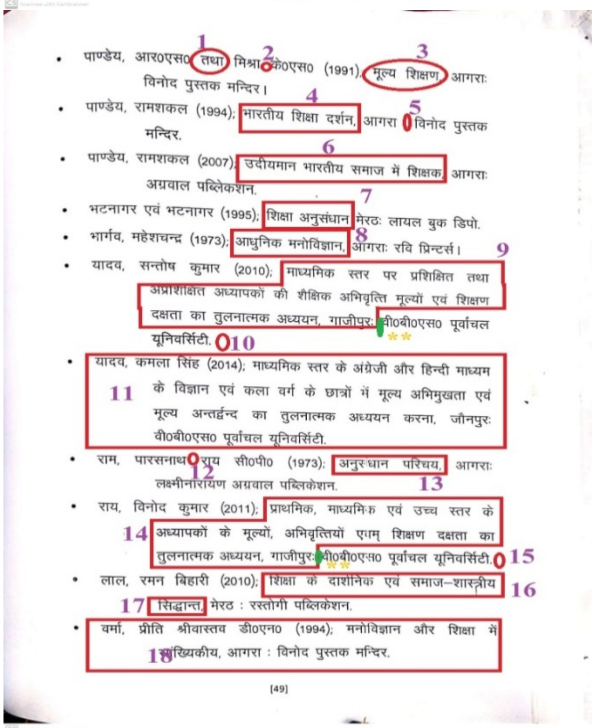
अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 5. वर्तमान अध्ययन में मुख्य रूप से मूल्य चर को ही सम्मिलित किया गया है उस अध्ययन में सम्मिलित किये चरों की संख्या बढ़ाकर अनेक शोध किये जा सकते हैं जिसमें शैक्षिक उपलब्धि, अभिक्षमता, अभिरुचि इत्यादि को शोध का आधार बनाया जा सकता है। [47]	1. , 2. भावी शोध 3. गये 4. कार्य किया 5. जा सकता है, 6. है।

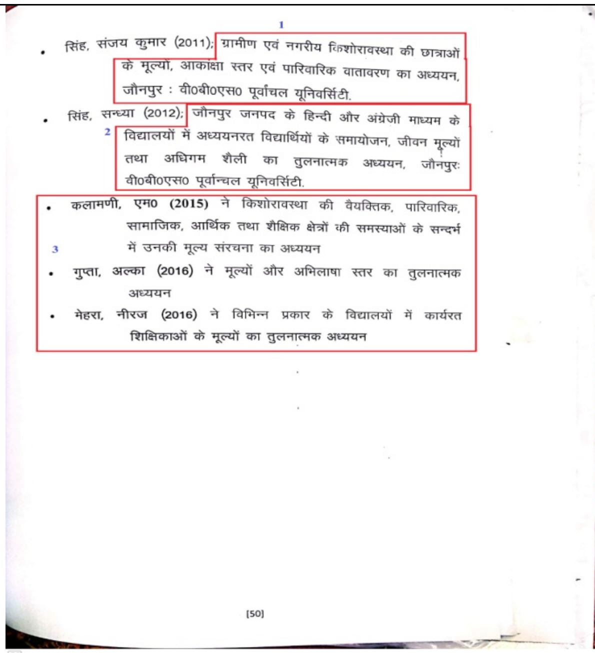
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
11	**Referencing**	**Max Score = 5**		
11.1	Are the in-test references available at the end?	Yes		1
11.2	Are the references presented accurately?	No		0
11.3	Are the references show uniformity?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		1

Comments:

इस लघु-शोध प्रबन्ध की सम्पूर्ण समीक्षा करने के पश्चात ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस लघु शोध में जो सन्दर्भ ग्रन्थ सूची लिखी गयी है, उसे केवल औपचारिकता को पूर्ण करने के लिए लिखा गया है; जिससे यह सिद्ध होता है कि सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध की विषय वस्तु से किसी प्रकार की एकरूपता नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में प्रयुक्त हुए गलत शब्दों के सही रूप-

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
• अग्रवाल, रीता (2011); माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत वंचित छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि, मूल्यों एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, वी0बी0एस0 पूर्वान्चल यूनिवर्सिटी
• आज़मी, कामनाम (2014); विभिन्न धर्मों द्वारा संचालित अनाथलयों में अध्ययनत् वंचित शिक्षार्थियों के मूल्य, समायोजन तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन, कानपुर : सी0एस0जे0एम0 यूनिवर्सिटी.
• ओझा, राजकुमार (2000); मूल्य अध्ययन, आगरा : नेशनल साइकोलॉजिकल कारपोरेशन.
• कपिल, एच0के0 (2007); अनुसंधान विधियाँ, आगरा : एच0पी0 भार्गव बुक हाउस.
• गैरिट, हनरी ई0 (1993); शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिलेकशर्स
• गोण्ड, सन्तोष कुमार (2014); विभिन्न उद्योगों में कार्यरत अभिभावकों के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, व्यवसायिक प्राथमिकता एवम् शैक्षिक निष्पत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पूर्वाचल : वी0बी0एस0 पूर्वांचल यूनिवर्सिटी.
• जयसवाल, डॉ0 सीताराम (1973); शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा : कैलाश प्रिन्टर्स.
• तिवारी, डॉ0 जयप्रकाश (1970); मापनं मूल्यांकन परीक्षण आगरा : राष्ट्रीय प्रिन्टर्स.
[48]</td><td>**नोट-** 1,5,7,8,10,16 तथा 17 शीर्षक हैं; जिन्हें इटैलिक, रेखांकित अथवा बोल्ड किया जाना चाहिए था।
2. पी-एच.डी., शोध प्रबन्ध,
3. , जौनपुर।
4. लघु शोध प्रबन्ध में इसका कोई उल्लेख नहीं है।
6- : के पहले स्पेस नहीं दिया जाना चाहिए था।
9- पब्लिशर्स
11. व्यावसायिक
12. , जौनपुर
13. जायसवाल
14. संदर्भ ग्रन्थ सूची में किसी भी नाम के पहले उपाधि नहीं लगायी जाती है।
15. संदर्भ ग्रन्थ सूची में किसी भी नाम के पहले उपाधि नहीं लगायी जाती है।
16. मापन, मूल्यांकन एवं परीक्षण</td></tr>
<tr><td>
• पाण्डेय, आर0एस0 तथा मिश्रा के0एस0 (1991). मूल्य शिक्षण आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।
• पाण्डेय, रामशकल (1994); भारतीय शिक्षा दर्शन, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर.
• पाण्डेय, रामशकल (2007); उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन.
• भटनागर एवं भटनागर (1995); शिक्षा अनुसंधान मेरठः लायल बुक डिपो.
• भार्गव, महेशचन्द्र (1973); आधुनिक मनोविज्ञान, आगराः रवि प्रिन्टर्स।
• यादव, सन्तोष कुमार (2010); माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति मूल्यों एवं शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन, गाजीपुर: वी0बी0एस0 पूर्वांचल यूनिवर्सिटी.
• यादव, कमला सिंह (2014); माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी और हिन्दी माध्यम के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों में मूल्य अभिमुखता एवं मूल्य अन्तर्द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना, जौनपुर: वी0बी0एस0 पूर्वांचल यूनिवर्सिटी.
• राम, पारसनाथ राय सी0पी0 (1973); अनुसंधान परिचय, आगरा: लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेशन.
• राय, विनोद कुमार (2011); प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के अध्यापकों के मूल्यों, अभिवृत्तियों एवम् शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन, गाजीपुर: वी0बी0एस0 पूर्वांचल यूनिवर्सिटी.
• लाल, रमन बिहारी (2010); शिक्षा के दाशनिक एवं समाज–शास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन.
• वर्मा, प्रीति श्रीवास्तव डी0एन0 (1994); मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर.
[49]</td><td>1. एवं
2. ,
10. , जौनपुर।
11. लघु शोध प्रबन्ध में इसका कोई उल्लेख नहीं है।
12. एवं
15. , जौनपुर।
18. पुस्तक का शीर्षक गलत है, इस नाम की कोई पुस्तक नहीं है।
** पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध
नोट- 3,4,6,7,8,9,13,14,16 तथा 17 को इटैलिक, रेखांकित अथवा बोल्ड किया जाना चाहिए था।</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 1 • सिंह, संजय कुमार (2011); ग्रामीण एवं नगरीय किशोरावस्था की छात्राओं के मूल्यों, आकांक्षा स्तर एवं पारिवारिक वातावरण का अध्ययन, जौनपुर : वी0बी0एस0 पूर्वांचल यूनिवर्सिटी. • सिंह, सन्ध्या (2012); जौनपुर जनपद के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के 2 विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन, जीवन मूल्यों तथा अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन, जौनपुरः वी0बी0एस0 पूर्वान्चल यूनिवर्सिटी. • कलामणी, एम0 (2015) ने किशोरावस्था की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों की समस्याओं के सन्दर्भ 3 में उनकी मूल्य संरचना का अध्ययन • गुप्ता, अल्का (2016) ने मूल्यों और अभिलाषा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन • मेहरा, नीरज (2016) ने विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन [50]	1. *ग्रामीण एवं नगरीय किशोरावस्था की छात्राओं के मूल्यों, आकांक्षा स्तर एवं पारिवारिक वातावरण का अध्ययन*, पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध, वी०बी०एस०, पूर्वांचल यूनिवर्सिटी, जौनपुर। 2. *जौनपुर जनपद के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन, जीवन मूल्यों तथा अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन*, पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध, वी०बी०एस०, पूर्वांचल यूनिवर्सिटी, जौनपुर। 3. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में किसी भी नाम के बाद 'ने' का प्रयोग नहीं किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है, कि शोधकर्त्री ने 'सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण' के अन्तर्गत लिखित सामग्री से कट & पेस्ट करके सूची में लगा दिया है, क्योंकि इन सन्दर्भों में विश्वविद्यालय के नाम तक का उल्लेख नहीं है।

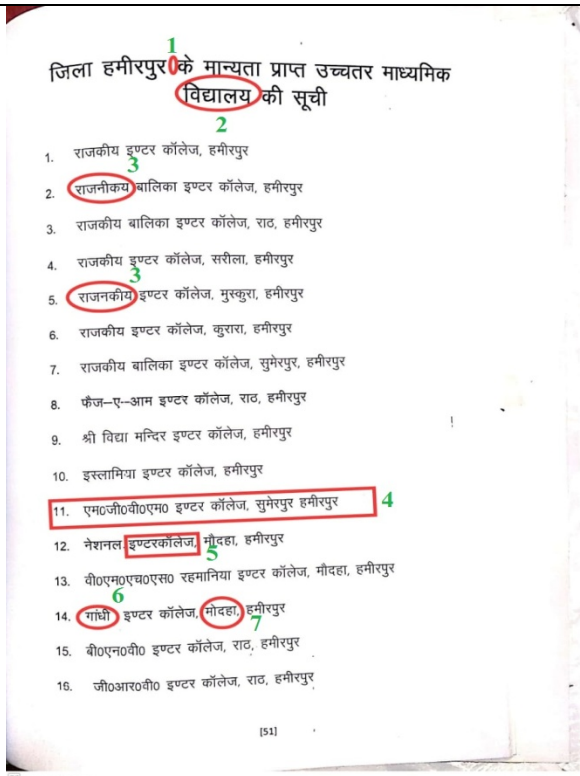
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
12	**Annexure**	**Max Score = 3**		
12.1	Are the annexure comprehensive?	No		0
12.2	Are the annexure presented systematically?	No		0
12.3	Do the annexure give original data?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		0

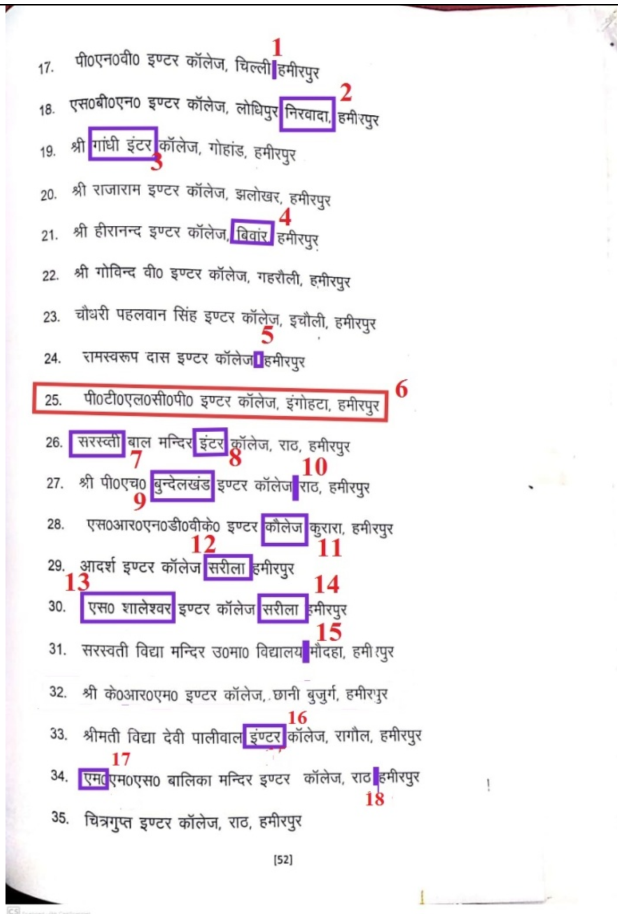
Comments:

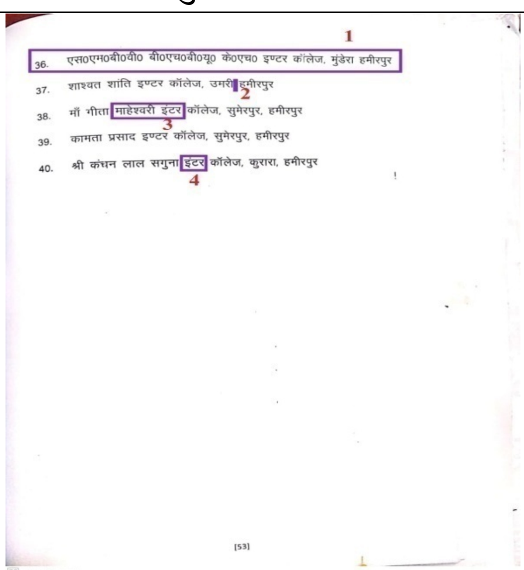
प्रस्तुत लघु शोध का परिशिष्ट बहुत ही सीमित है। शोधकर्त्री ने परिशिष्ट में विद्यालयों की सूची, प्राप्तांक तालिका और डॉ० (श्रीमती) जी०पी० शैरी एवं डॉ० आर०पी० वर्मा द्वारा निर्मित 'व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली' को ही लगाया है।

शोधकर्त्री द्वारा परिशिष्ट को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते हुए हमीरपुर जनपद का मानचित्र, प्रदत्तों के संकलन से सम्बन्धित चित्रावली, प्रदत्तों के संकलन की शीट एवं अपना स्वयं का जीवनवृत्त लगाना चाहिए था; लेकिन शोधकर्त्री ने इनमें से किसी को भी परिशिष्ट में नहीं लगाया है।

शोधकर्त्री द्वारा परिशिष्ट में प्रयुक्त गलतियाँ-

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 जिला हमीरपुर0के मान्यता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की सूची 1. राजकीय इण्टर कॉलेज, हमीरपुर 2. राजनीकय बालिका इण्टर कॉलेज, हमीरपुर 3. राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, राठ, हमीरपुर 4. राजकीय इण्टर कॉलेज, सरीला, हमीरपुर 5. राजनकीय इण्टर कॉलेज, मुस्कुरा, हमीरपुर 6. राजकीय इण्टर कॉलेज, कुरारा, हमीरपुर 7. राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर, हमीरपुर 8. फैज–ए--आम इण्टर कॉलेज, राठ, हमीरपुर 9. श्री विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज, हमीरपुर 10. इस्लामिया इण्टर कॉलेज, हमीरपुर 11. एम0जी0वी0एम0 इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर हमीरपुर 12. नेशनल इण्टरकॉलेज, मौदहा, हमीरपुर 13. वी0एम0एच0एस0 रहमानिया इण्टर कॉलेज, मौदहा, हमीरपुर 14. गांधी इण्टर कॉलेज, मोदहा, हमीरपुर 15. बी0एन0वी0 इण्टर कॉलेज, राठ, हमीरपुर 16. जी0आर0वी0 इण्टर कॉलेज, राठ, हमीरपुर [51]	1. जनपद 2. विद्यालयों 3. राजकीय 4. एम० जी० एम० इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर, हमीरपुर 5. इण्टर कॉलेज 6. गाँधी 7. मौदहा

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 17. पी0एन0वी0 इण्टर कॉलेज, चिल्ली हमीरपुर 18. एस0बी0एन0 इण्टर कॉलेज, लोधिपुर निरवादा, हमीरपुर 19. श्री गांधी इंटर कॉलेज, गोहांड, हमीरपुर 20. श्री राजाराम इण्टर कॉलेज, झलोखर, हमीरपुर 21. श्री हीरानन्द इण्टर कॉलेज, बिवांर हमीरपुर 22. श्री गोविन्द वी0 इण्टर कॉलेज, गहरौली, हमीरपुर 23. चौधरी पहलवान सिंह इण्टर कॉलेज, इचौली, हमीरपुर 24. रामस्वरूप दास इण्टर कॉलेज हमीरपुर 25. पी0टी0एल0सी0पी0 इण्टर कॉलेज, इंगोहटा, हमीरपुर 26. सरस्व्ती बाल मन्दिर इंटर कॉलेज, राठ, हमीरपुर 27. श्री पी0एच0 बुन्देलखंड इण्टर कॉलेज राठ, हमीरपुर 28. एस0आर0एन0डी0वीके0 इण्टर कौलेज कुरारा, हमीरपुर 29. आदर्श इण्टर कॉलेज सरीला हमीरपुर 30. एस0 शालेश्वर इण्टर कॉलेज सरीला हमीरपुर 31. सरस्वती विद्या मन्दिर उ0मा0 विद्यालय मौदहा, हमीरपुर 32. श्री के0आर0एम0 इण्टर कॉलेज, छानी बुजुर्ग, हमीरपुर 33. श्रीमती विद्या देवी पालीवाल इंण्टर कॉलेज, रागौल, हमीरपुर 34. एम0एम0एस0 बालिका मन्दिर इण्टर कॉलेज, राठ हमीरपुर 35. चित्रगुप्त इण्टर कॉलेज, राठ, हमीरपुर [52]	1. , 2. निवादा 3. गाँधी इण्टर 4. बेवर 5. धगवान 6. पीटी०एल०सी०पी० इण्टर कॉलेज, इंगोहटा, हमीरपुर 7. सरस्वती 8. इण्टर 9. बुन्देलखण्ड 10. , 11. कॉलेज, 12. , सरिला, 13. श्री शैलेश्वर 14. , सरिला, 15. , 16. U.P.S. इण्टर 17. एस० 18. ,

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 36. एस0एम0बी0वी0 बी0एच0बी0यू0 के0एच0 इण्टर कॉलेज, मुंडेरा हमीरपुर 37. शाश्वत शांति इण्टर कॉलेज, उमरी हमीरपुर 38. माँ गीता माहेश्वरी इंटर कॉलेज, सुमेरपुर, हमीरपुर 39. कामता प्रसाद इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर, हमीरपुर 40. श्री कंचन लाल सगुना इंटर कॉलेज, कुरारा, हमीरपुर [53]	1. एस०एम०बी० इण्टर कॉलेज, मुंडेरा, हमीरपुर 2. , 3. महेश्वरी इण्टर 4. इण्टर

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
13	**General Indicators**	**Max Score = 4**		
13.1	Is the research report without major typing mistakes?	No		0
13.2	Is the research report presented well (margin, typesetting, tables, etc.)?	No		0
13.3	Is the binding of the research report proper?	Yes		1
13.4	Is the description accurate and of a reasonable length?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		1

Comments:

सम्पूर्ण लघु-शोध का समीक्षात्मक अवलोकन करने के पश्चात यह पाया गया कि इस लघु-शोध में प्रथम पृष्ठ से लेकर अन्तिम पृष्ठ तक गलतियों की भरमार है। इस लघु-शोध को गलतियों का पुलिन्दा कहा जा सकता है; क्योंकि कोई भी पृष्ठ गलतियों से अछूता नहीं है। इस लघु-शोध की अन्य गलतियों की बात की जाय, तो यह कहा जा सकता है कि इसमें टंकण, स्पेस तथा मात्राओं से सम्बन्धित बहुत सारी गलतियाँ विद्यमान हैं और सबसे बड़ी गलती यह है कि शोधकर्त्री ने जो सी०डी०लगायी है; वह पूरी तरीके से खाली है, जो कि एक अनुचित व धोखाधड़ी पूर्ण कार्य है।

Research Report Evaluation Consolidated Table				
	Criteria	Score Rule (points)	Not Applicable (NA)	Obtained Score
1.	**Introduction**	**Max score = 6**		**5**
2.	**Review of Literature**	**Max score = 9**		**1**
3.	**Objectives and Hypotheses**	**Max score = 12**		**3**
4.	**Research Design**	**Max score = 3**		**0**
5.	**Variables**	**Max score = 3**		**1**
6.	**Research Instruments**	**Max score = 5**		**3**
7.	**Sample**	**Max score = 3**		**0**
8.	**Data Collection and Data Analysis**	**Max score = 4**		**2**
9.	**Findings and Implications**	**Max score = 5**		**0**
10.	**Summary and Conclusion**	**Max score = 3**		**2**
11.	**Referencing**	**Max score = 5**		**1**
12.	**Annexure**	**Max score = 3**		**0**
13.	**General Indicators**	**Max score = 4**		**1**
	Grand Total =	**65**		**19**

(Table के प्रत्येक मापदण्ड (Criteria) का विस्तृत विवेचन ऊपर के पृष्ठों पर दिया गया है।)

इस लघु शोध का अन्तिम आंकिक समीक्षात्मक मूल्यांकन करने पर 65 अंक में से केवल 19 अंक अर्थात केवल 29.23% अंक प्राप्त हुए हैं, जो कि इस स्तर पर बहुत ही असन्तोषजनक है।

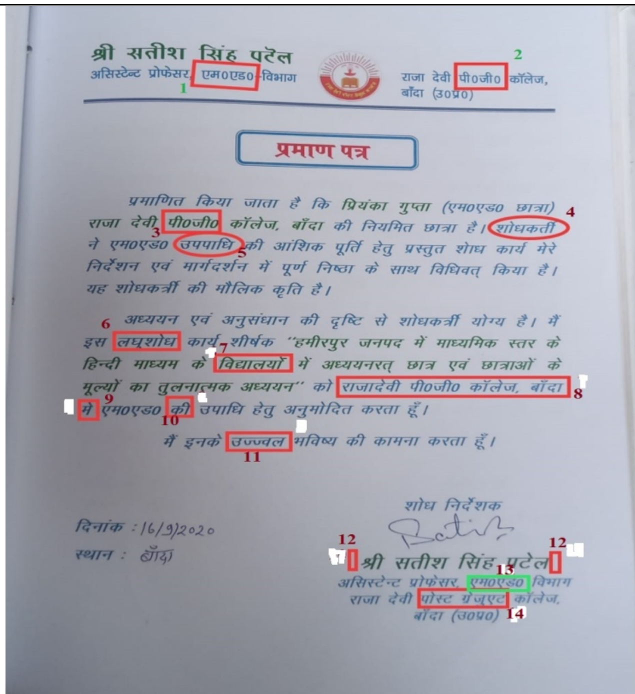
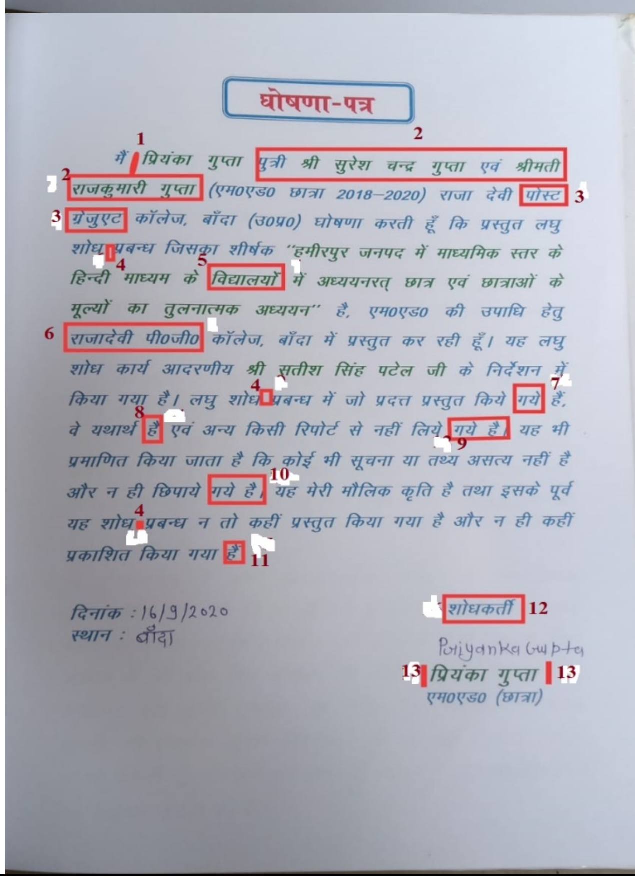
शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त कुछ अन्य गलतियाँ-

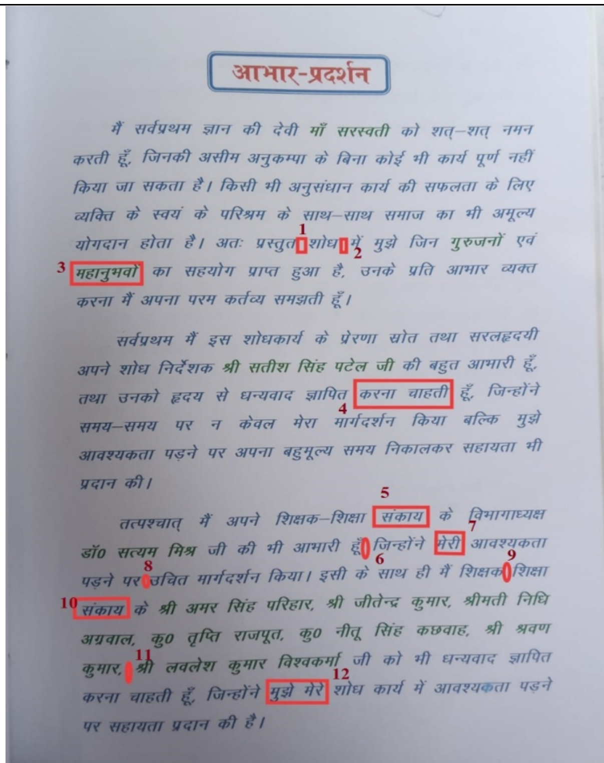
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
की
'मास्टर ऑफ एजुकेशन' उपाधि की आंशिक पूर्ति
हेतु प्रस्तुत
लघु शोध प्रबन्ध
2018-2020
शोध निर्देशक
श्री सतीश सिंह पटेल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर-एम०एड० विभाग
शोधकर्ती
प्रियंका गुप्ता
एम०एड० (छात्रा)
शिक्षक-शिक्षा संकाय
राजा देवी पी०जी० कॉलेज, बाँदा (उ०प्र०)
</td><td>
1. -
2. शोधकर्त्री
3. शिक्षक-शिक्षा
4. विभाग
5. डिग्री

</td></tr>
<tr><td>

समर्पण
सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरुपिणि।
विद्यारम्भं करिश्यामि सिद्धिर्भवतु में सदा ।।
"प्रथम शिक्षक ममतामयी माता जी श्रीमती राजकुमारी गुप्ता एवं पूज्य पिता श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता तथा जीवन को ज्ञान रूपी बल प्रदान करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं को कृति सादर समर्पित।
- प्रियंका गुप्ता....
</td><td>
1. ,
2. करिष्यामि
3. मे
4. इनवर्टेड कॉमा का अनुचित प्रयोग।
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

श्री सतीश सिंह पटेल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, एम0एड0-विभाग
राजा देवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा (उ0प्र0)
प्रमाण पत्र
प्रमाणित किया जाता है कि प्रियंका गुप्ता (एम0एड0 छात्रा) राजा देवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा की नियमित छात्रा है। शोधकर्ती ने एम0एड0 उपपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध कार्य मेरे निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पूर्ण निष्ठा के साथ विधिवत् किया है। यह शोधकर्त्री की मौलिक कृति है।
अध्ययन एवं अनुसंधान की दृष्टि से शोधकर्त्री योग्य है। मैं इस लघुशोध कार्य शीर्षक "हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" को राजादेवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा मे एम0एड0 की उपाधि हेतु अनुमोदित करता हूँ।
मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।
शोध निर्देशक
दिनांक : 16/9/2020
स्थान : बाँदा
श्री सतीश सिंह पटेल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, एम0एड0 विभाग
राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
बाँदा (उ0प्र0)

घोषणा-पत्र
मैं प्रियंका गुप्ता पुत्री श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता एवं श्रीमती राजकुमारी गुप्ता (एम0एड0 छात्रा 2018–2020) राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा (उ0प्र0) घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध जिसका शीर्षक "हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" है, एम0एड0 की उपाधि हेतु राजादेवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा में प्रस्तुत कर रही हूँ। यह लघु शोध कार्य आदरणीय श्री सतीश सिंह पटेल जी के निर्देशन में किया गया है। लघु शोध प्रबन्ध में जो प्रदत्त प्रस्तुत किये गये हैं, वे यथार्थ है एवं अन्य किसी रिपोर्ट से नहीं लिये गये है, यह भी प्रमाणित किया जाता है कि कोई भी सूचना या तथ्य असत्य नहीं है और न ही छिपाये गये है, यह मेरी मौलिक कृति है तथा इसके पूर्व यह शोध प्रबन्ध न तो कहीं प्रस्तुत किया गया है और न ही कहीं प्रकाशित किया गया हैं
दिनांक : 16/9/2020
स्थान : बाँदा
शोधकर्ती
Priyanka Gupta
प्रियंका गुप्ता
एम0एड0 (छात्रा)
</td><td>
1. शिक्षक-शिक्षा
2. डिग्री
3. डिग्री
4. शोधकर्त्री
5. उपाधि
6. लघु-शोध
7. विद्यालयों
8. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
9. का
10. निरर्थक शब्द
11. उज्जवल
12. ( )
13. शिक्षक-शिक्षा
14. डिग्री
1. ,
2. शोधकर्त्री द्वारा अपने माता-पिता दोनों के नाम का उल्लेख किया है, जबकि किसी एक नाम का उल्लेख पर्याप्त था। मांगलिक प्रसंग में दोनों के नाम लिखने की परम्परा है, शैक्षणिक कार्य में नहीं।
3. डिग्री
4. -
5. विद्यालयों
6. राजा देवी डिग्री
7. गए
8. हैं
9. गए हैं।
10. गए हैं।
11. है।
12. शोधकर्त्री
13. ( )
</td></tr>
</table>

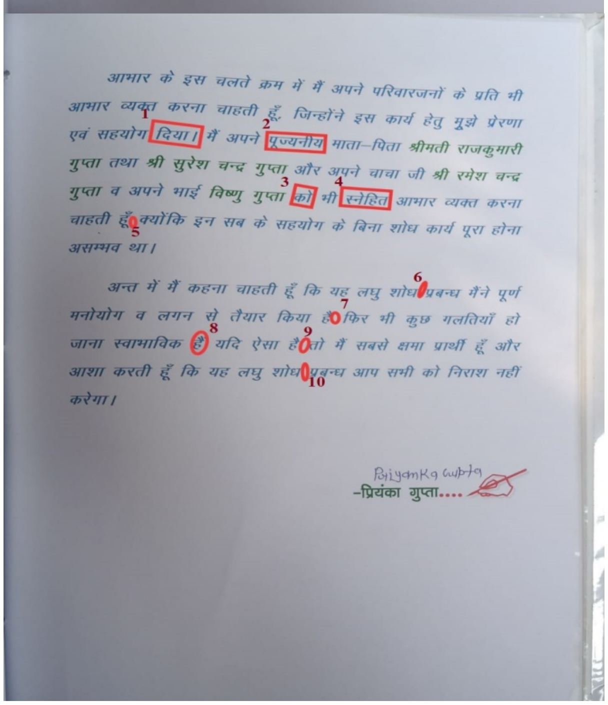
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


आभार-प्रदर्शन

मैं सर्वप्रथम ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को शत्–शत् नमन करती हूँ, जिनकी असीम अनुकम्पा के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं किया जा सकता है। किसी भी अनुसंधान कार्य की सफलता के लिए व्यक्ति के स्वयं के परिश्रम के साथ–साथ समाज का भी अमूल्य योगदान होता है। अतः प्रस्तुत शोध में मुझे जिन गुरुजनों एवं महानुभवों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

सर्वप्रथम मैं इस शोधकार्य के प्रेरणा स्रोत तथा सरलहृदयी अपने शोध निर्देशक श्री सतीश सिंह पटेल जी की बहुत आभारी हूँ, तथा उनको हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करना चाहती हूँ, जिन्होंने समय–समय पर न केवल मेरा मार्गदर्शन किया बल्कि मुझे आवश्यकता पड़ने पर अपना बहुमूल्य समय निकालकर सहायता भी प्रदान की।

तत्पश्चात् मैं अपने शिक्षक–शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ0 सत्यम मिश्र जी की भी आभारी हूँ जिन्होंने मेरी आवश्यकता पड़ने पर उचित मार्गदर्शन किया। इसी के साथ ही मैं शिक्षक शिक्षा संकाय के श्री अमर सिंह परिहार, श्री जीतेन्द्र कुमार, श्रीमती निधि अग्रवाल, कु0 तृप्ति राजपूत, कु0 नीतू सिंह कछवाह, श्री श्रवण कुमार, श्री लवलेश कुमार विश्वकर्मा जी को भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे मेरे शोध कार्य में आवश्यकता पड़ने पर सहायता प्रदान की है।



आभार के इस चलते क्रम में मैं अपने परिवारजनों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, जिन्होंने इस कार्य हेतु मुझे प्रेरणा एवं सहयोग दिया। मैं अपने पूज्यनीय माता–पिता श्रीमती राजकुमारी गुप्ता तथा श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता और अपने चाचा जी श्री रमेश चन्द्र गुप्ता व अपने भाई विष्णु गुप्ता को भी स्नेहित आभार व्यक्त करना चाहती हूँ क्योंकि इन सब के सहयोग के बिना शोध कार्य पूरा होना असम्भव था।

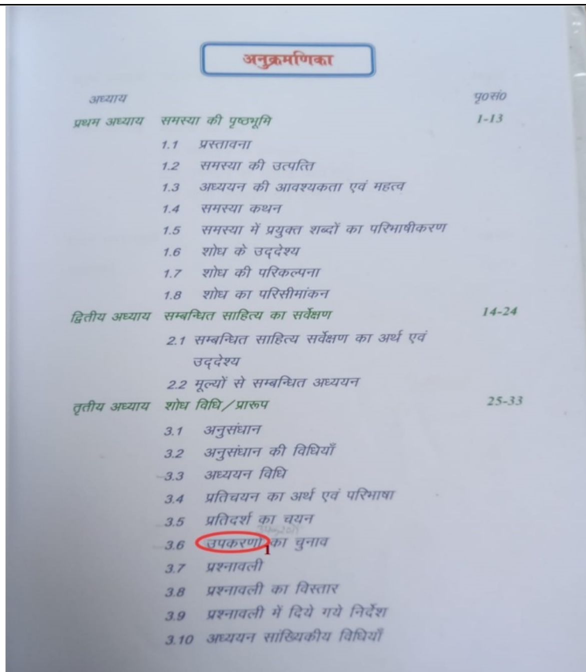
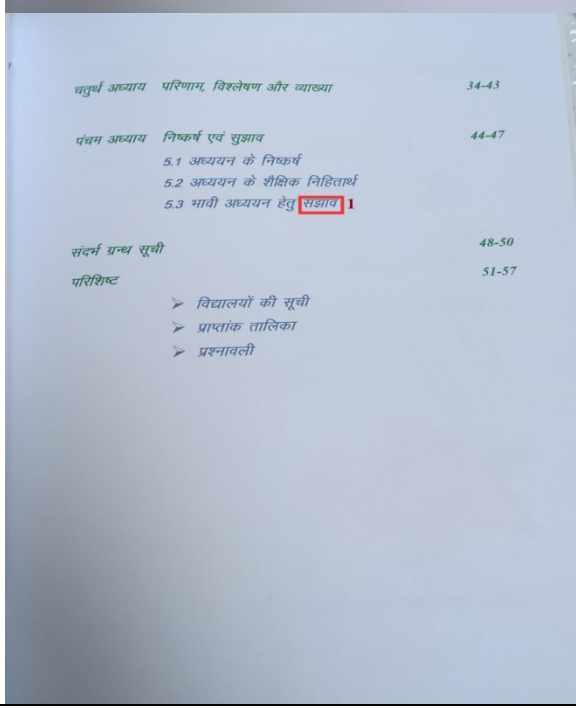
अन्त में मैं कहना चाहती हूँ कि यह लघु शोध प्रबन्ध मैंने पूर्ण मनोयोग व लगन से तैयार किया है फिर भी कुछ गलतियाँ हो जाना स्वाभाविक हैं यदि ऐसा है तो मैं सबसे क्षमा प्रार्थी हूँ और आशा करती हूँ कि यह लघु शोध प्रबन्ध आप सभी को निराश नहीं करेगा।

Priyanka Gupta
–प्रियंका गुप्ता....
</td><td>

1. लघु
2. कार्य
3. महानुभावों
4. करती
5. विभाग
6. ,
7. निरर्थक शब्द
8. मेरा
9. -
10. विभाग
11. और
12. ‘मुझे’ या ‘मेरे’ में से किसी एक का प्रयोग किया जाना चाहिए था। ‘मुझे’ का प्रयोग अधिक उचित होगा।

1. प्रदान किया।
2. पूज्य
3. का
4. स्नेहिल
5. ,
6. –
7. ,
8. है
9. ,
10. -

</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 अनुक्रमणिका अध्याय पृ०सं० प्रथम अध्याय समस्या की पृष्ठभूमि 1-13 1.1 प्रस्तावना 1.2 समस्या की उत्पत्ति 1.3 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व 1.4 समस्या कथन 1.5 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण 1.6 शोध के उद्देश्य 1.7 शोध की परिकल्पना 1.8 शोध का परिसीमांकन द्वितीय अध्याय सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण 14-24 2.1 सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का अर्थ एवं उद्देश्य 2.2 मूल्यों से सम्बन्धित अध्ययन तृतीय अध्याय शोध विधि/प्रारूप 25-33 3.1 अनुसंधान 3.2 अनुसंधान की विधियाँ 3.3 अध्ययन विधि 3.4 प्रतिचयन का अर्थ एवं परिभाषा 3.5 प्रतिदर्श का चयन 3.6 उपकरणो 1 का चुनाव 3.7 प्रश्नावली 3.8 प्रश्नावली का विस्तार 3.9 प्रश्नावली में दिये गये निर्देश 3.10 अध्ययन सांख्यिकीय विधियाँ	1. उपकरणों
 चतुर्थ अध्याय परिणाम, विश्लेषण और व्याख्या 34-43 पंचम अध्याय निष्कर्ष एवं सुझाव 44-47 5.1 अध्ययन के निष्कर्ष 5.2 अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ 5.3 भावी अध्ययन हेतु सझाव 1 संदर्भ ग्रन्थ सूची 48-50 परिशिष्ट 51-57 ➢ विद्यालयों की सूची ➢ प्राप्तांक तालिका ➢ प्रश्नावली	1. सुझाव

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि गलती करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। एक सफल मनुष्य वही है, जो समय-समय पर अपनी गलतियों से सीख लेता रहे और उन्हें सुधारता रहे। गलतियाँ सुधारने के लिए सबसे पहले उन गलतियों के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है, जो हमसे हो रही हैं। इस लघु-शोध कार्य में शोधकर्त्री के द्वारा बहुत-सी गलतियाँ हुई हैं, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। लघु-शोध कार्य की समीक्षा करते समय इतनी अधिक गलतियाँ पायी गयीं, जो नहीं होनी चाहिए थीं। शोधकर्त्री और पर्यवेक्षक ने लघु-शोध कार्य करते समय ध्यान नहीं दिया कि उनसे 'क्या-क्या गलतियाँ हो रहीं हैं?' किसी भी कार्य को करने के पश्चात पुनः अवलोकन कर लेना चाहिए, क्योंकि यदि कोई त्रुटि शब्द तथा वाक्य में रह गयी हो, तो उसे सुधार लेना चाहिए। शोधकर्त्री ने हड़बड़ी में अपने शोध कार्य का केन्द्रित मन से अवलोकन नहीं किया, इसलिए इसमें इतनी अधिक त्रुटियाँ उजागर हुई हैं। मेरा विचार है कि छोटी-छोटी त्रुटियाँ बहुत बड़े अवगुण को जन्म देती हैं। उदाहरण के लिए- "यदि एक सुन्दर नाव नदी में जा रही हो और उसमें एक छोटा-सा सुराग हो जाय, तो उस नाव में पानी भर जायेगा, तब एक ऐसी स्थिति आ जायेगी कि नाव डूब जायेगी।"

शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों का जो चतुर्मुखी विकास होता है, वह बाधित हो जाता है, इसलिए पूरे मनोयोग के साथ शोध जैसे महत्वपूर्ण कार्य को करना चाहिए, जिससे कोई गलती न रह जाय, क्योंकि वह गलती दूसरों के विकास के लिए निश्चित रूप से हानिकारक सिद्ध होगी।

एम०एड० जैसी उत्कृष्ट उपाधि के बाद भी यदि कोई गलती रह जाती है, तो वह अक्षम्य होती है। इसके बाद भी यदि त्रुटियाँ रह जाती हैं, तो इसका अर्थ यही होता है कि शोध कार्य में उपेक्षा की गयी है, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। हम खुद अपनी सारी गलतियों का पता नहीं लगा सकते, इसलिए जब कोई दूसरा हमारी गलतियाँ बताये, तो उसे ध्यानपूर्वक सुनना-समझना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम अपनी ज़िन्दगी में आगे बढ़ने के बाद भी लोगों की नजरों में गिर जायेंगे। कोई हमारे जीवन का पालनहार नहीं होता। हमें स्वयं ही अपने जीवन का किनारा ढूँढना पड़ता है।

हमारे माता-पिता और गुरुजन हमें इस कार्य को पूरा करने में सहायता करते हैं, इसके अलावा जीवन में कई मित्र और कई ऐसे लोग मिलते हैं, जो हमें सही कार्य करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं और हमारी गलतियों को बताकर उसे दूर करने में सहायता करते हैं, लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि हम उनकी बातों पर ध्यान देकर अपनी गलतियों से सीख लेते हैं या नहीं। यह हमारी सोच पर निर्भर करता है।

एम०एड० जैसी उच्च कक्षा में अध्यापन हेतु महाविद्यालयों में शिक्षक हमेशा UGC (University Grants Commission) के मानक के अनुसार ही नियुक्त किये जाने चाहिए। किसी भी स्तर से शिक्षकों की गुणवत्ता को लेकर

कोई समझौता नहीं होना चाहिए। वेतन विसंगतियाँ अध्यापकों के साथ नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यदि अध्यापकों को उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता तो उनका शैक्षणिक कार्य प्रभावित होता है। अल्प वेतन भोगी अध्यापकों के हाथ में शैक्षणिक कमान नहीं दी जानी चाहिए। ऐसा होने से शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता है, जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। विषय-विशेषज्ञों को ही सम्बन्धित प्रश्न-पत्र पढ़ाने को दिया जाना चाहिए। विद्यालय भवन देखकर ही महाविद्यालयों को मान्यता नहीं दी जानी चाहिए। वर्तमान समय में बरसाती मेंढकों की तरह महाविद्यालयों की बाढ़ आ गयी है, इसलिए एम०एड० संस्थान अधिक नहीं होने चाहिए, जितने हों गुणवत्तापूर्ण मानक के अनुसार ही होने चाहिए। इस लघु शोध कार्य का कोई अर्थ नहीं निकल रहा है। यह एक औपचारिकता मात्र है।

सन्दर्भ

गुप्ता, प्रियंका (2020)। *हमीरपुर जनपद में माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।



एक अनुसंधान प्रतिवेदन क्या है? एक अनुसंधान प्रतिवेदन को लिखते समय किन मुख्य बातों को ध्यान में रखना होता है।
एक अनुसंधान प्रतिवेदन क्या है? एक अनुसंधान प्रतिवेदन को लिखते समय किन मुख्य
www.guffo.in

<https://www.guffo.in/%E0%A4%8F%E0%A4%95-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%A8-%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A6%E0%A4%A8-%E0%A4%95%E0%A5%8D/>



Research Report Writing
RESEARCH REPORT WRITING Meghana Sudhir
www.slideshare.net

<https://www.slideshare.net/meghana353/research-report-writing>



Research Report: Definition, Types + [Writing Guide]
Ultimate guide to research report. Features, characteristics, types, examples and methodology.
www.formpl.us

<https://www.google.com/amp/s/www.formpl.us/blog/amp/research-report>



Research Reports: Definition and How to Write Them | QuestionPro

Research reports are recorded data prepared by researchers

www.questionpro.com

<https://www.google.com/amp/s/www.questionpro.com/blog/research-reports/amp/>

Research Report: Introduction, Definition and Report Format

ADVERTISEMENTS: "Research report is a research document that contains basic aspects of the research project". Introduction: Mostly, research work is presented in a written form.

www.yourarticlelibrary.com

<https://www.yourarticlelibrary.com/marketing/research-report-introduction-definition-and-report-format/48713>



Research report

precautions for writing research reports

www.slideshare.net

<https://www.slideshare.net/mobile/pretiancilla/research-report-63386559>



A presentation on research report writing.

This power point presentation is related to the topic of research report writing. It involves meaning of report writing, its functions

www.slideshare.net

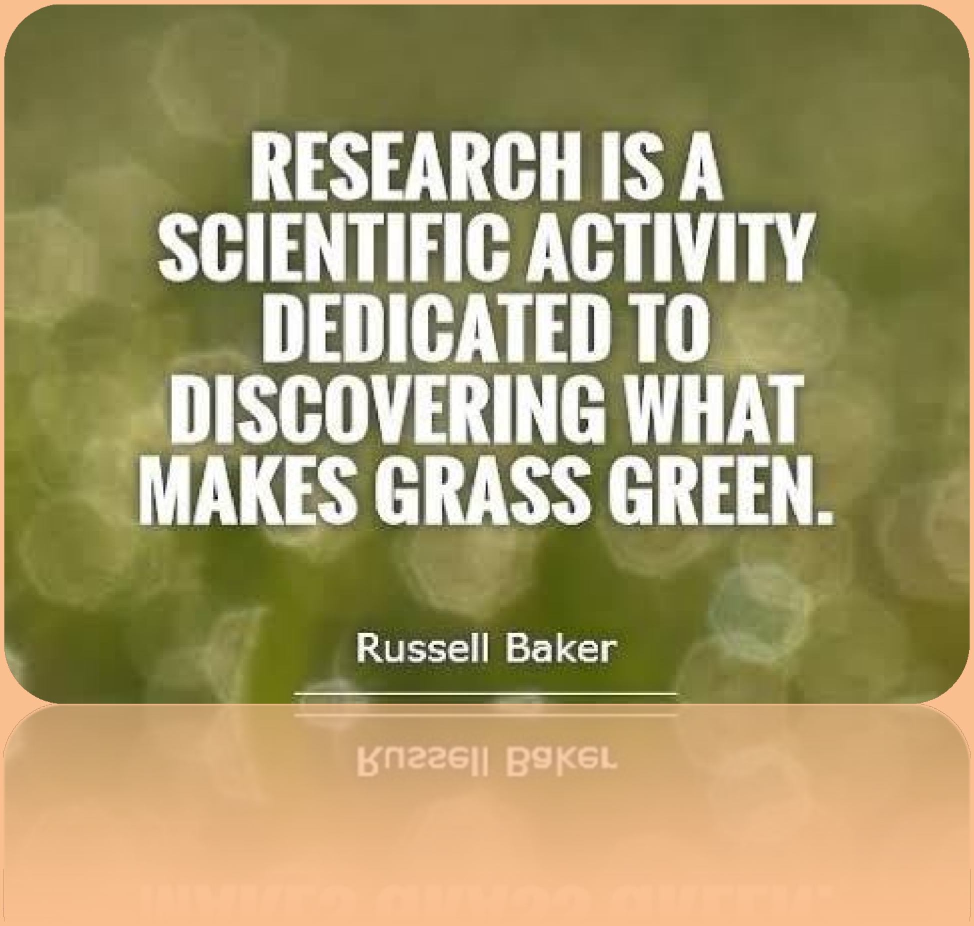
<https://www.slideshare.net/mobile/PRIYANKAVP4/a-presentation-on-research-report-writing>

शोध प्रविधि Research Methodology

A blog about Language Literature Culture Social Issue and Knowledge

deoshankarnavin.blogspot.com

<https://deoshankarnavin.blogspot.com/2017/01/blog-post.html>



ISBN 978-93-5578-799-6
9 789355 787996 >